हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची • सोमवार • 19.05.2025 • वर्ष : 15 • अंक : 294 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

पाकिस्तान में मारा गया लश्कर का आतंकी अबू सैफुल्लाह

नई दिल्ली : ऑपरेशन सिंदूर के सहमे पाकिस्तान को एक और बड़ा झटका लगा है। पाकिस्तान के सिंध में लश्कर-ए-तैयबा और जमात का आतंकवादी रजुल्लाह निजामनी उर्फ अबू सैफुल्लाह मारा गया। सैफुल्लाह को पाकिस्तान के सिंध में मतली फलकारा चौक के पास अज्ञात हमलावरों ने गोली मार दी। सूत्रों के हवाले से इस बात की जानकारी सामने आई है। मिली जानकारी के अनुसार रविवार को रजुल्लाह निजामनी उर्फ अबू सैफुल्लाह को मतली फलकारा चौक के पास गोली मार दी गई। बताते चले कि सैफुल्लाह नेपाल में लश्कर के मॉड्यूल पर काम कर रहा था और भारत में आतंकियों की घुसपैठ और आर्थिक मदद जुटाने जैसे गंभीर अपराधों को अंजाम दे रहा था। सैफुल्लाह लश्कर के ऑपरेशनल कमांडर आजम चीमा उर्फ बाबाजी का सहयोगी था। सैफुल्लाह 2006 में नागपुर के आरएसएस मुख्यालय पर हुए हमले में शामिल था। इसके अलावा रामपुर स्थित CRPF कैंप पर हुए आतंकी हमले और IISC बेंगलुरु पर हमले की साजिश में भी इसका हाथ था। सैफुल्लाह खालिद लश्कर-ए-तैयबा का ऑपरेटिव था। लश्कर-ए-तैयबा ने भारत में हमलों की तैयारी करने के लिए टास्क दिया था। जिसके बाद ये नेपाल में कई सालों तक बेस बनाकर वहां से लगातार भारत में आतंकवादी हमले करवा रहा था। लेकिन बाद में ये नेपाल से भागकर पाकिस्तान में छिपा हुआ था, इंडिया का ये मोस्ट वांटेड आतंकी था।

दिल्ली में वायु गुणवत्ता में सुधार, ग्रेप स्टेज-1 की हटी पाबंदियां

नई दिल्ली : दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार को देखते हुए ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के तहत लागू स्टेज-1 को तत्काल प्रभाव से हटा दिया गया है। यह निर्णय वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) की उप-समिति ने सोमवार को हुई समीक्षा बैठक में लिया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा जारी बुलेटिन के अनुसार, दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) सोमवार को 179 रिकॉर्ड किया गया, जो मध्यम श्रेणी में आता है। यह सुधार तेज सतही हवाओं, गरज के साथ बारिश और धूल के कणों में गिरावट के चलते हुआ है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) और भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) के अनुसार आने वाले दिनों में भी वायु गुणवत्ता इसी श्रेणी में बनी रहेगी।

एनसीसी ने माउंट एवरेस्ट पर किया सफल आरोहण

नई दिल्ली : राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। उनकी अभियान टीम ने 18 मई को माउंट एवरेस्ट (8,848 मीटर) पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की। इस टीम में 10 एनसीसी कैडेट्स (पांच लड़के और पांच लड़कियां) शामिल थे। इसके साथ चार अधिकारी, दो जूनियर कमीशन अधिकारी, एक महिला कैडेट प्रशिक्षक और 10 गैर-कमीशन अधिकारी भी थे। चुने गए कैडेट्स नौसिखिए थे, जिन्हें देशभर से चुना गया था। इनका चयन और प्रशिक्षण प्रक्रिया बहुत कठोर थी। अपनी तैयारी के हिस्से के रूप में, उन्होंने माउंट एबी गामिन पर एक पूर्व-एवरेस्ट अभियान किया।

हैदराबाद के चारमीनार के पास लगी भीषण आग, 17 लोगों की मौत

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री ने जताया शोक

एजेंसी

हैदराबाद : पुराने शहर चारमीनार के पास गुलजार हाउस नामक एक बिल्डिंग में भीषण आग लगने 17 लोगों की मौत हुई है। दमकल की 11 गाड़ियों ने बड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। इस भीषण अग्निकांड में कई झुलसे लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अधिकारियों को संदेह है कि हादसा शॉर्ट सर्किट की वजह से हुआ है। इस अग्निकांड में 17 लोगों की मौत पर प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री ने शोक जताया है। केन्द्र सरकार ने मृतकों के परिजनों को प्रधानमंत्री राहत कोष से दो-दो लाख रुपये और राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री राहत कोष से पांच-पांच लाख रुपये देने का ऐलान किया है। इसके साथ हीदोनों सरकारों की ओर से घायलों को पचास-पचास हजार की मदद का भी ऐलान किया गया है। पुलिस के अनुसार चारमीनार इलाके में गुलजार हाउस नामक एक बिल्डिग में रविवार को करीब सुबह 6 बजे आग लगने सूचना मिली। आग लगने की सूचना मिलते ही पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम ने राहत व बचाव कार्य शुरू किया। आग बिल्डिंग की पहली मंजिल

पर लगी, जिसने बाद में विकराल रूप धारण कर लिया। घटना की जानकारी मिलने पर केन्द्रीयमंत्री किशन रेड्डी, राज्यमंत्री प्रभाकर और वरिष्ठ पुलिस अधिकारी घटनास्थल पहुंच गए। फायर ब्रिगेड की 11 गाड़ियों ने आग पर काबू पाया। फायर ब्रिगेड और पुलिस ने काफी मशक्कत के बाद आग में फंसे लोगों को बाहर निकाला और अस्पताल पहुंचाया। इमारत के कई लोग दम घुटने से बेहोश हो गए। पुलिस के अनुसार आठ लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जबकि नौ लोगों ने इलाज के दौरान अस्पताल में दम तोड़ा। इसहादसे में मारे गए 17 लोगों में से सात बच्चे और चार महिलाएं शामिल हैं। पुलिस के अनुसार इस अग्निकांड के मृतकों की पहचान राजेंद्र कुमार (67), अभिषेक मोदी (30), सुमित्रा (65), मुन्नीबाई (72), आरुषि जैन (17), शीतल जैन (37), इराज (2), हर्षाली गुप्ता (7), रजनी अग्रवाल, आन्या मोदी, पंकज मोदी, वर्षा मोदी, इद्दिकी मोदी, ऋषभ, प्रथम अग्रवाल और प्रह्लाद के अलावा एक अन्य के रूप में हुई है। घटना में मारे गए सभी लोगों के शवों का उस्मानिया हॉस्पिटल पोस्टमार्टम के बाद शवों को उनके परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस के अनुसार आग लगने के कारणों का पता नहीं चल सका है। हालांकि आशंका है कि इमारत में लगे एसी में शार्ट सर्किट की वजह से आग लगी होगी। घटना की सूचना मिलने पर स्थानीय विधायक व महापौर विजयलक्ष्मी, राज्य के पुलिस महानिदेशक फायर डीजी नागी रेड्डी, साउथ जोन डीसीपी स्नेहा मिश्रा और नगर पुलिस आयुक्त आनंद घटनास्थल का निरीक्षण किया। पीड़ितों का आरोप है कि दमकल विभाग ने बचाव कार्य शुरू करने में देरी करने से बड़ा हादसा हुआ। परिवार सूत्रों ने बताया है कि मृतक करीबी रिश्तेदार भी हैं, जो गर्मियों की छुट्टी मनाने के लिए राजस्थान से हैदराबाद आए थे। हैदराबाद की इस घटना पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुख व्यक्त किया और पीड़ित परिजनों के लिए मुआवजा का ऐलान किया। प्रधानमंत्री ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, द्योलंगाना के हैदराबाद में आग लगने की घटना में लोगों की मौत होने से बहुत दुखी हूं। अपने प्रियजनों को खोने वालों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं और घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। मृतकों के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से दो-दो लाख रुपये तथा घायलों को 50-50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी। इस भीषण अग्निकांड पर तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने भी दुख जताया है। उन्होंने कहा कि यह दुखद है कि इस दुर्घटना में 17 लोगों की मौत हो गई। वे प्रभावित परिवारों के साथ खड़े हैं। रेड्डी ने फोन पर पीड़ित परिवार के सदस्यों से बात की और उन्हें सांत्वना दी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को घायलों को बेहतर चिकित्सा उपचार उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। राज्य सरकार की ओर से मृतकों के परिजनों के लिए मुआवजे की घोषणा की गई है। उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क ने घोषणा की है कि प्रत्येक मृतक को पांच लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री नेमरा गांव पहुंचे, चाचा जगदीश सोरेन को दी अंतिम विदाई

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन रविवार को सपरिवार रामगढ़ जिला स्थित पैतृक गांव नेमरा पहुंचे। मुख्यमंत्री वहां अपने पारिवारिक सदस्य जगदीश सोरेन जी के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। मुख्यमंत्री अंतिम यात्रा एवं अन्त्येष्टि संस्कार में भी सम्मिलित हुए। विदित हो कि दिवंगत जगदीश सोरेन रिश्ते में (राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन के चचेरे भाई) मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के चाचा लगते थे। विगत 17 मई 2025 को उनका निधन हो गया था। वे अपने पीछे दो पुत्र, एक पुत्री सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

नक्सली डम्प का खुलासा, आईईडी विस्फोटक और हथियार बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पश्चिम सिंहभूम : प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा के शीर्ष नेताओं की सक्रियता की सूचना के बाद चाईबासा पुलिस, सीआरपीएफ और झारखंड जगुआर की संयुक्त टीम ने सारंडा और कोल्हान के सीमावर्ती जंगलों में एक बड़ा सर्च अभियान चलाया। रविवार को टोन्टो थाना क्षेत्र के रूतागुड गांव के जंगली इलाके में अभियान के दौरान सुरक्षा बलों को एक पुराना नक्सली डम्प मिला, इस डम्प से भारी मात्रा में विस्फोटक और हथियार बरामद किए गए। बरामद सामग्रियों में पांच शक्तिशाली आईईडी, दो डेटोनेटर, 18 जिलेटिन की छड़ें, लगभग 4-5 किलोग्राम एएनएफओ, एक फ्यूज, 5.56 एमएम का एक राउण्ड, लोहे का पाइप, 40-50 मीटर तार, दो 12 वोल्ट बैटरियां, दो 9 वोल्ट बैटरियां, एक टिफिन बॉक्स, दो प्रेशर कुकर, दो जोड़ी जंगली जूते, सात मैगजीन, पांच स्टील कंटेनर और अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएं शामिल हैं। बरामद आईईडी को बम निरोधक दस्ते की सहायता से निष्क्रिय किया गया।

चाईबासा पुलिस ने कहा कि यह अभियान माओवादी गतिविधियों को रोकने की दिशा में बड़ी सफलता है और क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए यह अभियान लगातार जारी रहेगा।

रूस ने यूक्रेन पर दागे 273 ड्रोन अबतक का सबसे बड़ा हमला

एजेंसी

कीव : शांति वार्ता विफल होने के कुछ ही घंटों बाद रूस ने यूक्रेन पर जबरदस्त ड्रोन हमला कर दिया। हमले में कम से कम एक नागरिक की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। यूक्रेन की वायुसेना के अनुसार, यह हमला अब तक के सबसे बड़े ड्रोन हमलों में से एक था। यह हमला यूक्रेन और रूस के बीच 2022 के बाद पहली सीधी वार्ता के दो दिनों बाद और डोनाल्ड ट्रम्प-व्लादिमीर पुतिन के बीच टेलीफोन पर होने वाली बातचीत से एक दिन पहले हुआ है। इसी साल 23 फरवरी को यूक्रेन पर रूस ने युद्ध की तीसरी वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर 267 ड्रोन दागे थे। यूक्रेन की वायु सेना ने हमले की पुष्टि करते हुए कहा कि रूस ने स्थानीय समयानुसार सुबह करीब 8 बजे 273 ड्रोन दागे, जिनका

लक्ष्य मुख्य रूप से कीव क्षेत्र और देश के पूर्व में निप्रोपेट्रोव्स्क और डोनेट्स्क क्षेत्र थे। हमले में राजधानी क्षेत्र में 28 वर्षीय महिला की मौत हो गई और चार साल के बच्चे सहित कुछ लोग घायल हो गए। वायुसेना के अनुसार कुल 273 ड्रोन दागे गए, जिनमें से 88 को मार गिराया गया, जबकि 128 ड्रोन इलेक्ट्रॉनिक जैमिंग तकनीक के कारण निष्क्रिय हो गए। कीव के क्षेत्रीय गवर्नर मायकोला कलाश्निक ने कहा कि हमले से आधारभूत संरचना को काफी नुकसान पहुंचा है, जिससे कई इलाकों में बिजली आपूर्ति बाधित हो गई है। यूक्रेन सरकार ने कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए अंतरराष्ट्रीय समुदाय से रूस के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। इस बीच हमले की तीव्रता और रणनीति देखकर विशेषज्ञों का मानना है कि रूस अब यूक्रेन पर साइबर और ड्रोन अटैक एक साथ करके दबाव बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। यह हमला रूस की उस रणनीति को दशार्ता है, जिसमें वह कूटनीतिक वार्ता के साथ-साथ सैन्य दबाव बनाए रखने की नीति अपना रहा है।

कांग्रेस ने दिल्ली में पानी की कमी, बरबादी और गंदे पानी की आपूर्ति को लेकर सरकार को घेरा

एजेंसी

नई दिल्ली : दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने राजधानी में पानी की कमी, बरबादी, चोरी और गंदे पानी की आपूर्ति को लेकर दिल्ली सरकार को घेरा है। उन्होंने रविवार को एक विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि दिल्ली की बढ़ती आबादी के लिए प्रतिदिन लगभग 1290 एमजीडी पानी की जरूरत है परंतु दिल्ली जल बोर्ड 990 एमजीडी पानी प्रतिदिन ट्रीट ही कर पाता है जबकि दिल्ली जल बोर्ड के अनुसार 52 प्रतिशत पानी चोरी या बर्बाद हो जाता है। जल बोर्ड दिल्ली में पीने योग्य पानी का उत्पादन और वितरण करने की अपनी जिम्मेदारी को निभाने में पूरी तरह नाकाम साबित हो रहा है। दिल्ली कांग्रेस आरटीआई सेल द्वारा मांगी जानकारी अनुसार यमुना का प्रदूषित और गंदा पानी लोगों को मिल रहा

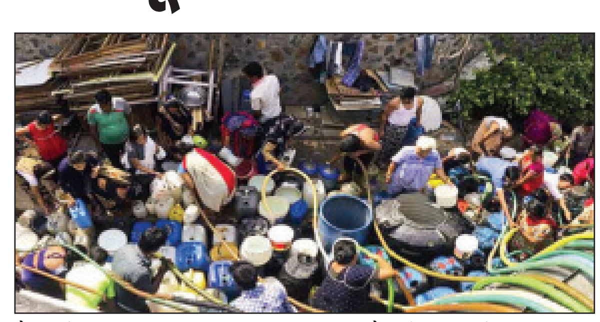

है, जिसे भाजपा की दिल्ली सरकार ने खुद स्वीकार किया है कि 2025 में 30 अप्रैल तक 811 शिकायते गंदे पानी की मिली और इसी दौरान 1835 शिकायतें पानी न मिलने की मिली। देवेंद्र यादव ने कहा कि दिल्ली जल बोर्ड भीषण गर्मी में दिल्लीवालों को पानी की आपूर्ति देने में पूरी तरह नाकाम साबित हो रहा है क्योंकि कुल सीवेज ट्रीटेड वाटर 604 एमजीडी में से महज 11.6 प्रतिशत 94 एमजीडी इस्तेमाल होता है बाकी सीवेज के ट्रीटेट पानी को नालों में बहा दिया जाता है, जो यमुना में चला जाता है।सरकार के पास 2484 एमएलडी पानी को संरक्षित रखने की क्षमता नहीं है। ट्रीटेट 94 एमजीडी पानी में 81 एमजीडी पानी हॉर्टिकल्चर के इस्तेमाल में और 10 एमजीडी पानी पावर प्लांट की यूनिटों को ठंडा करने में इस्तेमाल हो जाता है। उन्होंने कहा कि दिल्ली 90 प्रतिशत जलापूर्ति के लिए दूसरे राज्यों पर निर्भर है। दिल्ली में पानी की भारी किल्लत है जिसका हल निकालने में भाजपा सरकार के पास कोई साधन नही है। देवेंद्र यादव ने कहा कि दिल्ली के जल मंत्री लगातार सीवेज ट्रीटमेंट बढ़ाने और सीवेज ट्रीटमेंट जल की क्षमता बढ़ाने के बयान दे रहे है, जबकि मौजूदा 37 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट में से 25 प्लांट मानको के अनुसार खरे नहीं उतरे और अपनी क्षमता अनुसार काम नहीं कर पा रहे है। उन्होंने कहा कि जल मंत्री मौजूदा व्यवस्था में सुधार लाने की बजाय नई घोषणा कर रहे है जबकि दिल्ली जल बोर्ड का 52 प्रतिशत बर्बाद और चोरी हो रहे पानी को बचाने का कोई उपाय या संसाधन सरकार के पास नहीं है। भाजपा भी आम आदमी पार्टी की सरकार की तरह कुछ करने की बजाय सिर्फ घोषणा और आरोप लगाकर अपना पल्ला झाड़ रही है। देवेंद्र यादव ने कहा कि यह अत्यंत चिंताजनक है कि दिल्ली में आबादी के हिसाब से पानी का बंटवारा नही होने के कारण लोगों को जल संकट झेलना पड़ रहा है।

लिक्विडेशन में गये पैक्स का जल्द निपटारा कर नए रजिस्ट्रेशन के लिए नीति बनेगी : अमित शाह

एजेंसी

अहमदाबाद : केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि देश में 2029 तक सभी पंचायत में पैक्स रजिस्ट्रेशन हो और 2 लाख नई सेवा सहकारी मंडलियों और डेयरियों को रजिस्ट्रेशन कराने का अभियान चलाया गया है। परंतु, यह पैक्स पहले की तरह बीमार नहीं हो, इसके लिए 22 प्रकार की गतिविधियों को पैक्स से जोड़ने का काम केन्द्र सरकार ने किया है। विश्वास है कि आगामी दिनों में एक भी पैक्स आर्थिक रूप से बीमार नहीं होंगे। इसके अलावा जल्द ही केन्द्र सरकार लिक्विडेशन में गई पैक्स का जल्द निपटारा कर इनकी जगह नए पैक्स के रजिस्ट्रेशन के लिए नीति लाएगी। अमित शाह रविवार को अहमदाबाद के सोला स्थित साइंस सिटी में गुजरात राज्य सहकारी संघ की ओर से आयोजित विकसित भारत के निर्माण में सहकारिता की भूमिका महा सम्मेलन में बोल रहे थे। इसमें देशभर के करीब 4 हजार सहकारी अग्रणी शामिल हुए। इस महा सम्मेलन में देश के सहकारी क्षेत्र में हुई 57 नई पहल और प्राकृतिक खेती के संबंध में भी चर्चा होगी। इससे पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि यूनाइटेड नेशन ने वर्ष 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय किया है। सहकारिता समग्र विश्व के अंदर आज इतनी प्रासंगिक है जितना

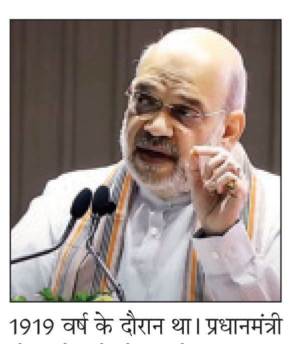

1919 वर्ष के दौरान था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2021 से भारत में सहकारी आंदोलन को पुनर्जीवित करने का बहुत बड़ा प्रयास यहां से शुरू हुआ। इसका अनुमोदन करने के लिए देश के अंदर सहकारिता वर्ष मनाने की शुरूआत करने का निर्णय हुआ। इसके तहत दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में सम्मेलन हुआ जिसमें सहकार से समृद्धि और विकसित भारत में सहकारिता की भूमिका इन दोनों स्लोगन देश के सहकारिता नेताओं के समक्ष रखा गया। केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि आज गुजरात में सहकारिता सम्मेलन का आयोजन किया गया है। वर्ष 2021 से लेकर 2025 तक देश के सहकारिता के क्षेत्र में जो-जो परिवर्तन हुए, इसे वक्ताओं ने यहां रखा। परंतु, जब तक यह परिवर्तन नीचे पैक्स और पैक्स के सदस्यों और किसानों तक नहीं पहुंचता है, तब तक यह परिवर्तन भी सहकारी क्षेत्र को मजबूत नहीं कर सकता है। सहकारी संस्थाओं को आगे बढ़ाने के लिए सभी तरह की मंडलियों के अंदर जागरूकता, सहकार का प्रशिक्षण और पारदर्शिता यह तीनों लाने का प्रयास करना होगा। उन्होंने कहा कि भारत सरकार का सहकार विभाग सहकारिता वर्ष का लक्ष्य भी यही रखा है। अमित शाह ने कहा कि साइंस ऑफ कॉरपोरेशन और साइंस इन कॉरपोरेशन यानी सहकारिता के विज्ञान को पुनर्जीवित कर आधुनिक बनना और विज्ञान का सहकारिता में उपयोग करने पर केन्द्र सरकार ने बल दिया है। अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि आजादी के आंदोलन के समय खड़ा हुआ यह सहकारिता आंदोलन 75 साल की आजादी में एक प्रकार से लकवाग्रस्त हो गया।

जेएससीए के नए अध्यक्ष बने अजय नाथ शाहदेव, सौरभ तिवारी बने सचिव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन (जेएससीए) के चुनाव में रविवार को अजय नाथ शाहदेव और एसके बेहरा के गुट के बीच हुए मुकाबले में अजय नाथ शाहदेव की द टीम ने क्लीन स्वीप किया। अध्यक्ष पद समेत सभी सीटों पर अजय नाथ शाहदेव गुट की जीत हुई है और एसके बेहरा गुट को करारी शिकस्त मिली है। रविवार को हुए मतदान के बाद घोषित परिणामों के अनुसार अध्यक्ष पद पर अजय नाथ शाहदेव ने जीत दर्ज की है। उपाध्यक्ष पद पर संजय पांडे, सचिव पद पर पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर सौरभ तिवारी, सह सचिव पद पर पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर शाहबाज नदीम ने जीत दर्ज की है।अमिताभ घोष ने कोषाध्यक्ष पद पर जीत हासिल कर ली है। अजय नाथ

शाहदेव गुट की ओर से कमेटी मेंबर के रूप में संजय जैन, रमेश कुमार, मिहिर प्रीतेश तोपनो, परवेज खान और रत्नेश कुमार सिंह की जीत हुई है। जिला कमेटी मेंबर में वीरेंद्र पाठक, श्रीराम पुरी, राघवेंद्र नारायण सिंह और उत्तर कुमार बिस्वास ने जीत हासिल की है। वहीं स्कूल एंड क्लब रिप्रेजेंटेटिव के रूप में उमा महेश्वर राव ने जीत का परचम लहराया है। जीत के बाद अजय नाथ शाहदेव गुट ने जेएससीए स्टेडिम में जमकर आतिशबाजी कर जीत की खुशी मनाई।

हजारीबाग में रामनवमी के सफल आयोजन पर हुआ सम्मान समारोह

आपसी सौहार्द और भाईचारे का मिशाल पेश किया : एसपी

प्रत्युष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग की रामनवमी पूरे देश में अपनी भव्यता और शांति के लिए प्रसिद्ध है। इस ऐतिहासिक पर्व को देखने हर वर्ष न केवल झारखंड, बल्कि देशभर से बड़ी संख्या में लोग यहां पहुंचते हैं। रामनवमी 2025 के सफल और शांतिपूर्ण आयोजन को लेकर शनिवार को पुलिस अधीक्षक आवास में एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में हजारीबाग एसपी अरविंद कुमार सिंह ने उन पत्रकारों, रामनवमी संरक्षण समिति , सद्भावना विकास मंच, पूर्व महासमिति अध्यक्ष , समाजसेवियों और विभिन्न

सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों को सम्मानित किया, जिन्होंने रामनवमी के आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय भागीदारी निभाई। कार्यक्रम के दौरान प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किए गए पत्रकारों को एसपी ने व्यक्तिगत रूप से बधाई दी और उनके कार्य की सराहना की। एसपी अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि हजारीबाग की रामनवमी राज्य ही नहीं, देशभर में खास पहचान रखती है। इस बार की रामनवमी में सभी पक्षों प्रशासन, मीडिया, समाजसेवी और आम नागरिकों ने मिलकर सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि मीडिया ने इस बार की रामनवमी की सकारात्मक तस्वीर टीवी और अखबारों के माध्यम से देशभर तक पहुंचाई, जिससे जिले की एक बेहतर छवि बनी है। एसपी ने कहा कि यह सम्मान समारोह सिर्फ एक औपचारिकता नहीं, बल्कि उन सभी लोगों के योगदान को मान्यता देने का एक प्रयास है, जिन्होंने अपने-अपने स्तर से इस आयोजन को सफल और शांतिपूर्ण बनाया। समारोह में बड़ी संख्या में पत्रकार, समाजसेवी, पुलिस पदाधिकारी और आम नागरिक मौजूद रहे। कार्यक्रम के अंत में एसपी ने सभी को धन्यवाद देते हुए भविष्य में भी इसी तरह के सहयोग की अपेक्षा जताई। मौके पर अपर पुलिस अधीक्षक अमित कुमार, सदर एस डी पी ओ अमित आनंद, विष्णुगढ़ एस डी पी ओ बैजनाथ प्रसाद, एस डी पी ओ बड़कागांव पवन कुमार , पुलिस उपाधीक्षक सी सी आर मनोज कुमार सिंह, रामनवमी संरक्षण समिति अध्यक्ष प्रशांत कुमार प्रधान, परमेश्वर प्रसाद मेहता, कार्यकारी अध्यक्ष निशांत कुमार प्रधान, लब्बू गुप्ता, ज्योति सिन्हा , ओम प्रकाश सिन्हा, केदार कुमार मोहन कुमार, महासमिति अध्यक्ष बसंत यादव, पूर्व महासमिति अध्यक्ष राजकुमार यादव, राजेश गोप, देवेंद्र सिंह नरूला, नासिर आलम सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

बड़कागांव के अभिषेक ने इंटर स्कूल जिला आर्चरी चैंपियनशिप में जीता गोल्ड

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : हजारीबाग रोड एचपी पेट्रोल पंप के समीप संचालित सरगम इंटरनेशनल स्कूल के कक्षा सातवीं के छात्र अभिषेक कुमार ने प्रथम इंटर स्कूल जिला आर्चरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान लाकर गोल्ड मेडल हासिल किया। अभिषेक अशोक नगर का रहने वाला है । अभिषेक की इस उपलब्धि पर स्कूल के निदेशक राजेश सोनी ,स्कूल के प्राचार्य मुसरत प्रवीण, स्कूल की प्रबंधक अध्यक्ष सहेश्वर दागी ,सचिव शंकर कुमार ,उपाध्यक्ष सरोज सोनी, कोषाध्यक्ष विनोद कुमार साव, एवं उपसचिव शंकर कुमार ने अभिषेक के इस उपलब्धि पर उनको बधाई दी एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की अभिषेक ने बताया कि इस उपलब्धि का श्रेय माता-पिता कोच दोस्त एवं शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को दिया। इस अवसर पर विद्यालय शिक्षक किशोर सोनी, साजिद रजा, कुतुबुद्दीन,अविनाश, पिंटू, उपेंद्र, सबीना, सपना, तनद्र, सुधा, चमेली, मानसी शिल्पा ,सुशीला, कृति, इत्यादि शिक्षकों ने एवं स्कूल के समस्त परिवार उनको बधाई दी।

यादव महासभा द्वारा रेजांग ला युद्ध की पवित्र मिट्टी कलश के साथ नगर भ्रमण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : अखिल भारतीय यादव महासभा द्वारा संगठन के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में चलाए जा रहे जनजागृति अभियान के अंतर्गत रविवार को हजारीबाग में रेजांगला युद्ध की पवित्र मिट्टी के साथ भव्य नगर भ्रमण आयोजित किया गया। यादव महासभा की यह स्वर्ण जयंती यात्रा देशभर में भ्रमण कर रही है, जिसका प्रमुख उद्देश्य अहीर समाज को संगठित कर, समाज के युवाओं में जागरूकता फैलाना, उनके अधिकारों की रक्षा करना और देश के लिए बलिदान देने वाले अहीर वीरों की गाथा को जन-जन तक पहुँचाना है। रेजांगला युद्ध की ऐतिहासिक गाथा को स्मरण करते हुए महासभा ने बताया कि यह युद्ध 18 नवम्बर 1962 को भारत और चीन के बीच लद्दाख स्थित रेजांगला दर्रे पर

लड़ा गया था। इसमें भारतीय सेना की 13 कुमाऊं रेजिमेंट की चार्ली कंपनी, जिसे अहीर कंपनी कहा जाता है, ने असाधारण वीरता का प्रदर्शन करते हुए मात्र 120 सैनिकों के साथ 1300 से अधिक चीनी सैनिकों का सामना किया था। भीषण ठंड, अत्यल्प हथियार और सीमित भोजन के बावजूद जवानों ने आखिरी साँस तक लड़ते हुए 114 वीर जवानों की शहादत दी। यह युद्ध भारतीय सैन्य इतिहास की सबसे वीरतापूर्ण लड़ाइयों में गिना जाता है और आज भी यह देशभक्ति और बलिदान का प्रतीक बना हुआ है। इन्हीं वीरों की स्मृति में, रेजांगला की पावन धरती से लाई गई मिट्टी से भरे पवित्र कलश को अखिल भारतीय यादव महासभा द्वारा देशभर में यात्रा पर निकाला गया है। यह कलश शनिवार की शाम हजारीबाग पहुँचा, जहाँ भारत माता चौक पर भावपूर्ण स्वागत किया गया। इसके पश्चात कलश को बड़ा बाजार ग्वाल टोली चौक तक ले जाया गया, जहाँ एक सभा का आयोजन कर लोगों को राष्ट्रभक्ति तथा अहीर रेजिमेंट की माँग के प्रति जागरूक किया गया।

मंडल कारा में जेल अदालत सह विधिक जागरूकता शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार रांची के निर्देश के आलोक में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा के तत्वावधान में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के प्रभारी सचिव मनोरंजन कुमार के कुशल नेतृत्व में मंडल कारा कोडरमा में जेल अदालत सह विधिक जागरूकता शिविर एवं बंदियों के लिए स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया । बंदियों के बीच आयोजित विधिक जागरूकता शिविर में मुख्य रूप से उपस्थित प्राधिकार के एल.ए.डी.सी.एस के अधिवक्ता नवल किशोर ने कहा कि बंदी अपने बीच से नकारात्मक सोच को हटाकर सकारात्मक सोच पैदा करे तथा अपराध की दुनिया से निकल कर समाज की मुख्य धारा में शामिल हो ताकि स्वस्थ समाज के निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। एल.ए.डी.सी.एस के अधिवक्ता राजेन्द्र मंडल ने बंदियों को प्ली-बार्गेनिंग की जानकारी देते हुए कहा कि इसके तहत बंदी अपना दोष स्वीकार कर अपनी सजा कम करा सकते हैं। उन्होंने अपने संबोधन में भारतीय सविंधान में बंदियों के लिए प्रदत मौलिक अधिकारों को काफी विस्तार से बताया। एल ए डी सी एस के अधिवक्ता ललन कुमार चौधरी ने शिविर को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी मामले में आधे से अधिक सजा काट चुके बंदी अपना दोष स्वीकार कर कारा मुक्त हो सकते है यदि वह अपराध बच्चो एवं महिलाओ के विरुद्ध नहीं हो। वही श्री चौधरी ने बंदियों को संबोधित करते हुए कहा कि जेल में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को अपराधी नही माने। इस कार्यक्रम में कोडरमा के सिविल सर्जन डॉ अनिल कुमार के मार्ग दर्शन में सदर अस्पताल के चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अभिषेक कुमार ने नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा बंदियों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया तथा इसके तहत दर्जनों बंदियों की जाँच की गई।

शिवम आयरन फैक्ट्री के आगे सड़क के किनारे एक व्यक्ति का शव बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चंदवारा : थाना क्षेत्र अंतर्गत शिवम आयरन फैक्ट्री के बाहर महतोआरा-जौंगी मार्ग पर रविवार की सुबह एक शव बरामद किया गया है। शव की फिलहाल शिनाख्त नहीं हो पाई है। मिली जानकारी के अनुसार महतोआरा-जौंगी मार्ग पर अहले सुबह जब गांव के लोग गुजर रहे थे, तो सड़क किनारे एक अधजले व्यक्ति का शव दिखाई दिया। जिसके पश्चात वहां ग्रामीणों की भीड़ इकट्ठा हो गई। जिसके पश्चात घटना की सूचना चंदवारा पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही चंदवारा थाना प्रभारी धनेश्वर कुमार दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे और जांच पड़ताल में जुट गए। शव को देखकर यह प्रतीत होता है कि उक्त व्यक्ति बीती रात ही किसी फैक्ट्री में कार्य के दौरान दुर्घटना का शिकार हुआ है। इधर मुख्यालय डीएसपी रतिभान सिंह भी

घटनास्थल पर पहुंचे और जांच पड़ताल शुरू कर दी। इस दौरान घटनास्थान पर शव के पास से एक मोबाइल व एक बाइक का नंबर प्लेट पाया गया। जिसमें बाइक का रेजिस्ट्रेशन नम्बर (जे एच 12 एम 4934) अंकित था। जिसकी जांच पड़ताल करने पर पाया गया कि वह चंदवारा थाना क्षेत्र के भोंडो गांव निवासी 25 वर्षीय अजय साव पिता विजय साव के बाइक का है। जिसके पश्चात डीएसपी व चंदवारा पुलिस उक्त व्यक्ति के घर पहुंची। जहां पूछताछ में यह बातें सामने आईं कि अजय साव बीती रात करीब 11:30 बजे घायल अवस्था में अपने घर पहुंचा था।

जमीन की बाध्यता को लेकर पासवा ने विधायक को सौंपा ज्ञापन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : प्राइवेट स्कूल्स एंड चिल्ड्रन वेलफेयर एसोसिएशन कोडरमा के प्रतिनिधि मंडल ने कोडरमा विधायक डॉ नीरा यादव के आवास पर मुलाकात कर निजी विद्यालयों को संचालित करने में आ रही समस्याओं से अवगत कराया। सभा का संचालन महा सचिव अभय कुमार ने किया। उपस्थित पदाधिकारियों ने बारी बारी से विधायक जी को निजी विद्यालयों के समस्याओं से अवगत कराए। मौके पर प्रदेश सचिव तौफीक हुसैन अध्यक्ष डॉ बी एन पी बरनवाल और संघ के सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से झारखंड में संचालित सभी निजी विद्यालयों को मान्यता लेने में बाधा बन रही जमीन की बाध्यता का जिक्र करते हुए निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए

अवगत करवाए। झारखंड राज्य में हजारों हजार ऐसे निजी विद्यालय हैं जो की आरटीई 2019 संशोधन से पहले ही निर्मित हो चुके हैं। हजारों विद्यालय आरटीई 2019 संशोधन के पहले से ही जिला शिक्षा विभाग को प्रपत्र1 भरकर जमाकर देते आए हैं। आरटीई 2019 संशोधन को निरस्त करते हुए आरटीई 2009 निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम एवं 2011 निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तर्ज पर सभी निजी स्कूलों समय अवधि निर्धारित कर मान्यता दी जाए। यू-डाइस प्राप्त विद्यालयों को तत्काल प्रभाव से औपचारिक मान्यता दी जाए एवं 5 वर्षों औपबंधिक समय देते हुए मानक अर्हता पूरी कराई जाए। विधालय में नामांकित बच्चों के आधार पर जामीन की बाध्यता को शिथिल करते हुए जमीन की बाध्यता को समाप्त किया जाए।

खेल का मैदान एवं अन्य गतिविधियों के लिए कुल भूमि का दो तिहाई भूमि खाली होने के अनिवार्यता के स्थान पर प्रार्थना सभा के लिए जगह होना अनिवार्य किया जाए। आयोजन को सफल बनाने में जिले से सैकड़ो निजी विद्यालय के संचालक संचालिका उपस्थित हुए जिसमें मुख्य रूप से कोडरमा प्रखंड अध्यक्ष प्रवीण कुमार बरनवाल, सतगावां अध्यक्ष अजय कुमार मरकच्चो सचिव दिलीप कुमार बरनवाल एवं अन्य पदाधिकारियों में सुनीता पांडे कृष्णनंदन प्रसाद रामचंद्र मोदी सुनीता बर्नवाल पिंटू कुमार गंगाधर राणा मनोज कुमार नागेश्वर साव उपस्थित रहे।

एक नजर

मेहता भवन में रक्तदान शिविर का आज होगा आयोजन

हजारीबाग : झारखंड एकता मंच, झारखंड स्वतंत्रता सेनानी विचार मंच और आरोग्यम अस्पताल के संयुक्त तत्वावधान में हजारीबाग के जुलु पार्क स्थित मेहता भवन में आज रक्तदान शिविर आयोजित किया गया है। आयोजित रक्तदान शिविर की जानकारी साझा करते हुए झारखंड स्वतंत्रता सेनानी विचार मंच के अध्यक्ष बटेश्वर प्रसाद मेहता ने बताया कि रक्तदान शिविर पूर्वाह्न 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक आयोजित किया गया है। रक्तदान शिविर में स्वतंत्रता सेनानी शहीद शेख भिखारी की परपोती सह झारखंड एकता मंच की अध्यक्षा इम्तेशाम अली बतौर मुख्य अतिथि शरीक होकर रक्तदाताओं को सम्मानित करेंगी। आयोजित रक्तदान शिविर को लेकर रक्तदाताओं से आह्वान करते हुए श्री मेहता ने कहा कि रक्तदान महादान है। आपके द्वारा किए गए रक्तदान से किसी की जान बचाई जा सकती है। युवाओं से खास तौर पर अपील करते हुए कहा कि रक्तदान कर मानवता का परिचय दें।

अहीर रेजिमेंट की मांग को लेकर कलश रथ यात्रा का हुआ स्वागत

चौपारण : अखिल भारतीय यादव महासभा के द्वारा देशभर में वीर शहीदों की स्मृति निकाली जा रही है। जिसमे रेजांगला रज कलश यात्रा रथ का बरही के पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला एवं यदुवंशी समाज के द्वारा अंगवस्त्र और माला पहनाकर गाजे-बाजे के साथ स्वागत किया गया। इस अवसर पर देशभक्ति से ओतप्रोत नारों से वातारण गूंज उठा। प्रदेश अध्यक्ष पीताम्बर दास ने बताया यह ऐतिहासिक यात्रा देश के विभिन्न राज्यों से होते हुए 18 नवंबर 2025 को दिल्ली के जंतर-मंतर पर पहुंचेगी। यात्रा का उद्देश्य रेजांगला के वीर अहीर सैनिकों की शौर्यगाथा को जन-जन तक पहुंचाना है। बरही के पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला ने कहा कि रेजांगला युद्ध विश्व की उन चुनिंदा लड़ाइयों में से है, जिसकी वीरता आज भी मिसाल बनकर नई पीढ़ी को प्रेरणा दे रही है। 18 नवंबर 1962 को भारत-चीन युद्ध के दौरान पूर्वी लद्दाख स्थित रेजांगला की चौकी पर 13 कुमाऊं बटालियन की चार्ली कंपनी तैनात थी, जिसमें सभी 120 जवान अहीर समुदाय से थे। जब तकरीबन 5000 चीनी सैनिकों ने उस चौकी पर हमला किया, तब इन वीर जवानों ने चौकी खाली करने से इंकार कर दादा किशन की सौगंध ली और दुश्मन से लोहा लिया।

आरपीवाई बीएड कॉलेज में पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन का हुआ आयोजन

कोडरमा : रमेश प्रसाद यादव शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में दिनांक 18 .05 .2025 दिन रविवार को महाविद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र संघ के द्वारा पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्राचार्य व पूर्ववर्ती छात्र-छात्राओं द्वारा मां सरस्वती की छायाचित्र पर पुष्प अर्पित व द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम का मंच संचालन करते हुए डॉ. संजीव कुमार ने सभी का अभिनदंनन किया। कार्यक्रम का विषय प्रवेश सहायक प्राध्यापक राजेश पांडेय ने कराया। वहीं पूर्ववर्ती छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने विचार रखे। उन्होंने महाविद्यालय में बिताए गए हर एक महत्वपूर्ण पलों और महाविद्यालय से जुड़ी बातों को सबों से साझा किया। सत्र 2015-17 के अमर कुमार उज्ज्वल, सत्र 2018-20 के मुकेश कुमार, सत्र 2022-24 के जयनंदन विश्वकर्मा आदि ने महाविद्यालय के साथ पारस्परिक सम्बंधों को बनाये रखने, हमेशा महाविद्यालय के विकास में सहयोग करने, की बात कही। वहीं सत्र 2022-24 से पूर्ववर्ती छात्र संघ के सदस्य के रूप में गौरव कुमार को चुना गया।

संक्षिप्त खबरें

चौपारण के दनुवा में आस्था की अमरबेल फिर से लहराई

चौपारण : चौपारण की धरती पर आस्था की अमरबेल फिर से लहराई, ग्राम दनुआ के ह्रदय में, चोरदाहा पंचायत की गोद में, धर्म और भक्ति का अनुपम संगम बना नौ दिवसीय श्री श्री 108 हनुमंत प्राण प्रतिष्ठा सह रूद्र महायज्ञ का शुभारंभ एक आध्यात्मिक दीपोत्सव बन गया। जहां पुलिस की वर्दी में कर्तव्य था, वहीं प्रवचन की वाणी में करुणा और श्रद्धालुओं की आंखों में भक्ति का उजास। चौपारण के थानेदार अनुपम प्रकाश, मुखिया प्रतिनिधि बैजनाथ गंजू, कृष्णा पासवान और समिति के समर्पित सेवकों ने मिलकर मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्वलित किया। थानेदार अनुपम प्रकाश ने कहा राम कथा आत्मा का अन्न है, यह मन के क्लेश को हरती है और जीवन में शांति का वास लाती है। जब तक तन और मन स्वच्छ नहीं होंगे, तब तक सच्चा विकास संभव नहीं। धर्म ही वह मार्ग है, जो भीतर की गंदगी को धोकर आत्मा को निर्मल करता है। वही उत्तर प्रदेश के वृंदावन से आईं प्रवचन सम्राज्ञी देवी रोशनी शास्त्री ने जब अपने मुखारविंद से कथा की अमृतधारा बहाई, तो दनुआ की वायु भी पुलकित हो उठी। हर श्रोता जैसे प्रभु श्रीराम की कथा में खो गया और आंखों से श्रद्धा की गंगा बह चली।

मंडा पूजा को लेकर कमेटी का गठन, अध्यक्ष फूलचंद सचिव अरुण व संतोष बने कोषाध्यक्ष

बड़कागांव : सिकरी शिव मंदिर प्रांगण में मंडा पूजा संपन्न कराने हेतु ग्रामीणों की बैठक क आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता बसंत नारायण सिंह ने किया जबकि संचालन फूलचंद गिरी व अशोक गुप्ता ने किया। पूजा सुचारू रूप से संचालित करने हेतु ग्रामीणों की आम सहमति से एक कमेटी का गठन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष फूलचंद गिरी, उपाध्यक्ष धनेश्वर राम, सचिव अरुण कुमार, उप सचिव पृथ्वीराज गुप्ता, कोषाध्यक्ष संतोष कुमार, कोषाध्यक्ष अनुज कुमार राम, संयोजक बसंत नारायण सिंह, बंसी राम, भोला महतो, नारायण महतो, द्वारिका महतो व तुलसी राणा संरक्षक में स्वरूप नारायण सिंह, जय नारायण सिंह, कैलाश पांडेय, सत्येंद्र पासवान,रामचंद्र साव एवं वर्तमान एवं पूर्व मुखिया, पंसस व सभी वार्ड सदस्य का चयन किया गया। मीडिया प्रभारी के रूप में अशोक कुमार शर्मा, हरिश्चंद्र प्रसाद व अरुण गुप्ता का चयन किया गया।

स्वदेशी जागरण मंच की हुई बैठक

झुमरी तिलैया/कोडरमा : शिव तारा सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में स्वदेशी जागरण मंच की एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में आगामी प्रांत विचार वर्ग के आयोजन के लिए गहन विचार-विमर्श किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि प्रांत विचार वर्ग 25 मई से 26 मई 2025 तक आयोजित किया जाएगा। इस दो दिवसीय वर्ग में झारखंड प्रांत के विभिन्न जिलों से सैकड़ों कार्यकर्ता भाग लेने आएंगे। वर्ग का मुख्य उद्देश्य कार्यकताओं को प्रशिक्षित करना है, ताकि स्वदेशी विचार एवं भावना को झारखंड के हर घर तक पहुंचाया जा सके। प्रशिक्षण वर्ग के माध्यम से, स्वदेशी आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कार्यकताओं को बौद्धिक, संगठनात्मक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से सशक्त किया जाएगा। इस वर्ग को सफलतापूर्वक संपन्न कराने के लिए एक आयोजन समिति का गठन किया गया है, जो आयोजन की समस्त जिम्मेदारियों का निर्वहन करेगी।स्वदेशी जागरण मंच का यह प्रयास समाज में आत्मनिर्भरता, स्वदेशी उत्पादों के उपयोग और भारतीय जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार को सशक्त रूप से आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बैठक में मुख्य रूप से अखिल भारतीय मेला प्रमुख सचिन बरियार, प्रदीप सुमन, क्षेत्रीय संयोजक अमरेंद्र कुमार सिंह, प्रांत संयोजक राजेश कुमार उपाध्याय, प्रांतीय परिषद सदस्य एडवर्ड्स सोरेन, प्रांत पूर्णकालिक हिमांशु शेखर, संघर्ष वाहिनी प्रमुख सूरज कुमार मोदी, और अन्य कई सम्मानित कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रोटरी बाल विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा गौशाला भ्रमण

बोकारो : रोटरी क्लब ऑफ कोडरमा द्वारा संचालित रोटरी बाल विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा समर कैंप के समापन के दिन कोडरमा गौशाला का शैक्षणिक भ्रमण किया गया। गौशाला परिसर में जाकर विद्यार्थियों ने गायों का रखरखाव, हरी घास का उत्पादन, गौकाष्ठ एवं जैविक खाद का निर्माण, दूध की पैकिंग इत्यादि कार्यकलापों को बड़ी उत्सुकता के साथ देखा। बच्चों ने अपने हाथों से गुड़, चोकर एवं हरी घास इत्यादि गायों और बछड़ों को खिलाया। इस भ्रमण मे बच्चों के साथ बाल विद्यालय के डायरेक्टर महेश दारुका, चेयरमैन रितु सेठ, पूर्व अध्यक्ष विकास सेठ, पूर्व अध्यक्ष अजय अग्रवाल, प्रेसिडेंट इलेक्ट संतोष सिन्हा, कमल सेठी एवं विद्यालय की प्रिंसिपल रीना कुमारी एवं शिक्षिकाएं भी उपस्थित थी। इस अवसर पर कोडरमा गौशाला समिति के वरिष्ठ पदाधिकारी गण ओम प्रकाश खेतान, अरुण मोदी, विनोद बजाज, गोपाल बगड़िया तथा व्यवस्थापक अनंत कुमार एवं सौरभ ने सबों का जोरदार अभिनंदन किया और वर्तमान परिपेक्ष में गायों एवं गौशाला की उपयोगिता के प्रति बच्चों को अवगत कराया।

बच्चों के अधिकारों की रक्षा करता है किशोर न्याय अधिनियम : अन्नपूर्णा देवी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के न्यायिक अकादमी में रविवार को किशोर न्याय अधिनियम और इससे संबंधित कानूनों पर एक दिवसीय विशेष परामर्श बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय महिला और बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने की। इस बैठक का उद्देश्य किशोर न्याय प्रणाली को अधिक प्रभावी, संवेदनशील और न्यायपूर्ण बनाने के लिए हितधारकों के बीच संवाद स्थापित करना था। मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने इस अवसर पर कहा कि जब हम हर बच्चे को न्याय, संरक्षण और सम्मान देते हैं, तभी एक संवेदनशील और सशक्त समाज की नींव रखी जाती है। किशोर न्याय अधिनियम इसी दिशा में एक सशक्त कदम है, जो न केवल बच्चों के अधिकारों की रक्षा करता है, बल्कि उन्हें पुनर्वास एवं पुनर्संवर्धन के माध्यम से गरिमामयी जीवन की ओर अग्रसर करता है। कार्यक्रम में बाल न्यायालयों के न्यायाधीशों, प्रधान मजिस्ट्रेटों, किशोर न्याय बोर्ड (जेजेबी) और चाइल्ड वेलफेयर कमिटी कल्याण (सीडब्लूसी) के सदस्यों, विशेष किशोर पुलिस इकाई (एसजेपीयू) के अधिकारी, जिला बाल संरक्षण इकाई (डीसीपीयू) के पदाधिकारी सहित अनेक महत्वपूर्ण हितधारकों की उपस्थिति रही। विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यायमूर्ति अनुभा रावत चौधरी, न्यायाधीश, झारखंड उच्च न्यायालय उपस्थित रहीं। उन्होंने किशोर न्याय प्रणाली की संवेदनशीलता और उसमें सुधार की संभावनाओं पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम में न्यायिक अकादमी के निदेशक राजेश शरण सिंह, संयुक्त निदेशक डॉ. संध्या मित्रा बारिक ने भी बाल संरक्षण प्रणाली को सशक्त बनाने के विभिन्न पहलुओं पर विचार साझा किए। बैठक में उपस्थित सभी विशेषज्ञों और अधिकारियों ने किशोर न्याय प्रणाली की चुनौतियों, सुधारों और भविष्य की दिशा पर उपयोगी संवाद किया। यह परामर्श बैठक बाल अधिकारों की रक्षा और न्यायिक प्रणाली के उन्नयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित होगी। उल्लेखनीय है कि हमारे देश में किशोर न्याय अधिनियम बच्चों के संरक्षण और देखभाल के लिए एक महत्वपूर्ण कानून है। यह अधिनियम उन बच्चों के लिए बनाया गया है जो या तो कानून का उल्लंघन करने वाले हैं या जिन्हें देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता है।

रक्षा राज्य मंत्री की पहल, रातू रोड में अब एलिवेटेड कॉरिडोर से गुजरेंगे एंबुलेंस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के सांसद और केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ की पहल पर रातू रोड से गुजरने वाले एंबुलेंस को बड़ी राहत मिलने वाली है। अब सभी एंबुलेंस नवनिर्मित एलिवेटेड कॉरिडोर के ऊपर से गुजरेंगे, जिससे एंबुलेंस का समय बच सकेगा और अनावश्यक जाम में फंसने से राहत मिलेगी। दरअसल, मंत्री संजय सेठ ने इस मसले को लेकर राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों से बात की और यह निर्देश दिया कि एलिवेटेड कॉरिडोर के ऊपर से गुजरने के लिए एंबुलेंस को छूट दी जाए। उनके निर्देश पर राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों ने सहमति दे दी है। इस सहमति के साथ ही पलामू, गढ़वा, लातेहार, चतरा, गुमला, लोहरदगा जैसे क्षेत्रों से आने-जाने वाले एंबुलेंस को राहत मिलेगी। वहां अनावश्यक जाम में फंसने से एंबुलेंस बच सकेंगे और समय पर अस्पताल पहुंच सकेंगे। रक्षा राज्य मंत्री ने रविवार को बताया कि सर्विस रोड निर्माण कार्य के कारण जाम में एंबुलेंस भी फंस रहे थे, जिससे कई बार मरीजों की जान पर बन आती थी। इस मुद्दे को लेकर राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों को निर्देशित किया गया और अधिकारियों ने इसकी त्वरित स्वीकृति प्रदान कर दी है। रक्षा राज्य मंत्री के इस पहल की सर्वत्र सराहना हो रही है। उल्लेखनीय है कि रातू रोड में एलिवेटेड कॉरिडोर का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। वर्तमान समय में नीचे सर्विस रोड का काम चल रहा है। इस वजह से कई बार जाम लगता है और इस जाम में एंबुलेंस भी फंस जाते हैं। जाम में एंबुलेंस के फंसे होने के कारण पूरी ट्रैफिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। मरीजों के लिए भी गंभीर समस्या खड़ी हो जाती है।

तेज बारिश से रांची में मौसम सुहाना, पेड़ गिरने से ट्रैफिक जाम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची में शनिवार को तेज आंधी और झमाझम बारिश ने जहां भीषण गर्मी से राहत दी, वहीं शहर की यातायात व्यवस्था को भी अस्त-व्यस्त कर दिया। ईस्ट जेल रोड में एक बड़ा पेड़ गिर जाने के कारण सड़क पूरी तरह जाम हो गई। इस वजह से वाहनों को दूसरे रास्ते से घूम कर जाना पड़ रहा है। बारिश इतनी तेज थी कि कई चार पहिया वाहन चालकों को सड़क किनारे अपने वाहन रोकने पड़े। तेज हवा और आंधी के कारण शहर के अलग-अलग हिस्सों से छोटे-बड़े पेड़ गिरने की खबरें भी आई हैं। हालांकि राहत की बात यह है कि कहीं से जानमाल के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। बारिश के साथ ही बिजली आपूर्ति भी बाधित हो गई, जिससे कई इलाकों में लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। सड़क किनारे पानी जमा होने से पैदल चलने वालों और दोपहिया वाहन चालकों को खासी दिक्कतें हुईं। मौसम विभाग ने पहले ही तेज हवा, मेघ गर्जन और बारिश की चेतावनी जारी की थी। रांची ही नहीं, राज्य के अन्य जिलों से भी बारिश की खबरें मिल रही हैं। फिलहाल रांची का मौसम सुहाना हो गया है, लेकिन शहर की रफ्तार पर बारिश का असर साफ दिख रहा है।

कांग्रेस के धरना को सफल बनाने को लेकर हुई चर्चा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश की अध्यक्षता में रविवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में प्रदेश कांग्रेस कंट्रोल रूम के प्रभारी और सदस्यों के साथ बैठक हुई। बैठक में सूर्यकांत शुक्ला सतीशपाल मुंजनी, किशोर नाथ शाहदेव, डॉ एम तौसीफ, जितेंद्र त्रिवेदी, अख्तर अली और हिमांशु शेखर, प्रशांत पाण्डेय उपस्थित थे। बैठक में 26 मई को होने वाले सरना धर्म कोड लागू करने को लेकर राजभवन रांची के समक्ष होनेवाले धरना प्रदर्शन को सफल बनाने पर चर्चा की गई। बैठक में प्रदेश अध्यक्ष की ओर से कहा गया कि धरना के बाद बिहार क्लब कचहरी चौक में जिलाध्यक्षों और शहरी निकायों के पर्यवेक्षकों की बैठक होगी। बैठक में पार्टी के प्रदेश प्रभारी के राजू उपस्थित रहेंगे। इसके अलावा धरना प्रदर्शन के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए 22 मई को प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में वरिष्ठ महिला नेत्रियों की बैठक बुलाई गई है। इसके बाद दोपहर एक बजे से प्रदेश कार्यालय में ही आदिवासी कांग्रेस के अध्यक्ष और जिला अध्यक्षों के साथ बैठक आहूत की गई है।

मंईयां सम्मान योजना महज दिखावा : सुदेश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : आजसू पार्टी के अध्यक्ष एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो ने कहा है कि हेमन्त सरकार ने मंईयां सम्मान योजना को महिला अपमान योजना बना दिया है। विधानसभा चुनाव के वक्त वोट बटोरने के लिए 56.61 लाख महिलाओं को मंईयां सम्मान योजना के तहत ढाई हजार रुपया दे दिया गया था, लेकिन अब दस्तावेज और नियमों का हवाला देकर पांच लाख महिलाओं का नाम काटा जा रहा है। इससे मातृशक्ति अपमानित महसूस कर रही है। इन महिलाओं के साथ अन्याय क्यों किया जा रहा है? पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में आज पार्टी की महिला प्रकोष्ठ की उत्तर छोटानागपुर प्रमंडलीय बैठक को संबोधित करते हुए महतो ने पार्टी पदाधिकारियों से कहा कि हेमन्त सरकार की बेईमानी का पर्दाफाश जमीनी स्तर पर करें। बैठक को विधायक निर्मल महतो, पूर्व विधायक डॉ लंबोदर महतो, प्रवीण प्रभाकर, संतोष महतो, विजय साहू, बोकारो जिप उपाध्यक्ष बबीता कुमारी, जिप सदस्य खुशबू कुमारी, यशोदा देवी, संगीता बारला आदि ने संबोधित किया। बैठक में उपप्रमुख रिंकी कुमारी, प्रियंका शर्मा, सुहानी एक्का, गीता सिन्हा, संजय मेहता, मंटू महतो, दिलीप दांगी, परमेश्वर महतो, दिलीप दांगी, काशीनाथ सिंह, टिकैत महतो, प्रमिला चौड़े, बबीता देवी, पारस सिंह आदि भी उपस्थित थे। सुदेश महतो ने ग्राम स्तर पर मातृ शक्ति को पार्टी से जोड़ने और जागरुक करने के लिए अभियान चलाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि राज्य में महिला सशक्तिकरण की दिशा में आजसू की अहम भूमिका रही है। पंचायत चुनाव में पचास प्रतिशत महिला भागीदारी तथा स्वयं सहायता समूह के गठन के लिए आजसू ने सरकार में रहकर क्रांतिकारी परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया।

करोड़ों की लागत से बने मोराबादी स्टेज को ध्वस्त करने का कारण बताए सरकार : प्रतुल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने प्रदेश की हेमन्त सोरेन सरकार पर सवाल खड़े किये हैं। रविवार को उन्होंने सवाल किया कि आखिर हेमन्त सरकार ने करोड़ों रुपये की लागत से ऐतिहासिक मोरहाबादी मैदान में बने स्टेज को ध्वस्त करने का निर्णय क्यों लिया। वो भी तब, जबकि इस स्टेज का उपयोग न सिर्फ 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस और 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस के अवसर पर किया जाता था, बल्कि यह अनेक ऐतिहासिक घटनाओं और रैलियां का साक्षी भी रहा है। खुद मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने इसी स्टेज से दो बार शपथ भी लिया है। भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि इस स्टेज से स्थानीय कलाकार भी अपनी प्रस्तुति दिया करते थे। इस बहुउद्देशीय स्टेज को ध्वस्त करने के पीछे हेमंत सरकार की ओर से कोई ठोस कारण नहीं बताना यह स्पष्ट करता है कि यह पूर्ववर्ती भाजपा सरकार के जरिये बनाई गई धरोहरों को मिटाने में लगी है। हेमंत सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि आखिर इस स्टेज को ध्वस्त करने के पीछे किन संगठनों ने मांग उठाई थी। जब इस स्टेज का इतने अच्छे से उपयोग हो रहा था, तो फिर ध्वस्त करने के पीछे का कारण क्या है? प्रवक्ता प्रतुल ने कहा कि हेमन्त सोरेन सरकार साढ़े पांच वर्षों से लगातार सत्ता में थी। उस समय तक स्टेज से कोई परेशानी नहीं थी। फिर अचानक एक दिन इस पूरे स्टेज को ध्वस्त करने का कार्य कैसे प्रारंभ हुआ। क्या यह ध्वस्त करने की चल रही प्रक्रिया एक सोची समझी साजिश का हिस्सा है? उन्होंने कहा कि एक तरफ सरकार के अलग-अलग विभाग फंड की कमी का रोना रोते हैं। मंईयां सम्मान योजना की राशि का भुगतान करने के लिए खाद्य एवं आपूर्ति विभाग, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग जैसे जनता से जुड़े विभागों की राशि को डाइवर्ट कर दिया जाता है। हर दूसरे दिन सरकार का कोई ना कोई मंत्री फंड की कमी का रोना रोता है। दूसरी तरफ बहुउद्देशीय प्रयोग में लाने की सोच से बनी चीजों को सरकार आकरण ध्वस्त करती है। यह तो अबुआ सरकार न होकर बिना ठोस कारण के स्मारकों का विध्वंस करने वाली सरकार बन गई है।

एक नजर

चम्पाई सोरेन की सियासत टिकी है झूठ पर : मुंजनी

रांची : प्रदेश कांग्रेस के मीडिया चेयरमैन सतीश पौल मुंजनी ने कहा है कि भाजपा के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन की सियासत झूठ पर टिकी है। उन्होंने रविवार को कहा कि चंपाई की ओर से जिस तरह आदिवासी महिला से छेड़खानी के एक गंभीर मुद्दे को राजनीतिक रंग देने का प्रयास हुआ और तथाकथित बांग्लादेशी घुसपैठियों की मनगढ़ंत कहानियां सुनाई गई, वह केवल लोगों को गुमराह करने और मूल मुद्दों से ध्यान भटकाने की कोशिश है। मुंजनी ने कहा की आदिवासी महिलाओं की सुरक्षा पर भाजपा दोहरी नीति अपना रही है। भाजपा को यह स्पष्ट करना चाहिए कि जब दिल्ली में आदिवासी महिला के साथ बलात्कार होता है, तब उनके नेताओं की जुबान क्यों सिल जाती है। झारखंड में महिलाओं के हक की बात करने से पहले भाजपा को अपने कर्मों का आईना देखना चाहिए। चंपाई सोरेन को यह भी बताना चाहिए 2021 से 2024 के बीच अनुसूचित जातियों की 47,000 से ज्यादा शिकायतें राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (एनसीएससी) में दर्ज की गई हैं, ये सभी शिकायतें भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार की निगरानी में हैं। सबसे ज्यादा मामले भाजपा शासित राज्यों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और ओडिशा से आए हैं, जिनमें जाति आधारित हिंसा, जमीन पर कब्जा और रोजगार और कल्याणकारी वितरण में घोर भेदभाव की घटनाएं शामिल हैं।

दलमा में इको टूरिज्म कॉटेज और गेस्ट हाउस बनेगा : मंत्री

रांची : झारखंड सरकार ने दलमा वन्य प्राणी आश्रयणी को इको टूरिज्म हब के रूप में विकसित करने की योजना को मूर्त रूप देना शुरू कर दिया है। प्राकृतिक सौंदर्य और जैव विविधता से भरपूर यह क्षेत्र अब पर्यटन के मानचित्र पर एक प्रमुख आकर्षण बनने की ओर अग्रसर है। रविवार को राज्य के पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने दलमा का दौरा किया और वन विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक कर क्षेत्र के विकास की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की। मंत्री ने कहा कि दलमा में पर्यटकों के लिए मल्टीपरपज इको टूरिज्म कॉटेज और आधुनिक सुविधाओं से युक्त गेस्ट हाउस का निर्माण किया जाएगा। इसके साथ ही दलमा की चोटी पर स्थित प्राचीन मंदिरों को भी विकसित किया जाएगा, जिससे धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। वन्य प्राणियों के संरक्षण पर विशेष जोर देते हुए उन्होंने कहा कि हाथियों के पारंपरिक आवागमन मार्ग में कोई बाधा नहीं पहुंचाई जाएगी। बल्कि उनके लिए भोजन और पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश वन विभाग को दिए गए हैं। इससे वन्य जीवन को सुरक्षित रखने में मदद मिलेगी।

झारखंड में बदलेगा सरकारी स्कूलों का सिलेबस

रांची : झारखंड के सरकारी स्कूलों में पढ़ाई का तरीका अब बदलने वाला है। राज्य सरकार ने 2026 से नया पाठ्यक्रम लागू करने की तैयारी शुरू कर दी है। पहले चरण में वर्ष 2026 में कक्षा 1 से 4 तक और फिर 2027 से कक्षा 5 से 8 तक के सिलेबस में बदलाव किया जाएगा। यह बदलाव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत किया जा रहा है। पाठ्यक्रम को स्थानीय संदर्भों से जोड़ते हुए झारखंड के इतिहास, संस्कृति और महापुरुषों को प्रमुखता दी जाएगी। इसमें गुरुजी शिबू सोरेन की जीवनी, उनके आंदोलनों और योगदान को शामिल किया जाएगा। इसके अलावा क्रिकेट में भारत को 2 विश्व कप दिलाने वाले पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी, हॉकी और तीरंदाजी जैसे खेलों में राज्य का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों की जानकारी भी बच्चों को दी जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

रक्षा राज्य मंत्री ने उपराष्ट्रपति से की मुलाकात, जन्मदिन की दी शुभकामनाएं

रांची : उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के 74वें जन्मदिन पर देशभर से शुभकामनाएं मिल रही हैं। देश के रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने भी अपनी पत्नी के साथ रविवार को उपराष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति जगदीप धनखड़ से उनके निवास पर मुलाकात की। इस दौरान सेठ दंपति ने धनखड़ को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। जगदीप धनखड़ का जन्म 18 मई, 1951 को राजस्थान के झुंझुनू जिले के किठाना गांव में हुआ था। उन्होंने 11 अगस्त, 2022 को भारत के 14वें उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली थी। वह रविवार को 74 वर्ष के हो गए। उपराष्ट्रपति होने के नाते वह राज्यसभा के सभापति भी हैं।

आजसू पार्टी के युवा नेता डॉ. निर्मल कुमार मंडल ने पार्टी से दिया इस्तीफा

रांची : झारखंड की राजनीति में रविवार को एक अहम हलचल देखने को मिली जब आजसू पार्टी के केंद्रीय समिति के सदस्य सह युवा आजसू प्रभारी, गोड्डा जिला डॉ. निर्मल कुमार मंडल ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। गोड्डा ज़िले से आने वाले डॉ. मंडल ने पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व को पत्र लिखकर अपने निर्णय की जानकारी दी। पत्र में उन्होंने लिखा है कि वे आजसू पार्टी की राष्ट्रहित वाली कार्यशैली से प्रभावित होकर वर्षों तक सक्रिय रूप से जुड़े रहे। वे निजी कारणों से इस्तीफा दे रहे हैं। डॉ. मंडल ने पत्र में स्पष्ट किया कि मेरे लिए गोड्डा कोनई क्षेत्र में कार्यरत आजसू पार्टी के साथ जुड़कर राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में योगदान देना गौरव की बात रही। लेकिन अब समय आ गया है कि मैं अपने निर्णय को स्पष्ट रूप से सार्वजनिक करूं। वे अपने पत्र में पार्टी की भविष्य की सफलता की कामना करते हुए यह भी लिखते हैं कि मैं पार्टी की उत्तरोत्तर प्रगति और जनकल्याण नीतियों का सम्मान करता हूं। विश्वास है कि आपका नेतृत्व पार्टी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगा। डॉ. निर्मल कुमार मंडल आजसू पार्टी के युवा संगठन से जुड़े एक सक्रिय नेता रहे हैं और गोड्डा ज़िले में उनकी अच्छी पकड़ मानी जाती है। उनके इस्तीफे को पार्टी के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

राधा-कृष्ण मंदिर में अन्नपूर्णा सेवा महाप्रसाद का किया गया आयोजन

रांची : प्रणामी ट्रस्ट की ओर से संचालित पुंदाग में श्री कृष्ण प्रणामी मंगल राधिका सदानंद सेवा धाम में रविवार को 207 वां श्री कृष्ण प्रणामी अन्नपूर्णा सेवा महाप्रसाद का आयोजन किया गया। प्रणामी अन्नपूर्णा भंडारा महाप्रसाद निर्मला गाड़ोदिया, डॉ रमण कुमार, डॉ अनुज के परिवार के सौजन्य से किया गया। अन्नपूर्णा महाप्रसाद का विधिवत भोग मंदिर के पुजारी अरविंद कुमार पांडे ने लगाई। इसके बाद मंदिर परिसर में उपस्थित लगभग 1500 श्रद्धालुओं के बीच महाप्रसाद का वितरण किया गया महाप्रसाद में केसर युक्त खीर, पुड़ी, पलाव, आलु चना का सब्जी,आलू चिप्स का वितरण किया गया। बाद में भजन संध्या के कार्यक्रम में ट्रस्ट के भजन गायक मनीष सोनी और सज्जन पाड़िया ने मनमोहक सुमधुर भजनों की अमृत गंगा का रसपान कराते हुए श्रोताओं को खूब झुमाया। मौके पर एक छोटी बच्ची ने भी मधुर भजन भजन प्रस्तुत की जिसपर भक्त भाव विभोर हो गए। श्री राधा कृष्ण के जयकारा से पूरा वातावरण कृष्णमय बन गया। इसके बाद सामूहिक रूप से महाआरती की गई। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष निर्मल जालान, राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, निर्मल छावनिका, सज्जन पाड़िया, पूरणमल सर्राफ, संजय सर्राफ सहित अन्य मौजूद थे।

खुदरा शराब व्यापार को फिर से आम लोगों के हाथों में सौंपने का निर्णय ऐतिहासिक : सुबोध

रांची : झारखंड शराब व्यापारी संघ के महासचिव सुबोध कुमार जयसवाल ने रविवार को कहा कि राज्य में खुदरा शराब व्यापार को फिर से आम लोगों के हाथों में सौंपने का ऐतिहासिक निर्णय झारखंड सरकार ने लिया है। राज्य सरकार के इस फैसले के लिए उन्होंने वर्तमान झारखंड सरकार के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन और उत्पाद मंत्री योगेन्द्र प्रसाद का आभार जताया है। उन्होंने कहा कि यह निर्णय न केवल शराब व्यापारियों के लिए राहतदायक और समृद्धि देने वाला है, बल्कि इससे राज्य के राजस्व में भी वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से हम व्यापारी कई प्रकार की असुविधाओं और अनिश्चितताओं का सामना कर रहे थे। सरकार के इस कदम से हमें नई ऊर्जा मिली है और हम अपने व्यवसाय को पारदर्शिता एवं जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस नीति से उपभोक्ताओं को जहां बेहतर सेवाएं, सरकार को अधिक राजस्व और व्यापारियों को स्थायित्व मिलेगा, वहीं इससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। जयसवाल चेंबर भवन में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हम सरकार को विश्वास दिलाते हैं कि खुदरा शराब व्यापार को सुचारु और नियमबद्ध तरीके से संचालित करने में संघ हरसंभव सहयोग करेगा। इस अवसर पर चैंबर अध्यक्ष परेश गट्टानी, महासचिव आदित्य मल्होत्रा, रिंकू प्रसाद, बीरेन साहू, उमाशंकर सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

पति की मौत का बदला लेने के लिए पत्नी ने रची थी साजिश, 3 लाख में कराई हत्या

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : जिले के नावाडीह थाना क्षेत्र में 14 मई की रात वारीडीह जंगल में केटा कार में एक व्यक्ति की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

72 घंटे के भीतर पुलिस की SIT टीम ने हत्या की गुत्थी सुलझा दी और 4 अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के मुताबिक, यह हत्या साजिशन करवाई गई थी। आरोपी महिला चंपा देवी ने अपने पति की मौत का बदला लेने के लिए 3 लाख रुपये में धनबाद के शूटर को सुपारी दी थी। मृतक हेमलाल पंडित पर शक था कि उसने ओझा-गुनी के जरिए उसके पति को जहरीला खाना खिलाया था। इसी संदेह में हत्या की साजिश रची गई। 13 मई को हत्या की कोशिश नाकाम रही, लेकिन 15 मई को चंपा देवी के साथियों ने उसे बहला-फुसलाकर जंगल में ले जाकर गोली मार दी।

गिरफ्तारी और बरामदगी

गिरफ्तार अभियुक्तों में चंपा देवी, प्रकाश सिंह, डोमन राम और विकास कुमार शामिल हैं। पुलिस ने एक पिस्टल, कट्टा, 5 राउंड गोली, 4 मोबाइल और एक स्कूटी भी बरामद की है। शेष अभियुक्तों की तलाश जारी है। बोकारो पुलिस की त्वरित कार्रवाई ने इस हत्या की साजिश को बेनकाब कर दिया है, और रक्ळ टीम की तलाश अब फरार अपराधियों पर टिकी है।

एक नजर

चड़क पूजा व भोगता मेला का हुआ आयोजन

बोकारो : सियालजोरी पंचायत के तेतुलिया गांव स्थित सार्वजनिक शिवमंदिर में चार दिवसीय चड़क पूजा व भोगता मेला रविवार को विधिवत पुजा अर्चना के साथ संपन्न हो गया। 15 मई को शुरू हुआ था। 15 को फलाहार के साथ आयोजन शुरू हुआ था। 16 को रॉयल छऊ नृत्य अकादमी तरुण संघ डांस सोसाइटी सारामपुर व नेपाल महतो छऊ नृत्य आराधना रायगढ़ पुरुलिया द्वारा छौव नृत्य की प्रस्तुति की। 17 को भोगता मेला व अलकाप 18 को अलकाप व बासी मेला का आयोजन के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर उपवास के दिन 16 म ई को धनबाद के सांसद ढुलु महतो व पुर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी,भाजपा जिला अध्यक्ष जयदेव राय शिव मंदिर पहुँच कर पुजा अर्चना किया तथा क्षेत्र के जनता का सुख समृद्धि शांति व विकास केलिए कामना किया। प्रसाद का वितरण किया गया।

देवग्राम मे कलश यात्रा के साथ महायज्ञ शुरू

बोकारो : पंचायत देवग्राम के गाँव देवग्राम में सोलह आना कमिटी की ओर से आयोजित पांच दिवसीय श्री श्री 1008 विष्णु महायज्ञ अनुष्ठान भव्य कलश यात्रा के साथ रविवार को प्रारंभ हो गया। प्रात गाजे बाजे के साथ के साथ निकली कलश यात्रा नवाडीह, अमलाबाद, बाउरीडीह होते दामोदर नदी के काली घाट पहुंची। जहां बनारस से पहुंचे यज्ञाचार्य सुभाष पांडेय ने पूरे विधि विधान के साथ गंगा पूजन, देव देवी की आह्वान समेत सॉरी विधि संपन्न कराया । 351 महिलाएं व कन्याओं ने कलश में जल भरकर विभिन्न क्षेत्र का भ्रमण करते पुन ग्राम देवता स्थान परिसर स्थित यज्ञ मंडप पहुंचे । कलश स्थापना के साथ अनुष्ठान प्रारंभ हो गया । यात्रा में हजारों श्रद्धालु शामिल थे। इनके देव देवियों की जयकारे से गांव भक्तिमय हो गया। मंडप व बेदी पूजन के साथ यज्ञ का प्रारंभ हो गया। संध्या महाआरती में भक्तों की भीड रही। महाप्रसाद का भी वितरण किया गया। भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। 19 से 21 तक प्रत्येक रात्रि प्रवचनकर्ता हरिप्रिया अधिकारी जी श्रोताओं को भागवत कथा श्रवण कराएंगी । इस दौरान जिप सदस्य अंबिका देवी भी यज्ञ मंडप पहुंचे, माथा टेकी और क्षेत्र का खुशहाली का कामना की। आयोजन को लेकर यज्ञ संचालक कमेटी देवग्राम व ग्रामीण जुटे हुए हैं।

परिवार फाउंडेशन ने जेबीएल नाईट क्रिकेट टूर्नामेंट का किया आयोजन

बोकारो : चास के अंसारी मोहल्ला सुल्तान मैदान में परिवार फाउंडेशन के तत्वावधान में नाइट क्रिकेट टूनार्मेंट का आयोजन किया गया। टूनार्मेंट में 16 टीमों ने भाग लिया, जिसका फाइनल मैच यारियां 11 व अंसार नगर 11के बीच खेला गया। फाइनल मैच का उद्घाटन कांग्रेस नेता मुहम्मद सुल्तान व स्वर्णलिका ज्वेलर्स के शेखर रस्तोगी के द्वारा किया गया। फाइनल मैच के बतौर मुख्य अतिथि डुमरी विधायक जय राम महतो का भी आगम हुआ उन्होंने ने कहा कि क्रिकेट दुनिया का सबसे रोमांचक खेल बन गया है। कहा कि खेल में मेहनत और लगन हो तो खिलाड़ियों को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता है। इसलिए खिलाड़ियों को आगे बढ़ने की ललक होनी चाहिए। इस दौरान अंसार नगर 11 की टीम टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 8 ओवर में 49 रन बना कर आउट हो गयी जवाबी पारी खेलने उतरी यारियां 11 की टीम 6 ओवर में ही 50 रन बना ली इस तरह यारियां 11 की टीम को विजयी घोषित किया गय विजेता टीम को 25000/- व उपविजेता टीम को 11000/- अतिथियों के द्वारा सम्मानित किया गया। मेन ऑफ द सीरीज अभिषेक शर्मा ने अपने नाम किया।

पानी के लिए तरस रहे हैं ओरदाना पंचायत के हरिजन टोला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : पेटरवार प्रखंड अंतर्गत ओरदाना पंचायत के हरिजन करमाली टोला में चापाकल खराब होने के कारण लोग पानी के लिए परेशान हो रहें है। इससे यहां की लगभग एक सौ से अधिक घरों में पेयजल संकट छा गई है । यहां के लोगों ने बार-बार मांग उठायी, लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ। घासी टोला की जमुनिया देवी ने बताई कि हमलोगों को एक किलोमीटर की दुरी से पानी लाना पड़ रहा है। दूसरे के कुआं से सिर्फ पानी पीने के लिए मिलता है। वे लोग भी मना करते हैं कि हमारे कुआं में भी पानी सूख रहा है। कई दिनों से हम लोग पानी के चलते नहा नहीं पाते हैं। लोगों ने कहा कि तेनुघाट से घर-घर पानी देने का वादा किया था। लेकिन पानी नहीं मिल रहा है पानी का पैसा जलसहिया हर महीना ?62 हम लोगों से लेती है लेकिन पानी नहीं मिलता है हम लोग वार्ड, मुखिया, पेयजल विभाग को समस्या से अवगत कराया लेकिन अभी तक किसी तरह का कोई कार्रवाई नहीं हुई। जमुनिया देवी ने कहीं की अगर पानी की समस्या का समाधान नहीं होता है तो हम लोग ओरदाना चौक के पास तेनुघाट रोड को जाम कर देंगे। अशोक घासी ने बताया कि सरकार के द्वारा शिक्षा स्वास्थ्य और पानी के ऊपर पानी की तरह पैसा बहाया जा रहा है फिर भी लोग पानी से वंचित रह जा रहे हैं। ओरदाना पंचायत के घासी टोला में कई वर्षों से चापाकल खराब होने के चलते हम लोग पानी के एक एक बूंद के लिए तरस रहे हैं।

बोकारो में कबड्डी समर कैंप का हुआ आयोजन, 55 बच्चों ने लिया भाग

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बोकारो के सेक्टर 9 सी क्लब पटेल चौक बोकारो जिला कबड्डी एसोसिएशन की ओर से आज कबड्डी मैदान में समर कैंप का आयोजन किया गया। यह समर कैंप लगभग 20 दिनों तक चलेगी। इस समर कैंप की शुरूआत भाजपा नेता सह बेहतर झारखंड के संस्थापक विवेक सिंह द्वारा कब्बड्डी मैदान में स्तिथ हनुमान मंदि मंदिर परिसर में पूजा एवं नारियल छोड़कर इस कार्यक्रम का शुरूआत की गई भाजपा नेता विवेक सिंह ने कहा कि खेल हमारे जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है यह हमलोगों को शिष्टाचार में रहने का पाठ सीखता है उन्होंने कबड्डी संघ को धन्यवाद दिया और कहा कि जिस तरह से कबड्डी खेल से बच्चों में संस्कार भरे जा रहे हैं और निरंतर प्रतिवर्ष या कबड्डी बोकारो में एक अपना मुकाम हासिल करते हुए निरंतर आगे बढ़ रहा है इसके लिए उन्होंने कोच एवं बोकारो जिला कब्बड्डी संघ के सचिव मनोज कुमार शर्मा को धन्यवाद दिया और कहा कि इसी तरह इस निरंतर अपने कार्य में आगे बढ़ते रहे। इस बार समर कैंप में कुल 55 बच्चों ने भाग लिया। जिसमे 35 लड़के और 20 लड़कियों ने भाग लिया। यह समर कैंप 18 /05/2025 से 8/06/2025 तक चलेगा। इस मौक पर विवेक सिंह, भाजपा नेता संस्थापक बेहतर झारखंड, विनोद कुमार, भाजपा युवा बोकारो जिला अध्यक्ष, कौशल किशोर, समाज सेवी, अजीत कुमार, गौरांग पातर, , कृष्णा मालाकार, मंजीत सिंह, सुनीता शर्मा, मनोज कुमार शर्मा बोकारो जिला कब्बड्डी संघ सचिव इत्यादि लोग मौजूद रहे।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए तिरंगा यात्रा के साथ मनाया देशभक्ति का उत्सव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : पूर्व सैनिक सेवा परिषद, बोकारो ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता एवम अपने सैनिकों के साथ देशवासियों की एकजुटता को दिखाते हुए, उनका मनोबल बढ़ाने के लिए रविवार दिनांक 18 मई को तिरंगा यात्रा का आयोजन किया। इस यात्रा को सेक्टर 4 स्थित सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी जी की मूर्ति के सामने से बोकारो के सी जी एम टी ए श्री कुंदन कुमार जी ने तिरंगा लेकर साथ चलते हुए आरंभ किया और वीरता की प्रतिमूर्ति बिरसा मुंडा, जिन्होने जाती और धर्म से उपर उठकर देश के लिए अपना सर्वोच बलिदान दिया, भगवान बिरसा के मूर्ति के सामने समाप्त किया। इस यात्रा में पूर्व सैनिकों के अतिरिक्त समाज के विभिन्न संगठनों जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, महाराणा विचार मंच, संकल्प सृजन, युवा मोर्चा, भाजपा, विभिन्न एन जी ओ के सदस्यों सहित सैकड़ों बोकारो वासियों की सहभागिता रही। परिषद के वयोबृद्ध सदस्य एस के सिंह जी एवम् पूर्व प्रान्तीय उपाध्यक्ष दिनेश्वर सिंह ने इस यात्रा की जरूरत पर अपना मंतव्य रखते हुए कहा कि सरहद पर खडे सैनिकों का मनोबल हमारी ऐसी दृढता से और मजबूत होता है। उनका पाराक्रम इस ऑपरेशन में दीखा भी। कहते हैं कि मशीन नही, मशीन के पीछे खडा मनुष्य ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। हमारे सैनिकों ने मैक्सिमम यूटीलाइजेशन के तहत, बिना सीमा पार किए ही शत प्रतिशत टारगेट को हीट किया। और उस जगह तक जाकर हीट किया जिसका अंदाजा भी दुश्मन नहीं लगा सका। पूर्व सैनिक राकेश मिश्रा के नेतृत्व में अनेकों पूर्व सैनिकों के साथ साथ बोकारो के कई युवा, वृद्ध और बच्चे शामिल हुए । जिनमे मुख्य रूप से विवेक सिंह संस्थापक बेहतर झारखंड पूर्व सैनिक सुरेश बाबू, मनोज झा, शत्रुघन सिंह, संजीव कुमार, राजीव रंजन सिन्हा, विनय कुमार, अमित कुमार सिन्हा, परमहंस सिंह, प्रदीप कुमार, राजकुमार सिंह, मनोज पांडे, शशि भूषण मिश्रा, अन्य मौजूद लोगों में शामिल रहे अशोक कुमार वर्मा, मोहनन नायर, कौशल किशोर, प्रशांत कुमार, विवेक सिंह, संजीव कुमार, राजेश दुबे, अजीत पांडे, नीरज कुमार, अर्चना शर्मा, सीमा सिंह, रामू कुशवाहा, उदय कुमार सिंह, नागेंद्र पुरी, और सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद रहे ।

भाजपा ने कतरास में निकला तिरंगा यात्रा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : भारतीय सैनिकों के शौर्य प्रदर्शन व भारत द्वारा पाकिस्तान को धूल चटाने वाले सैनिकों के मनोबल के लिये कतरास में पेट्रोल पम्प से भाजपा के अगुवाईके तिरंगा यात्रा निकाली गयो जिसमे सभी संगठन के लोग मौजूद थे,सभी लोग भारत माता की जय,भारतीय सैनिक जिंदाबाद, पाकिस्तान मुदार्बाद कि नारे लगा रहे थे,तिरंगा यात्रा कतरास थाना चौक ,रानी सती मंदिर, मस्जिद पट्टी चौक होते हुये नदी किनारे सूर्य मंदिर प्रांगण में आम जनता को संबोधित करते हुये धनबाद सांसद ढुलू महतो ने कहा कि भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तान के करार करारा जबाब देते हुये दुश्मन के सभी हमलों को आकाश में ध्वस्त करने का कार्य किया,बाघमारा विधायक शरद महतो ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे देश के सभी सैनिकों ने दुश्मन के दाँत खट्टे करके अपनी शौर्य को प्रदर्शन किया जिसकी जितनी प्रशंशा की जाय कम होगी। तिरंगा यात्रा में कतरास के कई सामाजिक संगठनों, स्थानीय नागरिकों और विभिन्न राजनीतिक दलों के कार्यकताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। तिरंगा यात्रा के दौरान रानी सती मंदिर समिति द्वारा पुष्प वर्षा कर लोगो के हौशला अफजाई की। मौके पर भारतीय सेना के 6 सेवानिर्वित जवान के अलावे महेश पासवान, तत्कालीन पार्षद राजेन्द्र प्रसाद,किशोरी गुप्ता, बशिष्ठ चौहान, आनंद यादव, सूर्यदेव मिश्रा, प्रिंस शर्मा, श्रीकांत सिंह, चुन्ना यादव, खुशवंत कुमार, दिनेश उपाध्याय, प्रभास वर्मा, फिरोज रजा, श्याम किशोर कल्लू, रविन्द्र विजय, दीपक अग्रवाल, मुकेश झा सहित अन्य लोग शामिल थे।

सभी ब्लॉक में विधिक सशक्तिकरण शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार वीरेन्द्र कुमार तिवारी के निर्देश पर एक दिवसीय विधिक सशक्तिकरण सह जागरूकता शिविर का आयोजन रविवार को जिले के सभी प्रखंडों में किया गया। निरसा प्रखंड कार्यालय में आयोजित मेगा एंपावरमेंट कैंप में लोगों को संबोधित करते हुए अनुमंडल न्यायिक दंडाधिकारी अभिजित पांडे ने कहा कि जिला विधिक सेवा प्राधिकार प्रशासनिक निष्क्रियता के प्रतिहित प्रहरी के रूप में कार्य करती है।सरकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों तक सुगमता से पहुंचाई जा सके इस शिविर का मुख्य उद्देश्य है। पूर्वी टुंडी में आयोजित शिविर में संबोधित करते हुए प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी ऋषि कुमार ने कहा कि ने कहा कि दूर - सुदूर ग्रामीण इलाकों में रह रहे आम जनता त्वरित न्याय कैसे प्राप्त करें इस पर लोगों को जागरूक करने के लिए डालसा इस तरह के जागरुकता कार्यक्रम करता रहा है।लीगल एड डिफेंस कांउसिल सिस्टम के डिप्टी चीफ अजय कुमार भट्ट ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि विधिक जागरूकता शिविर के माध्यम से धनबाद जिले के सभी गांव तक डालसा द्वारा गठित टीम के माध्यम से पहुंचने का लक्ष्य है,जिससे कि जिले के दूर-सुदूर इलाकों में रह रहे ग्रामीण जनता तक सुलभ एवं त्वरित न्याय प्रक्रिया को पहुंचाया जा सके। वहीं मीडिया से बातचीत करते हुए अवर न्यायाधीश डालसा के सचिव मयंक तुषार टोपनो ने कहा कि जिले के सभी 10 प्रखंडों गोविंदपुर, निरसा, धनबाद प्रखंड कार्यालय ,कलियासोल ,इग्यार कुंड ,बाघमारा ,बलियापुर टुंडी पूर्वी, टुंडी, तोपचांची प्रखंड कार्यालय में मेगा लीगल एंपावरमेंट कैंप का आयोजन हुआ जिसमें प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश बीरेन्द्र कुमार तिवारी के निर्देश पर अनुमंडल न्यायिक दंडाधिकारी अभिजीत पांडे, प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी विवेक राज, ऋषि कुमार, ऐश्वर्या श्रीवास्तव, अनामिका कच्छप ,सुरेश उरांव, शिवानी शर्मा अपेक्षा, साकिया कौसर ,सृष्टि घई समेत लीगल ऐड डिफेंस काउंसिल सिस्टम के चीफ कुमार विमलेंदु, डिप्टी चीफ अजय कुमार भट्ट, सहायक कांउसिल कन्हैया लाल ठाकुर, नीरज गोयल, सुमन पाठक, शैलेन्द्र झा ,नीरज गोयल , मुस्कान चोपड़ा समेत सभी विभागों के पदाधिकारी डालसा के पैनल के अधिवक्ता और लाभुक शामिल हुए। धनबाद प्रखंड कार्यालय में प्रभारी प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचल अधिकारी, न्यायिक पदाधिकारी द्वारा विधिक सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें जिला विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा चलाई जा रही निशुल्क विधिक सहायता के बारे में बताया गया एवं सरकार द्वारा चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ शिविर के माध्यम से लोगों को दिया गया। उन्होंने बताया कि रविवार को विभिन्न ब्लॉकों में अवर न्यायाधीश, अंचलाधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी, विभिन्न थाना के थाना प्रभारियों के नेतृत्व में ऑन स्पोर्ट 39 हजार 987 लाभुकों के बीच 3 करोड 54 लाख 74 हजार 730 रूपए की परिसंपत्तियों का वितरण किया गया। शिविर में दिव्यांगों को व्हीलचेयर, लाभुकों को पीएम आवास योजना, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, दिव्यांग केसीसी लोन, जेएसएलपीएस के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए चेक का वितरण किया गया।

संक्षिप्त खबरें

सेन्टरींग प्लांट के मजदूरों ने थामा जय झारखंड मजदूर समाज का हाथ : बिके चौधरी

बोकारो : सेन्टरींग प्लांट मे काम कर रहे दर्जनो इस्पातकर्मी एवं ठेकाकमीर्यो ने बिभाग के इन्जीनियर इन्चार्य और ठेकेदार गठजोड से हो रहे आर्थिक और मानसिक शोषण के खिलाफ जय झारखंड मजदूर समाज मे बिस्वास रखते हुए युनियन का सदस्यता ग्रहण किया ।मजदूरों ने युनियन के महामंत्री बि के चौधरी को अपनी ब्यथा सुनाते हुए कहा कि हमलोग बर्षो से सेन्टरींग प्लांट के मेकेनिकल, ईलेक्ट्रीकल एवं आपरेशन मे काम करते आ रहे हैं और उसी समय से बेतन के हिसाब से पैसा वापस लेने का शिलशिला चलता आ रहा है लेकिन अब जैसे जैसे मजदूरी बढ़ता गया वैसे वैसे पैसा वापसी का दायरा भी बढ़ता गया और आज जब य एस डब्लू को लगभग 14000/= मिल रहा है तो उसमे से कम से कम 5000/= से 6000/= तथा एस डब्लू को मिलने बाला लगभग 22000/= मे से 10000/= से 11000/= यानी आधा बेतन वापस ले रहा है नही देने पर गेट पास रोक देने का धमकी दिया जाता है अलग से गाली गलोज के साथ साथ मारने पीटने का धमकी अलग से । मरता क्या नही करता बचने के लिए सोचकर हमलोगों ने जय झारखंड मजदूर समाज के शरण मे आये है जो बिभिन्न बिभागों मे सेकडो मजदूरों को आर्थिक और मानसिक शोषण से मुक्त करबाया है। दुसरे तरफ मास्टर रोल के अनुसार से काफी कम बैंक खाता मे पैसा जा रहा है । हमलोगों ने अनेको बार अधिकारीयों को अपनी बेदना से अवगत कराया लेकिन राहत मिलने के जगह ठेकेदार द्वारा प्रताड़ित बढ़ जाता है । मजदूरों के सुनने के बाद युनियन के महामंत्री बि के चौधरी ने मजदूरों को आश्वासन देते हुए कहा कि उच्च प्रबंधन मजदूरों के बेदना से भलि भांती परिचित है जिसे दूर करने के लिए अनेको सकारात्मक कदम उठाया जा रहा है। निश्चित रूप से आपलोगों का भी हमारी युनियन आर्थिक और मानसिक शोषण से मुक्त करने के लिए सेन्टरींग प्लांट के उच्च पदाधिकारीगण से बा करेगा और अगर समाधान मे कंजूसी किया गया तो आपलोगों को आन्दोलन के लिए भी तैयार रहना पड़ेगा ।

क्वार्टर क्षतिग्रस्त घोषित करने के विरोध में आवासधारियों की हुई बैठक

बोकारो : आवास बचाओ संघर्ष समिति के बैनर चले आज बोकारो के सेक्टर 12 बी में बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान बोकारो स्टील प्लांट द्वारा सेक्टर 12 के 161ब्लॉक के क्वार्टर को क्षतिग्रस्त कर तोड़े जाने के निर्णय का विरोध किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए मनोज सिंह ने ने कहा कि बोकारो स्टील प्लांट के कर्मचारी लिस्ट धड़क जो वर्षों से इन क्वार्टरों में रह रहे हैं उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। जिसको ध्यान में रखते हुए सेल प्रबंधन को अपने इस निर्णय को वापस लेना होगा। उन्होंने बताया कि धनबाद के सांसद ढुलू महतो इस लड़ाई में सभी के साथ हैं। तथा सेल प्रबंधन के साथ वार्ता जारी है। एनबीसीसी के गलत सर्वे के कारण यह स्थिति हुई है। उन्होंने बताया कि आवास थोड़े जाने से सभी कर्मचारियों तथा लीज धारकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा लोगों का आधार कार्ड,वोटर कार्ड से लेकर के सभी प्रकार की परिवर्तन करना पड़ेगा। जिससे बहुत ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

मंडलकारा चास में डालसा ने आयोजित किया विधिक जागरूकता शिविर

बोकारो : माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार बोकारो अनिल कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन में आज मंडलकारा चास में एक जेल अदालत सह विधिक जागरूकता शिविर एवं स्वास्थ्य जांच चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। चास जेल में आयोजित इस जेल अदालत में जिसके सदस्य मनोरंजन कुमार न0-, सीजेएम बोकारो एवं डिप्टी चीफ एलएडीसी पम्मी कुमारी थे। साथ ही मंडल कारा चास में स्वास्थ्य जांच चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें जेल में कुल 284 कैदियों की स्वास्थ्य जांच किया गया एवं मेडिसिन उपलब्ध कराया गया, जिसमें 278 पुरुष एवं 06 महिला थे। साथ ही मंडल कारा चास में एक विधिक जागरूकता कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमें जेलर निखिल कांत एवं अन्य वक्ताओं द्वारा चास जेल के कैदियों को कानूनी जानकारी दी गई। कैदियों को डालसा अंतर्गत दी जाने वाली विभिन्न विधिक सहायता और कैदियों के प्राप्त अधिकारों के बारे में विस्तृत जानकारी देकर उन्हें जागरूक किया।

पॉल हैरिस ऑडिटोरियम में तीसरे सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण शिविर का सफल आयोजन

बोकारो : स्टील सिटी में आज समाज के सर्वांगीण विकास में महिलाओं की भूमिका को सशक्त बनाते हुए तथा उनके स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए रोटरी क्लब ऑफ बोकारो स्टील सिटी ने आज अपने क्लब परिसर स्थित पॉल हैरिस ऑडिटोरियम में तीसरे सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण शिविर का सफल आयोजन किया। यह शिविर सुबह 10 :00 बजे आरंभ होकर दोपहर 1:00 बजे तक चला, जिसमें कुल 51 किशोरी बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर से बचाव हेतु एचपीवी वैक्सीन की पहली डोज प्रदान की गई। यह शिविर क्लब द्वारा संचालित उस स्वास्थ्य सेवा श्रृंखला का हिस्सा है, जिसकी परिकल्पना रोटेरियन अध्यक्ष महेश कुमार गुप्ता ने महिला स्वास्थ्य की सुरक्षा को केंद्र में रखते हुए की है। यह अभियान एक ओर जहां रोग-प्रतिरोधक जागरूकता को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर समाज में नारी सम्मान और स्वास्थ्य संरक्षण की भावना को भी मजबूती प्रदान करता है। शिविर की चिकित्सा जिम्मेदारी रोटेरियन डॉ. एस. सी. मुंशी और उनकी विशेषज्ञ टीम ने पूरी निष्ठा और दक्षता के साथ निभाई। इस पूरे कार्यक्रम में शिविर प्रमुख रोटेरियन प्रदीप नारायण की भूमिका विशेष रूप से सराहनीय रही।

एक नजर

संजीव के घर के चोरी मामले में कई लोगों से पुलिस कर रही पूछताछ

साहिबगंज: तीनपहाड़ थाना क्षेत्र के बाकुडी के एक घर में हुई चोरी के मामले पुलिस ने आधा दर्जन से ज्यादा लोगों को पूछताछ के लिए थाना लाई। जानकारी के अनुसार बीते 12 मई 2025 की रात्रि बाकुडी के संजीव कुमार गुप्ता के बंद पड़े मकान का ताला तोड़कर अज्ञात चोरों द्वारा घर में रखे 100 चांदी के सिक्के, तीन चांदी के प्लेट, चार चांदी का कटोरा, 25 हजार रुपए और घर के जमीन का दस्तावेज चोरी कर ली गई थी। इसको लेकर मकान मालिक ने तीनपहाड़ थाना में आवेदन देकर अज्ञात चोरों पर केस दर्ज कराया था। इसको लेकर मकान मालिक ने तीनपहाड़ थाना में आवेदन देकर अज्ञात चोरों पर केस दर्ज कराया था। वहीं इस मामले में तीनपहाड़ पुलिस ने बाकुडी व आसपास के इलाकों में बीते रात्रि छापेमारी कर लगभग 7 से 8 लोगों को पूछताछ के लिए थाना लाई है। हालांकि थाना पुलिस इस मामले में कुछ भी जानकारी देने से इनकार कर रही है।

रेल थाना ने एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर भेजा जेल

साहिबगंज: रेल थाना अंतर्गत फरार चल रहे एक अभियुक्त को रेल थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा न्यायिक हिरासत। मिली जानकारी के अनुसार साहिबगंज रेल थाना कांड संख्या 03/23, जि० आर० नं० 06/23 एवं डी० बी० नं० 17, दिनांक 31 जनवरी 2025 को न्यायालय द्वारा निर्गत एन/बी वारंटी अभियुक्त रोहित कुमार साव, पिता टिंकू साव, साकिन अलीगंज गंगटी, थाना बबरगंज, जिला भागलपुर को विधिवत गिरफ्तार कर कानूनी प्रक्रिया करने के उपरांत अभियुक्त को शारीरिक जांच करने के बाद रेल थाना पुलिस ने न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

जहरीले सांप काटने से महिला हुई मूर्छित

साहिबगंज: जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत एक विवाहित महिला को सांप काटने से मूर्छित हो गई। मिली जानकारी के अनुसार चानन के निवासी कृष्णा मंडल की 18 वर्षीय पत्नी गौरी देवी को उनके ही घर में दिन के 1:00 बजे के लगभग किसी जहरीले सांप के काट लेने से वह मूर्छित हो गई। परिजनों ने इलाज के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज लाया। जहां ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर प्रभात मलिक ने उक्त महिला का इलाज में तुरंत लग हैं। इलाज करने के उपरांत महिला की हालत में सुधार है।

मोबाइल चोरी मामले में जयपुर पुलिस पहुंची तीनपहाड़

साहिबगंज: तीनपहाड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत मोबाइल चोरी के मामले में राजस्थान के जयपुर जीआरपी रेल थाना पुलिस पहुंची तीनपहाड़। जहां तीनपहाड़ थाना पुलिस की मदद से थाना क्षेत्र के बाबूपुर निवासी राहुल कुमार का न्यालय द्वारा निर्गत वारंट तामिला किया गया। इस संदर्भ में जयपुर जीआरपी रेल पुलिस के हेड कांस्टेबल राम स्वरूप ने बताया कि जयपुर जीआरपी थाने में मोबाइल चोरी मामले में केस दर्ज हुआ था, इस मामले में वारंट तामिला किया गया।

कब्र से निकाला गया नवजात का शव

सरायकेला: सरायकेला-खरसावां जिले के आदित्यपुर थाना क्षेत्र के राम मड़ैया बस्ती में रेलवे ब्रिज के नीचे दफनाए गए नवजात के शव को पुलिस ने रविवार को कब्र से निकाल कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया । इसके लिए मजिस्ट्रेट और पुलिस बल को अलग से तैनात किया गया था। दरअसल, शनिवार को राम मड़ैया बस्ती में एक नवजात शिशु का शव बरामद हुआ था। इसे स्थानीय लोगों ने राम मड़ैया स्थित रेलवे ब्रिज के नीचे दफना दिया था। इस घटना का खुलसा होने के बाद नवजात के शव को रविवार को पुलिस ने मजिस्ट्रेट की निगरानी में कब्र से बाहर निकाला और आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

दलमा में इको टूरिज्म कॉटेज और गेस्ट हाउस बनेगा : मंत्री

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पूर्वी सिंहभूम : झारखंड सरकार ने दलमा वन्य प्राणी आश्रयणी को इको टूरिज्म हब के रूप में विकसित करने की योजना को मूर्त रूप देना शुरू कर दिया है। प्राकृतिक सौंदर्य और जैव विविधता से भरपूर यह क्षेत्र अब पर्यटन के मानचित्र पर एक प्रमुख आकर्षण बनने की ओर अग्रसर है। रविवार को राज्य के पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने दलमा का दौरा किया और वन विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक कर क्षेत्र के विकास की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की। मंत्री ने कहा कि दलमा में पर्यटकों के लिए मल्टीपरपज इको टूरिज्म कॉटेज और आधुनिक सुविधाओं से युक्त गेस्ट हाउस का निर्माण किया जाएगा। इसके साथ ही दलमा की चोटी पर स्थित प्राचीन मंदिरों को भी विकसित किया जाएगा, जिससे धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। वन्य प्राणियों के संरक्षण पर विशेष जोर देते हुए उन्होंने कहा कि हाथियों के पारंपरिक आवागमन मार्ग में कोई बाधा नहीं पहुंचाई जाएगी। बल्कि उनके लिए भोजन और पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश वन विभाग को दिए गए हैं। इससे वन्य जीवन को सुरक्षित रखने में मदद मिलेगी। पर्यटन मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे विस्तृत कार्य योजना तैयार कर जल्द से जल्द सरकार को रिपोर्ट सौंपें, ताकि योजनाओं को अमलीजामा पहनाया जा सके। इस अवसर पर जुगसलाई विधायक मंगल कालिंदी समेत कई पूर्वी सिंहभूम जिला के एस एस पी कौशल किशोर,ग्रामीण एसपी, एसडीओ शताब्दी मजूमदार और सरायकेला के पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित थे।

एसपी ने की मासिक अपराध नियंत्रण गोष्ठी, दिए कई निर्देश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : पुलिस लाइन स्थित पुलिस अधीक्षक कार्यालय कक्ष में रविवार को मासिक अपराध नियत्रंण गोष्ठी आयोजित हुई। इसकी अध्यक्षता पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह ने की। मासिक अपराध नियंत्रण गोष्ठी में एसपी ने थाना प्रभारियों को संबोधित करते हुए अपराध नियंत्रण सम्बंधी टिप्स दिए। उन्होंने कहा कि अपराध नियंत्रण के लिए पुलिस को पूरी तरह सतर्क रहने की जरूरत है। जहां किसी भी हाल में कोताही नहीं बरतें। जहां बैकअप प्लान तैयार करने, नशा उत्पादों पर रोक लगाने, मोटरसाइकिल की चोरी व घरों में चोरी पर रोक लगाने का विशेष निर्देश दिया। कहा कि रात्रि गश्ती पर विशेष फोकस करें और गश्ती के दौरान संदिग्ध लोगों की जांच करें। चौक, चैराहों व सन्नाटों में बेवजह खड़े लोगों से पूछताछ करें। हर गली मोहल्लों में पेट्रोलिंग करें। हत्याकांड, चोरी और अन्य अपराधिक मामले की घटना में संलिप्त पूर्व में रहे लोगों का डाटा तैयार कर उस पर नजर बनाए रखें। उन्होंने थाना में लंबित कांडों की समीक्षा करते हुए जल्द से जल्द निष्पादन करने का निर्देश दिया। एसपी ने लाल वारंटियों को गिरफ्तार करने, सुचारू रूप से वाहन जांच अभियान चलाने, अवैध लॉटरी, जुआ के अड्डे व गांजा जैसे अवैध कारोबार पर नकल कसने का निर्देश दिया। उन्होंने जेल से छूटने वाले लोगों को चिन्हित कर उन पर पैनी नजर बनाए रखने का निर्देश दिया। वहीं साथ ही लोगों से बेहतर तालमेल बनाने, थानों में उनकी समस्या सुनने, सूचना तंत्र को मजबूत बनाने, थाना दिवस में जमीनी विवाद पर त्वरित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। वहीं मौके पर सदर डीएसपी किशोर कुमार कुशवाहा, सदर एसडीपीओ किशोर तिर्की, बरहरवा एसडीपीओ नितिन खंडेलवाल, राजमहल एसडीपीओ विमलेश कुमार त्रिपाठी, राधानगर थाना प्रभारी अमर कुमार मिंज, मिजाचौकी थाना प्रभारी रुपेश कुमार यादव, सहित जिले के अन्य थाना प्रभारी मौजूद थे।

आजिविका समूह के मदद से तकनीकी खेती कर आत्मनिर्भर बन रही कोनिका दीदी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़/महेशपुर: ज़िले के महेशपुर प्रखण्ड स्थित सीतारामपुर गांव की कोनिका कोड़ाइन ने सागेन साकाम आजीविका सखी मंडल से जुड़कर अपने सपनों को साकार कर रही है। ज्ञात हो कि कोनिका दीदी 2021 में सखी मंडल से जुड़ी और 10- 10 रुपए करके प्रत्येक सप्ताह बचत कर समूह में आगे बढ़ी। झारखण्ड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी अंतर्गत संचालित जापान इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन एजेंसी (खक्ळअ) परियोजना से जुड़कर सूक्ष्म टपक सिंचाई यंत्र, बर्मी कंपोस्ट यूनिट और पॉली नर्सरी हाउस प्राप्त की। इनके आगे बढ़ने की ललक देखकर इन्हें रांची में सूक्ष्म टपक सिंचाई के माध्यम से प्रगतिशील किसानों के द्वारा किए जा रहे तकनीकी खेती का एक्सपोजर विजिट सह फील्ड प्रशिक्षण प्राप्त करने का मौका मिला और वहां से मार्गदर्शन प्राप्त कर अपने 25 डिसमिल जमीन में कलश ऋ किस्म का तरबूज और ऊ्रइ 1506 किस्म का खीरा की खेती की जिसकी लागत अबतक 12000 रु हुआ है जिसमें से दीदी ने 8 क्विंटल खीरा 40 रु प्रति ॅ के दर से और तरबूज 9.5 क्विंटल 20 रु प्रति' के दर से बेच कर कुल 51,000 रु की आमदनी कर चुकी है। अभी फसल के अंत तक और कुल 30,000 रूपए आमदनी होने की अनुमान लगाई जा रही है। कोनिका कोड़ाइन दीदी कहती है खेती को विस्तार करते हुए अब सूक्ष्म टपक सिंचाई से 50 डेसिमल प्लॉट में मिर्च की खेती करने की योजना बनाई है। कोनिका दीदी समूह से जुड़ने के पूर्व गृहणी थी। समूह में जुड़ने के बाद तकनीकी खेती कर अच्छी आमदनी कर रही है। साथ ही अपने परिवार का भरण पोषण भी कर रही है और अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ाने की योजना बना रही है। अपने संवरते जीवन से दीदी काफी खुश है दूसरे दीदियों को इस नए तकनीकी से खेती करने के लिए प्रेरित कर रही है।

जिला बना प्रथम झारखंड राज्य स्तरीय कैरम टैलेंट अंडर-19 प्रतियोगिता का चैंपियन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा आयोजित प्रथम राज्य स्तरीय कैरम टैलेंट प्रतियोगिता का सफल आयोजन 17 मई को मेगा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, रांची में किया गया। इस प्रतियोगिता में बालक अंडर-19 आयु वर्ग में साहेबगंज जिले ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। प्लस टू उच्च विद्यालय, कोदरजन्ना, साहेबगंज के छात्र मोहम्मद दानिश और मोहम्मद शमी अख्तर की जोड़ी ने बेहतरीन तालमेल और कौशल का प्रदर्शन करते हुए राज्यभर की प्रतिभागी टीमों को पछाड़ते हुए यह गौरव हासिल किया। इस उपलब्धि पर साहेबगंज जिला प्रशासन और शिक्षा विभाग में हर्ष की लहर दौड़ गई। जिला खेल पदाधिकारी पंकज कुमार झा, जिला शिक्षा पदाधिकारी दुगानंद झा, जिला शिक्षा अधीक्षक हर्ष कुमार, एडीपीओ डॉली कुमारी, शबनम तबस्सुम, प्रभारी मुस्तफा कमाल, सोनेलाल मंडल, तोहिद आलम, चंदन कुमार, संजय कुमार, प्रणव शर्मा, परमानंद मंडल, मुसद्दीक हुसैन, बिना कुमारी, खेल शिक्षक बिरेंद्र कुमार, शिक्षक बम बम कुमार, आदित्य कुमार, सोनू कुमार और सत्येंद्र कुमार सहित जिलेवासियों ने विजेता छात्रों को हार्दिक बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।यह जीत साहेबगंज जिले के लिए गर्व का क्षण है और निश्चित रूप से अन्य छात्रों को भी खेलों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।

सदर अस्पताल के एनएससीयू वार्ड में लगी आग, वार्ड से नवजात शिशु को निकाला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला मुख्यालय के सबसे बड़े सदर अस्पताल के ऊपरी तल्ले में संचालित एसएनसीयू वार्ड में रविवार की शाम अचानक शॉर्ट सर्किट के कारण बिजली के बोर्ड में आग लग गई जहां आग लगते ही पूरे एसएनसीयू वार्ड में अफरा तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया। उधर आगलगी की जानकारी संबंधित सदर अस्पताल के बिजली मिस्त्री को दी गई जिसके बाद पूरे एसएनसीयू वार्ड का लाईन काटा गया। वही एसएनसीयू वार्ड में भर्ती नवजात शिशुओं को फौरन बाहर निकाला गया नही तो एक बड़ा हादसा हो सकता था। हालांकि समय रहते इस आगलगी की घटना पर सदर अस्पताल के कर्मियों के सूझबूझ से काबू पा लिया गया है जहां स्वास्थ्य कर्मियों ने राहत की सांस ली है।

सिंदूर यात्रा निकालकर वीर जवानों के प्रति आभार जताया गया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पूर्वी सिंहभूम : पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में भारतीय सेना की ओर से चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद देशभर में सेना के साहस और बलिदान को सम्मानित करने की मुहिम तेज हो गई है। इसी कड़ी में जमशेदपुर पूर्वी में विधायक पूर्णिमा दास साहू के नेतृत्व में महिलाओं ने सिंदूर यात्रा निकालकर वीर जवानों के प्रति आभार जताया। रविवार को जमशेदपुर पूर्वी की विधायक पूर्णिमा दास साहू के नेतृत्व में सिंदूर यात्रा निकाली गई, जो एग्रिको मैदान से प्रारंभ होकर गोलमुरी पुलिस लाइन स्थित शहीद स्थल तक पहुंची। इस विशेष यात्रा में सैकड़ों महिलाओं ने भाग लिया, जो हाथों में सिंदूर लिए शहीदों को नमन करने पहुंचीं। वहां कलश में सिंदूर भरकर उसे सेना के लिए समर्पित किया गया। विधायक पूर्णिमा साहू ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए भारतीय सेना और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार जताते हुए कहा कि यह यात्रा हमारे उन जवानों को समर्पित है जो देश की रक्षा में दिन-रात डटे रहते हैं। उन्होंने कहा कि हम अपने सुहाग की रक्षा करने वाले फौजियों के माथे पर सिंदूर का तिलक लगाकर उन्हें सम्मान देना चाहते हैं। यदि जरूरत पड़ी, तो देश की नारियां भी हथियार उठाने से पीछे नहीं हटेंगी। इस अवसर पर महिलाओं ने देशभक्ति के नारे लगाए और जवानों के प्रति सम्मान व्यक्त किया। हालांकि, इस आयोजन को लेकर राजनीतिक विवाद भी देखने को मिला है। कांग्रेस ने भाजपा पर ऑपरेशन सिंदूर का राजनीतिक लाभ उठाने का आरोप लगाया है, जबकि भाजपा ने कांग्रेस की टिप्पणी को ओछी राजनीति करार दिया है।

संक्षिप्त खबरें

किशोर पेड़ से गिरकर हुआ गंभीर रूप से घायल

साहिबगंज: जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के बड़ा बेतौना निवासी किशोर विमल टुडु उम्र 14 वर्ष पिता दीपक टुडु रविवार को अपने घर के पास ही लगे जंगली फल को तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ रहा था जहां अचानक पैर फिसलने के कारण किशोर पेड़ के उपरी हिस्से से नीचे जमीन पर गिर गया और गंभीर रूप से घायल हो गया। उधर परिजन आनन फानन में किशोर को बेहतर इलाज हेतु सदर अस्पताल लेकर आए जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ. प्रभात मल्लिक ने गंभीर रूप से घायल किशोर का इलाज किया। उधर सदर अस्पताल के चिकित्सक ने किशोर के परिजनों को डिजिटल एक्स रे करवाने की सलाह दी है, मगर रविवार दिन रहने के कारण सदर अस्पताल में डिजिटल एक्स रे कक्ष बंद रहने के कारण किशोर के परिजन निजी क्लिनिक में ऊंचे दामों पर डिजिटल एक्स रे करवाने को विवश हैं। उधर किशोर के दोनों कलाई टूट गया और पैर, हाथ व कमर में गंभीर चोट आई हैं। जिसका चिकित्सक के देखरेख में इलाज जारी है।

साहेबगंज मंडल कारा में जिला विधिक सेवा प्राधिकार की पहल

साहिबगंज: झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार (झालसा) के निर्देश पर और प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष अखिल कुमार के मार्गदर्शन में रविवार को साहेबगंज मंडल कारा में जेल अदालत, विधिक जागरूकता शिविर-सह-स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राधिकार के प्रभारी सचिव-सह-मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी सिन्धु नाथ लामाये ने की। उन्होंने बंदियों को विधिक जानकारी देते हुए कहा कि किसी कारणवश आपलोग आज जेल में हैं, लेकिन अपने जीवन में सुधार लाकर समाज और देश के साथ मिलकर अपने भविष्य को बेहतर बना सकते हैं इस अवसर पर जेल परिसर में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें डॉक्टर भारती के नेतृत्व में बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिलझन्याय रक्षक अरविन्द गोयल एवं उनकी टीम ने वैसे बंदियों की पहचान की जिनका अभी तक जमानत या अपील फाइल नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि विधिक सेवा संस्थाओं का उद्देश्य न्याय को हर व्यक्ति तक, विशेषकर वंचित और हाशिए पर रहने वाले लोगों तक पहुंचाना है। महिला बंदियों की विधिक सहायता संबंधी आवश्यकताओं पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया गया और सचिव द्वारा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इस अवसर पर मंडल कारा अधीक्षक चंद्रशेखर सुमन, जेलर मनोज मुर्मू सहित अन्य पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

असम पुलिस ने की मुफ्फसिल थाना क्षेत्र में छापेमारी

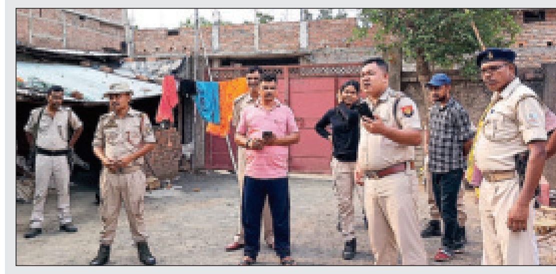

साहिबगंज: जिले के मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के महादेवगंज क्षेत्र में रविवार को असम पुलिस व मुफ्फसिल थाना पुलिस के साथ संयुक्त रूप से छापेमारी की। मिली जानकारी के अनुसार महादेवगंज के किसी युवक द्वारा असम की एक युवती के अपहरण मामले में युवती की बरामदगी एवं आरोपी की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की गई। हालांकि छापेमारी में अपहृत युवती की बरामदगी और आरोपी युवक की गिरफ्तारी नहीं हुई है। मौके पर असम पुलिस के साथ मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के एएसआई मो असलम, पुलिस बल एवं अन्य उपस्थित थे।

बिना त्रिपाल परिचालन ट्रकों को एमवीआई ने काटा चलान

साहिबगंज: मोटर यान निरीक्षक ने रविवार को मुफ्फसिल थाना के समीप मुख्य सड़क पर बिना त्रिपाल के ढंके लोडेड सात हाईवा ट्रक को चालान काटकर नोटिस किया है। मोटर यान निरीक्षक ने बताया कि वाहन जांच अभियान के तहत मुफ्फसिल थाना के करीब मुख्य सड़क पर स्टोन चिप्स लदे सात हाइवा ट्रकों के आवश्यक कागजात की जांच की गई। ट्रक परिचालन के क्रम में कई ट्रैकों का वैद्य कागजात प्रस्तुत नहीं किए जाने पर सभी को आगामी 20 मई तक कार्यालय में वाहन मालिक को वैध कागजात के साथ उपस्थित होने को कहा गया है।

आपसी विवाद में दो बहने फिनाईल पीकर हुई मूर्छित

साहिबगंज: नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत घरेलू आपसी विवाद में दो सगी बहन फिनाईल पीकर मूर्छित हो गई। मिली जानकारी के अनुसार एल. सी. रोड दुसाध पड़ा के निवासी मो. जमशेद की दो पुत्री नजमा परवीन उम्र 24 वर्षीय व रजिया परवीन 18 वर्षीय घर में किसी बात को लेकर बाता-बाती होते-होते झगड़ा तक पहुंच गया। उसके बाद गुस्सा में आकर दोनों बहने फिनाईल पीकर मूर्छित हो गई। परिजनों ने इलाज के लिए आनन-फानन में सदर अस्पताल साहिबगंज लाया। जहां ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर प्रभात मलिक के द्वारा इलाज किया गया। इलाज करने के उपरांत दोनों बहन की स्थिति में सुधार है।

डिजिटल युग में बचपन और रिश्तों का संकट

डिजिटल युग ने जहां हमारी दुनिया को एक-दूसरे के बेहद करीब ला दिया है, वहीं इसके प्रभाव ने बच्चों के जीवन और पारिवारिक रिश्तों में गहरे बदलाव भी ला दिए हैं। आज के बच्चे आँगन की मिट्टी छोड़कर स्मार्टफोन, टैबलेट और गेमिंग की आभासी दुनिया में खोते जा रहे हैं। उनका बचपन अब स्क्रीन की चकाचौंध में डूबा है, जिससे न केवल पारिवारिक रिश्ते कमजोर हो रहे हैं, बल्कि उनकी मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक सेहत पर भी नकारात्मक असर पड़ रहा है।कुछ दशक पहले का बचपन आज से बिलकुल अलग था। आँगन में कंचे खेलना, मिट्टी में खेलना, दौड़-भाग और गली-मोहल्ले में दोस्तों के साथ मस्ती करना, हर बच्चे की जिंदगी का अनिवार्य हिस्सा था। बच्चे पसीने से तरबतर होकर घर आते थे। माँ की ममता भरी थपकी और दादी की कहानियाँ उनके दिन की खुशी का आधार हुआ करती थीं। उस वक्त डिजिटल उपकरणों का नामोनिशान भी नहीं था।आज का बचपन बदले हुए दौर की पहचान है। बच्चे मोबाइल फोन, टैबलेट और वीडियो गेम्स की दुनिया में उलझे रहते हैं। वे घंटों एक छोटी सी स्क्रीन के सामने बैठकर आभासी पात्रों के साथ लड़ते-झगड़ते हैं, लेकिन असली दुनिया से उनकी दूरी बढ़ती जा रही है। वे पारिवारिक संवाद और वास्तविक सामाजिक मेलजोल से दूर हो रहे हैं। मनोवैज्ञानिक और शोधकर्ता इस बात पर सहमत हैं कि बच्चों में स्क्रीन टाइम का अत्यधिक उपयोग उनके मानसिक और शारीरिक विकास के लिए नुकसानदायक है। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य सर्वेक्षण-2023 के अनुसार, 12-18 वर्ष के लगभग 75% बच्चे दिन में चार से छह घंटे तक मोबाइल या टैबलेट का उपयोग करते हैं, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मुताबिक इस उम्र के बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम दो घंटे से अधिक नहीं होना चाहिए। अधिक देर तक स्क्रीन देखने से बच्चों की नींद प्रभावित होती है, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता घटती है और मानसिक तनाव बढ़ता है। इससे अवसाद, चिड़चिड़ापन और अकेलेपन जैसी समस्याएं सामने आ रही हैं। साथ ही शारीरिक रूप से भी वे सक्रिय नहीं रहते, जिससे मोटापा, दृष्टि की कमजोरी और अन्य स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें बढ़ रही हैं। परिवार के सदस्य भी एक-दूसरे के साथ समय बिताने की बजाय अपने-अपने मोबाइल या डिजिटल उपकरणों में खोए रहते हैं। भोजन करते समय भी अधिकतर लोग फोन पर व्यस्त रहते हैं। बच्चों के साथ संवाद की कमी उनके और माता-पिता के बीच भावनात्मक दूरी बढ़ा रही है। बच्चे अपने मन की बात कहने में संकोच करते हैं, जिससे उनका मनोबल कमजोर होता है। परिवार में संवाद की कमी से बच्चों की समझ और सहानुभूति विकसित नहीं हो पाती। वे अपनी भावनाओं को सही ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाते, जो रिश्तों में दरार का कारण बनता है। इसका असर उनकी सामाजिक व्यवहार, दोस्ती और रिश्तों की गुणवत्ता पर भी पड़ता है।स्क्रीन के सामने बिताया गया अधिक समय बच्चों के सामाजिक कौशल को प्रभावित करता है। वे वास्तविक जीवन के संपर्क में कम आते हैं, जिससे उनकी संवाद क्षमता, सहनशीलता और टीम भावना कमजोर होती है। बच्चे जो जीवन के अनुभवों और अलग-अलग लोगों से मिलने-जुलने से सीखते हैं, वे अनुभव डिजिटल माध्यम से पूरी तरह से नहीं हो सकते। भावनात्मक विकास के लिए भी पारिवारिक रिश्तों और सामाजिक मेलजोल की जरूरत होती है। बच्चे अपनी खुशियों, दुखों और परेशानियों को परिवार या करीबी दोस्तों के साथ बांटकर मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं। परंतु डिजिटल युग में इस आदत का टूटना, बच्चों को अकेला और असहाय महसूस कराता है। आज के बच्चे अपनी दोस्ती को फॉलोअर्स, लाइक्स और कमेंट्स तक सीमित कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर जो मित्रता होती है, वह अक्सर सतही और अस्थायी होती है। आभासी मित्रों से मिलने वाली स्वीकार्यता अस्थायी संतुष्टि देती है, लेकिन असली जीवन के कठिन समय में वे समर्थन नहीं दे पाते। गेमिंग की दुनिया में बच्चे जीतने के लिए कई बार आपस में लड़ते हैं, झूठ बोलते हैं या अनैतिक रास्ते अपनाते हैं। यह उनकी नैतिकता और व्यवहार को प्रभावित करता है। खेलों की इस प्रतिस्पर्धा में बच्चों का आपसी प्रेम और सम्मान कम होता जा रहा है। बच्चों के इस डिजिटल मोह को समझना और नियंत्रित करना आज माता-पिता और शिक्षकों की जिम्मेदारी है।

सूडोकु नवताल- 7434

★★★★★ कठिनतम

7							4	
		5		3			7	
					8			2
					1	9		
	2						8	
		6	7					
1			4					
	9			2		5		
	8							1

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल - 7433 का हल

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7

अनायास ही नहीं किया गया कर्नल सोफिया कुरैशी का अपमान

तनवीर जाफरी

मध्य प्रदेश सरकार का विजय शाह नामक एक मंत्री इन दिनों अपनी बदजुबानी को लेकर चर्चा में है । यह व्यक्ति मध्य प्रदेश की हरसूद विधानसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार की हैसियत से लगातार आठ बार विधायक चुना जा चुका है। उस ने पिछले दिनों भारत पाक तनाव के दौरान हुये ऑप्रेशन सिन्दूर के बाद भारतीय सेना की प्रवक्ता के रूप में भारतीय सेना का पक्ष रखने वाली कर्नल सोफिया कुरैशी के बारे में अत्यंत विवादित और आपत्तिजनक बयान दे दिया जिससे देश के आम लोगों से लेकर अदालत तक घोर गुस्से में आ गई। इस बड़बोले मंत्री ने एक सार्वजनिक सभा में कर्नल सोफिया को आतंकियों की बहन बताया और उनके बारे में अपमानजनक टिप्पणी की। पहलगाम में हुये कायराना आतंकी हमले का संदर्भ देते हुये विजय शाह ने एक जनसभा में कहा कि ₹जिन लोगों (आतंकवादियों) ने हमारी बेटियों का सिंदूर उजाड़ा था, मोदी जी ने 'उन्हीं की बहन' भेजकर उनकी ऐसी की तैसी करा दी। निश्चित रूप से यह बयान न केवल उस मंत्री के अज्ञान को दशार्ता है बल्कि इस तरह का बयान देकर उसने कर्नल सोफिया कुरैशी की बहादुरी उनकी राष्ट्रभक्ति और भारतीय सेना में उनके योगदान का भी अपमान किया। हालांकि अपनी इस अति विवादित टिप्पणी के बाद देश में उसके विरुद्ध उपजे आक्रोश को देखते हुये उसने मुआफी मांग ली और कहा कि अगर उनके बयान से किसी को ठेस पहुंची हो तो वे इसके लिए खेद प्रकट करते हैं। परन्तु मंत्री के इस बयान पर मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए उसके विरुद्ध देशद्रोह का मुकदमा दर्ज करने का आदेश दे दिया। परिणाम स्वरूप इंदौर जिले के महू के मानपुर थाने में उसके विरुद्ध प्राथमिकी भी दर्ज हो गई। सुप्रीम कोर्ट ने भी मंत्री विजय शाह को कड़ी फटकार लगाई। कोर्ट ने कहा कि एक संवैधानिक पद पर आसीन व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी का एहसास होना चाहिए और ऐसी भाषा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने विजय शाह द्वारा, दर्ज प्राथमिकी को रद्द करने की मांग पर अंतरिम राहत देने से भी इनकार कर दिया और मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के प्राथमिकी दर्ज करने के आदेश पर रोक लगाने से भी मना कर दिया।

जिस कर्नल सोफिया कुरैशी को उसने आतंकियों की बहन₹ बताकर अपमानित किया जरा उसकी पारिवारिक पृष्ठ भूमि पर भी नजर डालिये। प्राप्त जानकारी के अनुसार सोफिया कुरैशी के परदादा मोहम्मद गौस अंग्रेजों की सेना में बड़े पद पर तैनात थे परन्तु 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जोकि ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण जन-आंदोलन था, उसी दौरान वे ब्रिटिश सेना छोड़कर देश के स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गये। इसी तरह कर्नल सोफिया के दादा मुहम्मद हुसैन भारतीय सेना में सेवारत थे। बाद में सोफिया कुरैशी के पिता ताज मोहम्मद कुरैशी भी भारतीय सेना में इलेक्ट्रॉनिक एंड मैकेनिकल इंजीनियर्स कोर में कार्यरत रहे और 1971 के भारत पाक युद्ध में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतना ही नहीं बल्कि कर्नल सोफिया कुरैशी के एक चचा इस्माइल कुरैशी भी भारतीय सीमा सुरक्षा बल में सूबेदार थे। और उनके एक और दूसरे चाचा वली मुहम्मद कुरैशी आज भी सीमा सुरक्षा बल में सूबेदार के पद पर तैनात हैं। अब कर्नल सोफिया कुरैशी तो स्वयं भारतीय सेना में हैं ही साथ ही उनके पति कर्नल ताजुद्दीन भी भारतीय सेना में ही हैं और मेकेनाइज्ड इंफेंट्री में अधिकारी हैं। यही नहीं बल्कि कर्नल सोफिया कुरैशी का बेटा 18 वर्षीय समीर कुरैशी है और वह भारत की वायुसेना में शामिल होने के लिए परीक्षा दे चुका है जबकि उनकी बेटी हनीमा कुरैशी भी वायुसेना में पायलट बनने की तैयारी कर रही है। कर्नल सोफिया कुरैशी की तुलना विजय शाह जैसे अनेकानेक उन नफरती चिंटुओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि से करके देखिये तो स्वयं पता चल जायेगा की वास्तविक देशभक्त और पेशेवर नफरतबाजों की देशभक्ति में कितना अंतर है। कर्नल सोफिया व उनके परिवार से जुड़े राष्ट्रभक्ति के और भी अनेक किस्से हैं।

परन्तु ऐसे महान देशभक्त योद्धा परिवार को अपमानित करने में इस 'संस्कारी नफरती मंत्री' ने कोई समय नहीं गंवाया। परन्तु स्वयं को चौतरफा जलील होता देख अब न केवल मुआफी मांगता फिर रहा है बल्कि मंत्री होने के बावजूद लुका छुपा भी फिर रहा है। इसको यह भी नहीं पता कि कर्नल सोफिया पिछले दिनों हुये ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान युद्ध के मोर्चे पर नहीं गयी थीं बल्कि उन्हें व उनके साथ भारतीय वायु सेना की विंग कमांडर व्योमिका सिंह को भारतीय सेना द्वारा देश की साम्प्रदायिक एकता तथा आतंकयों द्वारा पर्यटकों का धर्म पूछ कर चुन चुन कर मारे गये पुरुषों का ऑपरेशन सिन्दूर के द्वारा बदला लिये जाने के प्रतीक स्वरूप मीडिया के सामने प्रवक्ता के रूप में पेश किया गया था। जबकि 'अज्ञानी मंत्री' कर्नल सोफिया को युद्ध मोर्चे पर लड़ने वाली बता रहा था? ऑपरेशन सिन्दूर में कर्नल सोफिया ने प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया था। यह पहला अवसर नहीं था जबकि दक्षिणपंथी हिंदूवादी विचारधारा के किसी नेता ने इसतरह की बात कर धर्म विशेष के लोगों को अपमानित किया हो और न ही अपनी बदतमीजी व बदजुबानी के लिये मुआफी मांगने वाला यह कोई पहला व्यक्ति था। बल्कि सही मायने में इस तरह की नफरती बातें करना और चारों और से थूके जाने पर मुआफी मांग लेना यह सब बातें इनके संस्कारों में शामिल हैं। संसद से लेकर जनसभाओं व प्रेस वार्ता तक में यह जहरीले लोग अक्सर ऐसी बातें करते सुने व देखे जाते है। दरअसल इनके नफरती संस्कार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक रहे माधवराव सदाशिव गोलवलकर के विचारों से प्रेरित हैं जोकि अपने लेखन और भाषणों में मुसलमानों, ईसाइयों और कम्युनिस्टों को भारत के लिए खतरा, ₹आंतरिक दुश्मन₹ और ₹राष्ट्र के तीन दुश्मन₹ के रूप में बताया करते थे। इनसे प्रेरणा प्राप्त नफरती व विषवमन करने वालों को न तो अशफकुल्लाह खान की कुबार्नी की अहमियत का अंदाजा है न ही सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज के जनरल शाहनवाज खान की बहादुरी व अदम्य साहस का। इन्हें न ही ब्रिगेडियर उस्मान की कुर्बानियां नजर आती हैं न ही वीर अब्दुल हमीद का बलिदान न ही न ही देश को परमाणु शक्ति बनाने वाले मिसाईल मैन भारत रत्न ए पी जे अब्दुलकलाम का भारतीय रक्षा क्षेत्र में किया गया योगदान। जिनके आदर्श गोलवरकर और मुआफी वीर सावरकर व गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे जैसे लोग हों उनसे कर्नल सोफिया कुरैशी का अपमान अनायास ही हुआ है,ऐसा हरगिज नहीं कहा जा सकता।

यूपी की राजनीति में गिरती भाषा और बढ़ती ट्रोलनीति

अजय कुमार

उत्तर प्रदेश की राजनीति में हाल के दिनों में जिस तरह की तीखी बयानबाजी और सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाली बहसों ने तूल पकड़ा है, उसमें सबसे हालिया और विवादास्पद मामला समाजवादी पार्टी के मीडिया सेल द्वारा उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक को लेकर की गई अभद्र टिप्पणी है। यह मामला न सिर्फ एक राजनीतिक टकराव का प्रतीक है, बल्कि यह दशार्ता है कि किस प्रकार डिजिटल युग में राजनीतिक दलों की ओर से किए गए पोस्ट सीधे सामाजिक सौहार्द, नैतिक मयार्दा और राजनीतिक विमर्श की गरिमा पर असर डाल सकते हैं। 16 मई को सपा मीडिया सेल के एक्स (पूर्व में ट्विटर) हैंडल से एक पोस्ट किया गया। जिसमें बृजेश पाठक के डीएनए पर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई। इस पोस्ट में उपमुख्यमंत्री की तुलना सोनागाछी और जीबी रोड जैसे देश के रेड लाइट एरिया से जोड़ते हुए यह कहा गया कि उनका डीएनए इन क्षेत्रों में नियमित रूप से आने वाले लोगों से मिलाया जाना चाहिए, ताकि उनकी वास्तविक पहचान सामने आ सके। पोस्ट में जिस प्रकार के शब्दों और प्रतीकों का इस्तेमाल किया गया, वह न केवल अभद्र था, बल्कि महिलाओं और वंचित वर्गों के प्रति भी एक अपमानजनक दृष्टिकोण को उजागर करता है। यही कारण था कि इस पोस्ट को लेकर तीव्र राजनीतिक प्रतिक्रिया सामने आई और बृजेश पाठक ने स्वयं इसे अपनी दिवंगत माता-पिता का अपमान बताते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव से सार्वजनिक रूप से पूछा कि क्या यही उनकी पार्टी की भाषा है।

बृजेश पाठक ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि समाजवादी पार्टी के नेताओं ने जिस स्तर की मानसिकता का परिचय इस पोस्ट के माध्यम से दिया है, वह न केवल स्त्री विरोधी है बल्कि पतित सोच को भी दशार्ता है। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीति में विचारों का विरोध होता है, लेकिन किसी के चरित्र और पारिवारिक पृष्ठभूमि पर इस तरह के व्यक्तिगत हमले करना राजनीति को गटर में ले जाने जैसा है। उन्होंने अखिलेश यादव से यह स्पष्ट करने को कहा कि क्या यह उनकी पार्टी की अधिकृत नीति है या किसी असंतुलित व्यक्ति की निजी राय, जिसे पार्टी ने अनुमति दे दी। उन्होंने कहा कि समाजवाद के नाम पर सपा जिन बातों को बढ़ावा दे रही है, वह केवल गाली-गलौच, जातिगत विद्वेष और अनैतिक आचरण का पर्याय बन चुका है।

इस पूरे मामले ने भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं को भी सक्रिय कर दिया। लखनऊ महानगर भाजपा अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने हजरतगंज थाने में समाजवादी पार्टी के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। एफआईआर में यह कहा गया कि यह पोस्ट न केवल जातीय विद्वेष फैलाने वाली है, बल्कि महिलाओं का घोर अपमान करती है और समाज में आपसी सद्भाव को बिगाड़ने का प्रयास करती है। इसके अलावा पार्टी कार्यकर्ताओं ने लखनऊ में विरोध प्रदर्शन करते हुए अखिलेश यादव का पुतला जलाया और समाजवादी पार्टी के मीडिया सेल पर कार्रवाई की मांग की। उन्होंने यह भी कहा कि अगर इस प्रकार की अभद्रता के लिए पार्टी के शीर्ष नेतृत्व की ओर से कोई सार्वजनिक माफी नहीं मांगी जाती, तो वे आंदोलन तेज करेंगे।

वहीं अखिलेश यादव ने इस पूरे प्रकरण पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि उन्होंने अपने सभी कार्यकताओं से संयमित भाषा का प्रयोग करने को कहा है। लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी जोड़ा कि उपमुख्यमंत्री को भी अपनी भाषा और व्यवहार पर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीति में यदि सत्ता पक्ष की ओर से निरंतर अनर्गल आरोप लगाए जाएंगे, तो विपक्षी कार्यकताओं में भी प्रतिक्रिया की भावना उत्पन्न होगी। अखिलेश का यह बयान इस ओर इशारा करता है कि वे इस मामले में पूरी तरह सपा की सोशल मीडिया टीम के साथ खड़े हैं और उन्होंने यह भी संकेत दिया कि यदि भाजपा को ऐसी टिप्पणियों से आपत्ति है तो उन्हें भी अपने नेताओं के बयानों की जांच करनी चाहिए। बृजेश पाठक ने इसके जवाब में अखिलेश यादव पर एक बार फिर से तीखा प्रहार किया और कहा कि समाजवादी पार्टी अब समाजवाद की प्रयोगशाला नहीं, बल्कि गाली-गलौच की प्रयोगशाला बन चुकी है। उन्होंने कहा कि जिस डॉ. राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण के सिद्धांतों को सपा अपनाने का दावा करती है, उनकी आत्मा इस तरह के कृत्यों से व्यथित होगी। पाठक ने यह भी कहा कि राजनीति में नैतिकता और शालीनता होनी चाहिए, लेकिन सपा नेतृत्व ने अब इसे पूरी तरह ताक पर रख दिया है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि यदि विपक्षी दलों को लगता है कि सत्ता पक्ष की नीतियों में कोई त्रुटि है, तो उन्हें तथ्यों के आधार पर बात करनी चाहिए, न कि व्यक्तिगत स्तर पर जाकर अनर्गल आरोप लगाने चाहिए। यह प्रकरण न सिर्फ एक राजनेता के मान-सम्मान से जुड़ा है, बल्कि यह पूरे लोकतंत्र की परिपक्वता पर भी सवाल खड़ा करता है। सोशल मीडिया आज राजनीति का एक अत्यंत प्रभावशाली मंच बन चुका है। लेकिन जिस प्रकार से राजनीतिक दलों की ओर से इस मंच का उपयोग अब मयार्दाहीन और असंयमित भाषा के लिए किया जा रहा है, वह बेहद चिंताजनक है। यह केवल एक दल या एक नेता का मुद्दा नहीं है, बल्कि पूरे राजनीतिक विमर्श की गिरती गुणवत्ता का प्रमाण है। राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में स्वस्थ आलोचना एक अनिवार्य तत्व होती है, लेकिन जब यह आलोचना निचले स्तर पर जाकर निजी जीवन, पारिवारिक पृष्ठभूमि और जातिगत पहचान पर केंद्रित हो जाए, तो इससे न केवल राजनीतिक वातावरण दूषित होता है, बल्कि आम जनता के बीच भी राजनीति के प्रति विश्वास में गिरावट आती है।

इस घटनाक्रम से यह भी स्पष्ट होता है कि राजनीतिक दलों को अपने सोशल मीडिया प्रबंधन के लिए केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि वैचारिक परिपक्वता और सामाजिक जिम्मेदारी का भी ध्यान रखना चाहिए। यह आवश्यक है कि सोशल मीडिया टीमों को केवल पार्टी लाइन का प्रचार करने तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उन्हें यह भी सिखाया जाए कि भाषा की मयार्दा और समाज की संवेदनाओं का आदर किस प्रकार किया जाता है। इस दिशा में अगर सख्ती नहीं बरती गई, तो आने वाले समय में राजनीतिक संवाद केवल ट्रोल संस्कृति में सिमटकर रह जाएगा।

साथ ही यह मामला महिलाओं के प्रति सम्मान और सामाजिक चेतना से भी जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार से पोस्ट में रेड लाइट क्षेत्रों और वहाँ काम करने वाली महिलाओं को उपहास का माध्यम बनाया गया, वह स्त्री विरोधी मानसिकता की ओर इशारा करता है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की बात करने वाले दल यदि इस प्रकार की अभद्रताओं को संरक्षण देते हैं, तो यह न केवल पाखंड है बल्कि उस समावेशी समाज के खिलाफ एक सीधा प्रहार है जिसकी कल्पना संविधान करता है।

आखिरकार यह पूरा विवाद इस बात की ओर संकेत करता है कि भारतीय राजनीति को अब विचारधारा की बजाय ट्रोलिंग और बदजुबानी के रास्ते पर धकेला जा रहा है। यह जरूरी है कि देश के सभी राजनीतिक दल, चाहे वे सत्ता में हों या विपक्ष में, इस प्रवृत्ति पर गंभीर आत्ममंथन करें।

सेना को चरणों में और महिला अफसर को आतंकी की बहन, क्या यही है नया भारत?

अजय कुमार

भारतीय लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक ऐसा मौलिक अधिकार है, जो नेताओं को अपनी बात कहने का अवसर देता है। लेकिन जब यही स्वतंत्रता जिम्मेदारी से अलग होकर घमंड, असंवेदनशीलता और तुच्छ राजनीतिक लाभ का औजार बन जाए, तब यह न केवल लोकतंत्र की आत्मा को घायल करती है, बल्कि देश की एकता और संस्थानों की गरिमा पर भी प्रहार करती है। हाल के दिनों में मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश से कुछ ऐसे ही बयान सामने आए हैं, जो न केवल राजनीतिक मयार्दा की सीमा लांघते हैं, बल्कि उन संस्थाओं को भी घसीट लाते हैं, जिन्हें राजनीति से ऊपर माना जाता है खासकर देश की सेना। मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार के वरिष्ठ मंत्री विजय शाह ने एक चुनावी सभा में सेना की महिला अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर जिस तरह की टिप्पणी की, वह शर्मनाक ही नहीं, बल्कि निंदनीय भी है। उन्होंने सेना में सेवा दे रहीं एक सम्मानित अधिकारी को आतंकवादी की बहन कह डाला। यह शब्द महज राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का परिणाम नहीं था, बल्कि यह उस मानसिकता का परिचायक था, जिसमें सत्ता की ललक नैतिकता को कुचल देती है। सोफिया कुरैशी, जिन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय सैन्य अभियानों में भारत का नेतृत्व किया है, उनके लिए इस तरह के शब्द एक पूरे सैन्य समुदाय के मनोबल पर कुठाराघात हैं। यह केवल एक अफसर नहीं, बल्कि उस महिला की भी बेइज्जती है, जो भारत की सीमाओं की सुरक्षा में दिन-रात तैनात है।

इस बयान के बाद देशभर में आक्रोश की लहर दौड़ गई। सोशल मीडिया पर लोगों ने मंत्री को बर्खास्त करने की मांग उठाई। कांग्रेस, आम आदमी पार्टी और अन्य विपक्षी दलों ने इसे भाजपा की सोच करार देते हुए पूरे प्रकरण पर प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी पर भी सवाल खड़े किए। वहीं, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव को भी कटघरे में खड़ा किया गया कि क्या वे अपनी कैबिनेट के मंत्री की इस स्तरहीन भाषा से सहमत हैं? लेकिन इससे भी अधिक गंभीर बात यह थी कि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की ओर से इस बयान पर कोई ठोस कार्यवाही देखने को नहीं मिली। बयानबाजी की राजनीति में मानवीय गरिमा, संस्थागत सम्मान और संवैधानिक मयार्दा को ताक पर रख देना आज के समय की सबसे बड़ी राजनीतिक त्रासदी बन चुकी है। इसी बीच एक और विवाद खड़ा हुआ जब मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने एक सभा में यह कह दिया कि पूरा देश और सेना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चरणों में नतमस्तक है। यह कथन न केवल अतिशयोक्ति से भरा हुआ था, बल्कि यह सीधे-सीधे भारतीय सेना की स्वायत्तता और गरिमा पर हमला था। सेना एक संवैधानिक संस्था है, जो न किसी दल की है, न किसी व्यक्ति की। वह केवल राष्ट्र की है। उसका समर्पण संविधान, राष्ट्र और उसकी अखंडता के प्रति है किसी नेता या सरकार के प्रति नहीं। इस तरह की तुलना, जिसमें सेना को एक राजनीतिक व्यक्तित्व के अधीन बताया जाता है, गहरी चिंता का विषय है। विपक्ष ने इस पर भी तीखी प्रतिक्रिया दी और कहा कि भाजपा अपनी 'व्यक्ति पूजा' की राजनीति में सेना जैसे पवित्र संस्थान को भी लपेटने से नहीं चूकती। उत्तर प्रदेश में भी राजनीतिक बयानबाजी ने नई हदें पार कीं जब समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता रामगोपाल यादव ने भारतीय वायुसेना की विंग कमांडर व्योमिका सिंह के लिए जातिसूचक टिप्पणी की। उन्होंने सार्वजनिक मंच से उन्हें ₹चमार₹ कहकर संबोधित किया। यह टिप्पणी न केवल अभद्र और अपमानजनक थी, बल्कि यह सामाजिक ताने-बाने को भी छिन्न-भिन्न करने वाली थी। एक तरफ तो दलित समुदाय को सम्मान देने की बात होती है, दूसरी ओर जब एक महिला अधिकारी जिसने अपनी मेहनत, योग्यता और साहस के दम पर एक अहम पद हासिल किया है को केवल उसकी जाति के आधार पर संबोधित किया जाता है, तो यह जातिवाद की जड़ें कितनी गहरी हैं, इसका प्रमाण बन जाता है। इस बयान ने समाज के भीतर जातिगत द्वंद्व को फिर से सतह पर ला खड़ा किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसे सेना और समाज दोनों का अपमान करार दिया। भाजपा के कई अन्य नेताओं ने भी इस पर तीखी प्रतिक्रिया दी। वहीं, रामगोपाल यादव ने बाद में सफाई दी कि उन्होंने ऐसा किसी दुर्भावना से नहीं कहा, लेकिन सवाल फिर वही उठता है क्या इतने वरिष्ठ नेता को यह नहीं पता कि सार्वजनिक मंच से जातिसूचक शब्द कहना सामाजिक और संवैधानिक दोनों स्तरों पर अपराध है? क्या राजनीति की भाषा इतनी असंवेदनशील हो चुकी है कि उसमें न महिला सम्मान बचा है, न जातीय समरसता और न ही संस्थागत मयार्दा? इन तीनों घटनाओं में एक बात समान है नेताओं की गैर जिम्मेदाराना भाषा, सस्ती लोकप्रियता की भूख, और संवैधानिक संस्थाओं का बार-बार अपमान। यह स्थिति केवल एक दल विशेष की नहीं, बल्कि आज की संपूर्ण राजनीति का दर्पण बन गई है। सेना, जो हमेशा राजनीतिक टकरावों से दूर रही है, उसे भी आज बयानबाजी की जंग में खींचा जा रहा है। यह न केवल लोकतांत्रिक मूल्यों की हत्या है, बल्कि यह उस राष्ट्र भावना का भी क्षरण है, जिस पर भारत की पहचान टिकी हुई है। यह आवश्यक है कि राजनीतिक दल अपने नेताओं को केवल चुनाव जिताने वाली मशीनें न समझें, बल्कि उन्हें संवैधानिक जिम्मेदारी, भाषा की मयार्दा और सामाजिक संतुलन का पाठ पढ़ाएं। चुनाव आयोग को भी ऐसे बयानों पर स्वतः संज्ञान लेते हुए कठोर निर्देश और दंड का प्रावधान करना चाहिए ताकि यह संदेश स्पष्ट हो जाए कि कोई भी व्यक्ति संविधान से ऊपर नहीं है। मीडिया, जो लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है, उसे भी चाहिए कि वह टीआरपी की दौड़ में इन बयानों को सनसनी की तरह परोसने के बजाय इन पर सार्थक बहस करे और जवाबदेही तय करने में भूमिका निभाए।

दैनिक पंचांग

19 मई 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

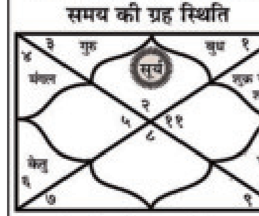

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	वृष में	वृष	05.02 बजे से
चंद्र	मकर में	मिथुन	07.04 बजे से
मंगल	कर्क में	कर्क	09.18 बजे से
बुध	मेष में	सिंह	11.34 बजे से
गुरु	मिथुन में	कन्या	13.46 बजे से
शुक्र	मीन में	तुला	15.57 बजे से
शनि	मीन में	वृश्चिक	18.11 ब.से
राहु	मीन में	धनु	20.27 बजे से
केतु	कन्या में	मकर	22.32 बजे से
राहुकाल 7.30 से 9.00 बजे तक		कुंभ	00.19 बजे से
		मीन	01.52 बजे से
		मेष	03.22 बजे से

सोमवार 2025 वर्ष का 139 वा दिन **दिशाशूल** पूर्व **ऋतु** ग्रीष्म।
विक्रम संवत् 2082 **शक संवत्** 1946
मास ज्येष्ठ (दक्षिण भारत में वैशाख) **पक्ष** कृष्ण
तिथि षष्ठी 06.12 बजे को समाप्त।
नक्षत्र श्रवण 19.30 बजे को समाप्त।
योग शुक्ल(शुक्र) 05.53 बजे तदनन्तर ब्रह्म 04.36 बजे प्रातः को समाप्त।
करण वणिज 06.12 बजे तदनन्तर विष्टि 18.07 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 21.2 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 19° 47'
सूर्य उत्तरायन **कलि अहर्गण** 1872349
जूलियन दिन 2460814.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना जिल्काद
तारीख 20

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक	चर	05.43 से	07.14 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक	रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक	काल	08.45 से	10.17 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक	लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक	उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक	शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक	अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक	चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

एक नजर

सीबीएसई 10वीं बोर्ड हॉली चाइल्ड स्कूल का रिजल्ट शत प्रतिशत

TRINETRA KUMAR

झुमरीतिलैया : बिशुनपुर रोड स्थित हॉली चाइल्ड स्कूल के 10वीं बोर्ड रिजल्ट ने एक बार फिर से विद्यालय का नाम ऊंचा किया है। सीबीएसई 10वीं परीक्षा में इस साल स्कूल का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा। इस परीक्षा में कुल 19 विद्यार्थियों ने भाग लिया और सभी सफल हुए, जिससे स्कूल ने अपनी उत्कृष्टता को प्रमाणित किया है। इस वर्ष के स्कूल टॉपर त्रिनेत्र कुमार रहे, जिन्होंने 83 प्रतिशत अंक प्राप्त करके विद्यालय का गौरव बढ़ाया। वहीं, अशवी अंसारी 82 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर रहे। विद्यालय के ये परिणाम छात्रों की मेहनत और शिक्षकों के प्रयासों का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।विद्यालय के निदेशक नवनीत ओझा (बंटी) और प्रिंसिपल प्रियंका ओझा सहित सभी शिक्षक और शिक्षिकाएं सफल छात्रों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि यह सफलता न केवल छात्रों के लिए, बल्कि पूरी स्कूल परिवार के लिए गर्व का क्षण है। इस सफलता के पीछे विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत के साथ-साथ शिक्षकों का मार्गदर्शन भी शामिल है, जिसने सभी को प्रेरित किया और एक सकारात्मक माहौल प्रदान किया। हॉली चाइल्ड स्कूल अब इस उपलब्धि को लेकर गर्वित है और भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट परिणामों की उम्मीद करता है।

जुए में हारे लोगों ने बनाया चोर गिरोह, छह गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : जिले में लगातार हो रही चोरी की घटनाओं में पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। बंद घरों में चोरी करनेवाले गिरोह के छह सदस्यों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जिनके पास से पुलिस ने चोरी के मोबाइल, सोने का लॉकेट, चांदी का सिक्का, जूता, इयरफोन, इयरबड और कागजात बरामद किया है। इसके साथ ही चोरी में प्रयुक्त मोटरसाइकिल, सब्बल और कटर भी जब्त किया गया है। इस संबंध में रविवार को पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि रामगढ़ जिले में लागातार हो रही चोरी और गृहभेदन की घटना के उद्द्भेदन हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी रामगढ़ के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम ने प्राप्त सूचना और तकनीकी अनुसनधान के आधार पर अलग-अलग टीम बनाकर विभिन्न स्थानों पर छापामारी किया गया। इस क्रम में बरकाकाना ओपी प्रभारी के द्वारा बरकाकाना ओपी अन्तर्गत घटित चोरी की घटना से संबंधित चोरों का सीसीटीवी फुटेज दिया गया। फुटेज में

दिख रहे चोरों और उनके द्वारा प्रयोग किये

गये मोटर साईकिल (खल्र 243 0823) का सत्यापन किया गया। सत्यापन में मोटर साईकिल के मालिक का नाम पता सत्यापन करने पर प्रिंस कुमार केशरी, पिता राजेश प्रसाद केशरी, निवासी कुन्दरिया बांध कुज्जू, थानामांडु, जिला-रामगढ़ पाया गया। वाहन मालिक से उक्त मोटर साईकिल के बारे में पूछा गया तो उसने बताया कि उक्त मोटरसाईकिल उसका ही है, लेकिन बड़े भाई संदीप कुमार केशरी के द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा है। इस पर पुलिस ने संदीप कुमार केशरी को कुज्जू ओपी लाकर गहन पूछताछ की। इस क्रम में उसने चोरी का अपराध स्वीकार करते हुए पुलिस को बताया किवे लोग एक गिरोह के रूप में चोरी की घटना को अंजाम देते है और चोरी के सामानो को आपस में बाट लेते है। गिरोह का सरगना रांची में रहता है और गिरोह रांची, हजारीबाग और रामगढ़ के बंद घरों को निशाना बनाता है। सदीप कुमार केशरी के निशानदेही पर कुल 06 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। जिनके पास से चोरी का 6 मोबाइल, एक सोने का लोकेट, एक चांदी का सिक्का, एक जोड़ा जूता, एक इयरबड, एक नेकबैंड इयरफोन एवं चोरी में प्रयोग किया गया बाइक सब्बल और कटर बरामद किया गया है। मामले को लेकर मांडु थाना में कांड संख्या 126/25. दिनांक-18.05.2025, धारा 317(4)/317(1)/112(2)/3(5)/61(2) बीएनएस दर्ज किया गया है। पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने बताया कि सभी अभियुक्त कम उम्र के युवा हैं। ऑनलाइन बेटिंग गेम्स में ये लोग काफी पैसे हार चुके हैं। जिससे बाद से ये सभी गिरोह बनाकर गृहभेदन कर चोरी की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि अभियुक्त महंगे मोबाइल के भी शौकीन हैं और इन लोगों ने चोरी का पैसा शेयर बाजार में भी लगा रखा है। गिरोह के अन्य सदस्यों की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं। वहीं उन्होंने मीडिया के माध्यम से आम लोगों से अपील करते हुए कहा कि शॉर्टकट से अमीर बनने का लालच आपको मुसिबतों में भी डाल सकता है। बेटिंग से बचें और करियर पर ध्यान दें। मेहनत का विकल्प कुछ और नहीं है।

मुरपा में सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराने गयी टीम खाली हाथ लौटी वापस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कुजू : जिला प्रशासन, रामगढ़ के निर्देश पर गोसाई टोला, मुरपा में गैरमजरूआ आम भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराने पहुंची प्रखंड टीम को ग्रामीणों का भारी विरोध का सामना करना पड़ा। टीम जेसीबी के साथ बैरंग लौट गई। प्रभारी मांडू अंचल निरीक्षक सह प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी रामरतन पांडेय शनिवार की दोपहर एसडीएम के निर्देश पर कुजू पुलिस के साथ प्रखंड प्रशासन की टीम कुजू पूर्वी पंचायत सचिवालय के पास गोसाई टोला, मुरपा में खाता संख्या 86 एवं प्लॉट नंबर 799 का गैर मजरूआ आम/खास भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराने एवं अवैध निर्माण हटाने के लिए पहुंचा। इसी बीच सूचना पाकर पहुंचे ग्रामीणों ने पुलिस व प्रशासन का जमकर विरोध किया। विरोध कर रहे ग्रामीणों ने बताया कि उक्त भूमि पर हमलोग सैंकड़ों वर्ष पूर्व से निवास कर रहे है। जिला प्रशासन द्वारा अचानक से हम सभी घरों के तोड़ने के लिए आ धमका है, जो सरासर गलत है। ग्रामीणों ने कहा कि प्रशासन द्वारा बिना नोटिस दिए ही घरों को तोड़ने के उद्देश्य के साथ जेसीबी भी लेकर पहुंची। प्रशासन की कारवाई को देख हम सभी काफी डरे सहमे है। ग्रामीणों ने डीसी से अनुरोध करते हुए कहा कि हम सभी आदिम जनजाति से जुड़े लोगों के साथ एक बार सामूहिक रूप से ग्रामसभा कर **समस्या को जानने** का प्रयास करें। घरों का टूट जाने की कार्रवाई से बेघर होने पर सामूहिक रूप से आत्मदाह करने चेतावनी दी। जिसकी सारी जिम्मेवारी जिला प्रशासन की होगी। मौके पर मौजूद अमीन बैजनाथ विश्वकर्मा ने बताया कि 11 एकड़ 23 डिसमिल गैर मजरूआ आम भूमि है। इस भूमि पर सरना पूजा स्थल, पंचायत भवन, अस्पताल, विद्यालय व कॉलेज भी शामिल है।

पैसे का लालच देकर नौ वर्षीय बच्ची को ले जा रहे नवयुवक की ग्रामीणों ने की जमकर पिटाई

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कुजू : कुजू ओपी क्षेत्र अंतर्गत ग्राम बंधिया में रविवार को ग्रामीणों ने एक युवक की जमकर पिटाई कर दी। सूचना पर पहुंचे कुजू ओपी पुलिस ने आक्रोशित भीड़ से युवक को लेकर आपी ले आई है। कुजू ओपी पुलिस के कब्जे से जिस नव युवक को रखा गया है, वह पूछताछ में खुद को पेटरवार निवासी विशाल तिवारी पिता स्व दिलीप तिवारी बताया है। ग्राम बंधिया के ग्रामीणों के अनुसार यह युवक रविवार दिन के करीब 11 बजे मवेशी चरा रही गांव की एक नौ वर्षीय बच्ची को बीस रुपए देकर अपने साथ ले जाने के प्रवास में था। लेकिन बच्ची भाग कर ग्रामीणों को इसकी जानकारी दी। ग्रामीणों ने जब युवक का पीछा किया तो वह झाड़ियों में छिप गया। भीड़ में मौजूद लोगों ने युवक को पकड़ने के बाद उसकी पिटाई शुरू कर दी। इस मामले की जानकारी किसी ने कुजू ओपी पुलिस को मोबाइल के माध्यम से दी। पुलिस मौके पर पहुंचकर पिटाई कर रहे ग्रामीणों की भीड़ से युवक को अपने कब्जे में लेकर स्थानीय नर्सिंग होम में प्राथमिक उपचार कराने के बाद मामले के संबंध में पूछताछ के लिए ओपी ले आई है। पूछताछ में युवक ने बताया कि वह बिस्कुट खाने के लिए बच्ची को पैसे दे रहा था। यह उसकी आदत है। लेकिन ग्रामीण बच्चा चोर कहते हुए मेरी पिटाई शुरू कर दी। फिलहाल पुलिस मामले की छानबीन में जुटी है।

संक्षिप्त खबरें

आपरेशन सिंदूर कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अनगड़ा : प्रखंड अंतर्गत हे सल मासु गांव में ऑपरेशन सिंदूर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका नेतृत्वकर्ता सामाजिक सेवा भाव संगठन हेसल के तत्वाधान में जुलूस पंचायत मासू से मिलन चौक अमर शहीद राजकुमार महतो चौक से गोंदली पोखर तक निकाला गया जुलूस का सुरुआत शहीद राजकुमार का प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए गोदली पोखर चौक तक पहुंच। कार्यक्रम में मुख्य रूप से कविता देवी कृष्ण भगत जगन्नाथ महतो अर्जुन राम ग्राम प्रधान देवराज पहन ग्राम प्रधान रामनाथ करमाली उप प्रमुख दुर्गा महतो समिति अध्यक्ष शांति उरांव सरस्वती देवी सुमित्रा कुमारी तीजन देवी पूनम कुमारी माधुरी देवी ममता देवी अंजू देवी मनी देवी आदि महिला शामिल थे।
हो रही बाबा की नगरी में केसर चंदन का छिड़कावङ्ग

38वां श्याम अरदास महोत्सव भक्तिरस में डूबा, भजनों पर झूमे श्रद्धालु

झुमरीतिलैया : नगर के प्रमुख धार्मिक संगठन “श्याम शरण में आजा रे” द्वारा आयोजित 38वां श्याम अरदास महोत्सव रविवार को अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम श्याम बाबा पथ स्थित नंदनी अपार्टमेंट परिसर में श्रीमती दलजीत कौर के द्वारा आयोजित हुआ। जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। महोत्सव के प्रारंभ में बाबा श्याम का अत्यंत मनोहरी दरबार सजाया गया, जिसमें केसर-चंदन की सुगंध से वातावरण भक्तिमय हो उठा। बाबा का श्रृंगार विशेष रूप से सजावट, फूलों, चंदन, धूप-दीप, एवं रत्नों से किया गया, जिसने श्रद्धालुओं को दिव्यता का अनुभव कराया। पूजन कार्य आचार्य अनिल मिश्रा द्वारा विधिवत संपन्न कराया गया। कार्यक्रम में यजमान के रूप में संतोष सिंह एवं गुरु सिंह कौर उपस्थित रहे। पूजा के बाद सामूहिक हनुमान चालीसा के पाठ के साथ शुरू हुआ।जिसमें सभी भक्तों ने श्रद्धा से भाग लिया। हनुमान चालीसा पाठ के उपरांत बाबा श्याम की ज्योत प्रज्वलन कर सवा पाँच घंटे की भजनों की संध्या आरंभ हुई, जिसमें बाहर से आए एवं स्थानीय गायकों ने एक से बढ़कर एक भक्तिरस से सराबोर भजनों की प्रस्तुति देकर सभी को भावविभोर कर दिया।

उत्तर प्रदेश

सनातन की रक्षा के लिए अहिल्याबाई होल्कर के जीवन से लें प्रेरणाः गोविंद नारायण शुक्ल

संवाददाता

कुशीनगर। धर्माचरण, शासन प्रबंध, विद्वानों का सम्मान व न्याय, दानशीलता, उदार धर्म नीति, भक्ति भावना, वीरता, त्याग व बलिदान, साहस, शौर्य से परिपूर्ण रानी अहिल्याबाई युगों- युगों तक अमर रहेगी। इतिहास के दिग्गज शासको के गुणों से परिपूर्ण रानी हम सभी की प्रेरणा स्रोत है।रानी का नाम सदा स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। लोकमाता अहिल्याबाई राजश्री से राजर्षि के रूप में संसार में प्रसिद्ध हुई जिन्हें पुण्यश्लोक का दर्जा दिया गया। यह बातें भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री व सदस्य विधान परिषद गोविंद नारायण शुक्ल ने कहा। वह रविवार को रविन्द्र नगर भाजपा कार्यालय में आयोजित पुण्यश्लोक रानी अहिल्याबाई होलकर जन्म त्रिशताब्दी स्मृति अभियान को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि देवी अहिल्या बाई ने अपना संपूर्ण राज्य शिव को समर्पित कर उनकी संरक्षिता बन कर राज किया था। देवी अहिल्या बाई का जीवन बहुत संकटपूर्ण और संघर्ष का रहा, लेकिन उन्होंने इन सब परेशानियों को अपने राज्य संचालन से दूर कर एक कुशल नेतृत्व के साथ राज्य को संभाला। देवी अहिल्या बाई इंदौर या होल्कर वंश में नहीं बल्कि पूरे भारत में एक न्यायप्रिय, दानशील और कुशल प्रसाशिका के रूप में जानी जाती हैं। कहा कि सनातन के विस्तार व रक्षा के लिए हम सभी को रानी अहिल्याबाई होल्कर के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। कहा सनातन के विस्तार के लिए रानी अहिल्याबाई होलकर के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में आज की पीढ़ी को जानना आवश्यक है। अध्यक्षता करते हुए जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने कहा कि पहले रही सरकारों ने अहिल्याबाई होल्कर को पूरी तरह से भुला दिया। लेकिन भारतीय जनता पार्टी गांवों से लेकर शहरों तक उनके द्वारा सनातन को बचाने के लिए किए गए कार्यों से लोगों को परिचय कराएगी। बताया कि अहिल्याबाई होलकर जन्म त्रिशताब्दी स्मृति अभियान के अन्तर्गत भारतीय जनता पार्टी 21 से 31 मई तक नौ प्रकार के कार्यक्रम करने जा रही है।जिसकी रुपरेखा तैयार हो गई है। फाजिलनगर विधायक सुरेंद्र सिंह कुशवाहा, तमकुही राज विधायक डॉ असीम राय, पूर्व जिलाध्यक्ष डॉ प्रेमचंद मिश्र, लल्लन मिश्र, जगदम्बा सिंह, अखिलेश मिश्र और पूर्व विधायक रजनीकांत मणि त्रिपाठी ने भी सम्बोधित किया। संचालन जिला उपाध्यक्ष व अभियान संयोजक विजय कुमार शुक्ल ने किया। इस अवसर पर राणा प्रताप राव, सुदर्शन पाल, राधेश्याम पाण्डेय, राजनेति कश्यप, सतीश चौधरी, संदीप सिंह, मनोज जायसवाल, रमेश सिंह, विनोद भारती, विवेकानंद शुक्ल, रामगोपाल गुप्ता,बाबू नन्दन सिंह, अतुल श्रीवास्तव, विश्वरंजन कुमार आनन्द,नमो नारायण मौर्य,रुपम सिंह, सरिता मिश्र, धन्नजय तिवारी,बंका सिंह, डॉ कन्हैया शर्मा सहित सैकड़ों पदाधिकारी उपस्थित थे।

ऑपरेशन सिंदूर देश की शक्ति का प्रतीकः संगीता यादव

संवाददाता

कुशीनगर। नगर के शहीद स्मारक पार्क में राज्यसभा सांसद संगीता यादव और नपाप अध्यक्ष किरन राकेश जायसवाल ने एक दूसरे को सिंदूर लगाने के बाद भाजपा महिला मोर्चा की कार्यकताओं ने एक दूसरे को सिंदूर लगाकर भारतीय सेना एवं केंद्र की मोदी सरकार को धन्यवाद दिया। राज्यसभा सदस्य संगीता यादव ने कहा कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जबाब भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से दिया। केंद्र की मोदी सरकार के मजबूत निर्णय के चलते पाकिस्तान में घुस कर आतंकी अड्डों को तबाह करने का कार्य हमारी सेना ने किया। नपाप अध्यक्ष किरन राकेश जायसवाल ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर देश की शक्ति के प्रतीक है।पूरा देश ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर गर्व कर रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने सेना को खुली छूट दी जिससे सेना का मनोबल बढ़ा। इस क्रम में डॉ बीना कुमार, डॉ सीमा गुप्ता ,रूपम सिंह , रानी शुक्ला ने भी अपने सम्बोधन में सेना एवं केंद्र सरकार के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान अवसर फूलवन्ती चौहान, सुमन कुशवाहा, रितु सिंह, सुगंधा सिंह, रंजीता सिंह, अंजू कुशवाहा, रिम्पा सिंह, लीलावती शुक्ला, चंदा मद्देशिया, अंजली कुशवाहा, उषा सिंह, ममता निषाद, सभासद राजेश मद्देशिया, राहुल सोनी, सोनू चौहान, कृष्णा जायसवाल मौजूद रहे।

मरीजों के लिए मिल का पत्थर साबित होगा हमराही हॉस्पिटल एंड ट्रामा सेंटर

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। नेशनल हाईवे गोपालगढ़ ओवर ब्रिज के समीप हमराही मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल एंड ट्रामा सेंटर का शुभारंभ अतिथियों ने फीता काट किया। रविवार को हॉस्पिटल का उद्घाटन नगरपालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि राकेश कुमार जायसवाल, सपा विधानसभा कुशीनगर के पूर्व प्रत्याशी राजेश प्रताप राव उर्फ बंटी राव ने फीता काटकर किया। अपने संबोधन में श्री जायसवाल ने कहा कि अत्याधुनिक सुविधा युक्त अस्पताल नगर में खुलने से मरीजों को दवा, इलाज में काफी सहूलियत होगी। सपा नेता श्री राव ने कहा कि आकस्मिक दुर्घटना में इलाज के लिए लोगों को जाना पड़ता था दूर। अपने शहर में सुविधा मिलने से होगी घायल के प्राण की रक्षा। घायलों की जान बचाने में यह हॉस्पिटल मिल का पत्थर साबित होगा।सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष कुशीनगर इलियास अंसारी ने कहा कि अपने मरहूम अब्बा के बरसी के मौके पर डॉ इरफान हैदर जाफरी ने हॉस्पिटल और ट्रामा सेंटर खोलकर नेक काम किया है।अतिथियों का स्वागत और आभार व्यक्त करते हुए डा. इरफान हैदर जाफरी ने बताया कि ओपीडी/आईपीडी में 24 घंटे मरीज भर्ती करने की सुविधा है। इस दौरान इमरान हैदर जाफरी, डा घनश्याम तिवारी, रमेश सिंह, गुलाब सिंह, छेदी अंसारी, दीपक चौधरी, लल्लन अंसारी, मकबूल अहमद जाफरी, मुकेश शर्मा, सद्दाम हुसैन, वसीम अहमद, नसीम अहमद, ग्रामप्रधान निजाम अंसारी, शहादत अंसारी, डॉ धनंजय सिंह, पुनीत पाण्डेय, सुमित जायसवाल, सत्तार अंसारी, डीआर एक्स फखरुद्दीन अंसारी आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त डायरी

हमीरपुर की राठ पुलिस ने अवैध असलहे के साथ अभियुक्त को किया गिरफ्तार

संवाददाता

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर की राठ पुलिस को अपराधियों की धरपकड़ के लिये चलाये जा रहे अभियान के तहत 24 वर्षीय अभियुक्त संदीप पुत्र किशन निवासी ग्राम चिल्ली राठ को बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे के सर्विस रोड चिल्ली मोड के पास से एक अवैध तमंचा 315 बोर के साथ ही एक जिन्दा कारतूस 315 बोर सहित गिरफ्तार करने में कामयाबी मिली, राठ पुलिस ने अभियुक्त के खिलाफ मु0अ0सं0 232/2025 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट के तहत दर्ज कर अदालत में पेश किया गया, अभियुक्त के खिलाफ राठ कोतवाली में आबकारी एक्ट के तहत एक मामला पहले से ही दर्ज है,जबकि अभियुक्त को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में खासतौर से एस आई शिवम दत्त, कांस्टेबल अभिषेक राजपूत सहित कांस्टेबल अमित कुमार शामिल रहे।

हमीरपुर खनिज अधिकारी मेहरबान तो 25/25 झिटकिरी मोरम खण्ड के पट्टाधारक दिनेश अग्रवाल बने पहलवान

संवाददाता

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के तेज तर्रार और ईमानदार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कह रहे हैं कि मोरम का अवैध खनन किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा, वहीं हमीरपुर खनिज अधिकारी की मेहरबानी के दम पर मोरम खण्ड- 25/25 झिटकिरी के पट्टाधारक दिनेश कुमार अग्रवाल और इनके गुर्गे भारी भरकम प्रतिबंधित पोकलैण्ड मशीनों से मोरम का अवैध खनन करने के साथ ही खुलेआम मोरम की ओवरलोडिंग और अवैध परिवहन कर योगी सरकार को खुली चुनौती देने के साथ ही शासन को लगा रहे हैं लाखों के राजस्व का चूना,जबकि एनजीटी के नियमों की खुलेआम उड़ा रहे धज्जियाँ। जबकि इनके खण्ड में लगे बोर्ड में पट्टे की अवधी और रुआयल्टी मूल्य का दूर दूर तक कुछ पता नहीं है। अब देखना ये होगा कि इस खण्ड के पट्टाधारक दिनेश अग्रवाल के खिलाफ हमीरपुर के तेज तर्रार जिलाधिकारी घनश्याम मीना कब करते हैं

अटारी-वाघा सीमा पर फिर से शुरू हुआ कारोबार

पाकिस्तानी सीमा पर फंसे ट्रकों के विवाद के बाद भारत में प्रवेश की अनुमति मिली

अटारी।

जम्मू-कश्मीर में हुए आतंकवादी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापार पूरी तरह ठप हो गया था, लेकिन अटारी-वाघा सीमा के रास्ते पुनः खुलने से व्यापारिक गतिविधियां फिर से चलने लगी हैं। इस सीमा के माध्यम से भारत और अफगानिस्तान के बीच होने वाला व्यापार फिर से गति पकड़ रहा है। पाकिस्तानी सीमा पर फंसे ट्रकों के विवाद के बाद अटारी-वाघा सीमा के माध्यम से भारत में प्रवेश की अनुमति दी गई। इसके बाद लगभग 50 ट्रक और भारतीय ट्रकों ने सीमा पार करके व्यापारिक गतिविधियों को फिर से जीवंत किया। भारत और अफगानिस्तान के बीच यह मार्ग सूखे मेवों और जड़ी-बूटियों के आयात के लिए महत्वपूर्ण है। इसके बंद हो जाने से व्यापारियों को बड़ा नुकसान हुआ था, लेकिन अब उन्हें राहत मिली है। इस सीमा के खुलने से व्यापारियों में आर्थिक सुधार होने की उम्मीद है। भारत और अफगानिस्तान के बीच व्यापार का यह मार्ग बेहद महत्वपूर्ण है। अटारी-वाघा सीमा भारत और तालिबान शासित अफगानिस्तान के बीच एकमात्र स्वीकृत व्यापारिक भूमि मार्ग है। भारत अफगानिस्तान से मुख्य रूप से सूखे मेवे और जड़ी-बूटियां आयात करता है, जो अधिकतर कंधार और काबुल से आते हैं। इस मार्ग के बंद होने से न केवल व्यापारियों को आर्थिक नुकसान हुआ, बल्कि बाजार में इन सामानों की उपलब्धता पर भी असर पड़ा।

एजीआर मामलाः सुप्रीम कोर्ट से वोडाफोन आइडिया के बाद अब एयरटेल ने लगाई गुहार

भारती एयरटेल समूह पर 43,980 करोड़ की पर्याप्त एकमुश्त देनदारी लगाई गई

नई दिल्ली।

वोडाफोन आइडिया के बाद अब भारती एयरटेल और भारती हेक्साकॉम ने समायोजित सकल राजस्व (एजीआर) बकाया मामले में राहत की मांग कर सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। इस याचिका में कहा गया है कि एजीआर बकाया ने दोनों भारती कंपनियों की दूरसंचार क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी बने रहने और अपने परिचालन को बनाए रखने की क्षमता को प्रभावित किया है। यह हमारे भे विष्य पर असर डाल सकता है। याचिकाकर्ता कंपनियों ने एक दशक में लाइसेंस शुल्क और मुकदमे के जरिए लगभग 75,000 करोड़ रुपये का सरकारी खजाने में योगदान दिया है। इसके साथ ही जीएसटी भी दिया गया है, जो वित्त वर्ष 2024-25 में लगभग 22,000 करोड़ रुपये था। एजीआर फैसले के जरिए भारती एयरटेल समूह पर 43,980 करोड़ रुपये की पर्याप्त एकमुश्त देनदारी लगाई गई और इसे 31 मार्च, 2031 को समाप्त होने वाली 10 साल की अवधि के भीतर सरकार को चुकाया जाना है। मूल राशि 9,235 करोड़ रुपये ब्याज, जुर्माना और जुर्माने पर ब्याज जोड़कर 43,980 करोड़ रुपये हो गई। इससे पहले गुरुवार को वोडाफोन आइडिया ने सुप्रीम कोर्ट में एक नई याचिका दायर की, जिसमें एजीआर बकाया से जुड़े ब्याज, जुर्माने और जुर्माने पर ब्याज में 45,000 करोड़ रुपये से अधिक की छूट की मांग की गई। करीब 20 करोड़ ग्राहकों को सेवा देने वाली इस दूरसंचार कंपनी ने राहत न मिलने पर वित्तीय संकट की चेतावनी दी है। सुप्रीम कोर्ट सोमवार को वोडाफोन आइडिया के मामले की सुनवाई करेगा।

जुलाई से सितंबर के बीच लॉन्च होगा नथिंग फोन (3)

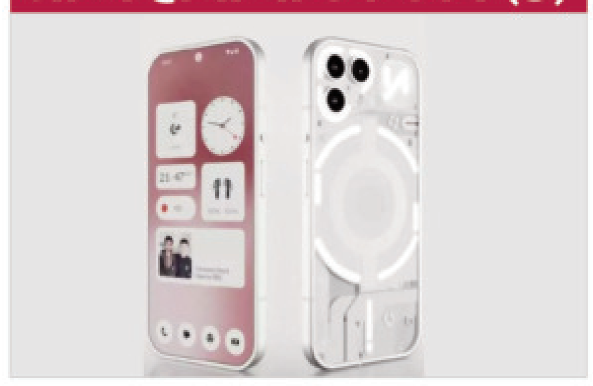

नई दिल्ली।

नथिंग कंपनी का अपकमिंग स्मार्टफोन नथिंग फोन (3) साल 2025 में लॉन्च होगा। इस फोन में एडवांस एआई फीचर्स शामिल होंगे, जो इसे एक प्रीमियम डिवाइस बनाएंगे। कंपनी के सीईओ कार्लपेई ने हाल ही में इसकी पुष्टि की है। एक यूट्यूब वीडियो में इस फोन की झलक भी दिखाई, हालांकि फोन को ब्लर किया गया था। इस वीडियो में उन्होंने फोन के प्राइस और लॉन्च डेट का खुलासा किया है। नथिंग फोन (3) को 2025 के तीसरे क्वार्टर यानी जुलाई से सितंबर के बीच लॉन्च किया जाएगा। अगर पिछले साल के लॉन्च को ध्यान में रखा जाए, तो यह संभावना जताई जा रही है कि फोन जुलाई 2025 में लॉन्च होगा, क्योंकि नथिंग फोन (2) जुलाई 2023 में आया था। रिपोर्ट के अनुसार नथिंग फोन (3) को प्रीमियम मटेरियल्स, बेहतर परफॉर्मेंस और एआई-बेस्ड सॉफ्टवेयर के साथ तैयार किया गया है। यह फोन कंपनी का फ्लैगशिप डिवाइस होगा और इसमें डिज़ाइन के साथ-साथ यूजर एक्सपीरियंस भी शानदार होगा। नथिंग फोन (3) की कीमत करीब 800 जीबीपी (लगभग रुपए 90,500) हो सकती है। पिछले मॉडल, नथिंग फोन (2) के 12जीबी + 256जीबी वेरिएंट की कीमत 629 जीबीपी (लगभग रुपए 71,000) थी और भारत में इसकी कीमत 49,999 रुपये थी। ऐसे में उम्मीद है कि फोन (3) का 12जीबी + 256जीबी वेरिएंट भारत में 60,000 रुपये से अधिक हो सकता है

जगुआर लैंड रोवर ने 7.7 बिलियन पाउंड का रेवेन्यू दर्ज किया

नई दिल्ली।

वित्तीय वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) ने 7.7 बिलियन पाउंड का रेवेन्यू दर्ज किया। यह रेवेन्यू पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 1.7प्रतिशत कम है। ब्रिटिश ऑटोमेकर ने लगातार दसवीं तिमाही लाभ दर्ज कर अपनी मजबूती साबित की है। इस सफलता के पीछे कंपनी के कुछ प्रमुख प्रोडक्ट्स की मजबूत बिक्री का बड़ा हाथ है। खासतौर पर लैंड रोवर डिफेंडर की बिक्री इस वित्तीय वर्ष में 1,15,404 यूनिट तक पहुंचकर इतिहास में सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गई है। डिफेंडर भारत में भी लग्जरी ऑफ-रोडर्स में पसंदीदा बनी हुई है और हाल ही में भारत-यूके के एफटीए समझौते से इसके दाम कम होने की उम्मीद है। मार्च 2025 में लैंड रोवर ने डिफेंडर ऑक्टा को भारत में लॉन्च किया, जिसकी एक्स-शोरूम कीमत 2.59 करोड़ रुपए है। इस वर्जन में 4.4-लीटर ट्विन-टर्बोचार्ज्ड वी 8 इंजन दिया गया है, जो माइल्ड-हाइब्रिड टेक्नोलॉजी से लैस है। यह इंजन 626 हॉर्सपावर और 800 एनएम टॉर्क प्रदान करता है, जिससे यह डिफेंडर का अब तक का सबसे पावरफुल मॉडल बन गया है। ऑक्टा 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार मात्र 3.8 सेकंड में पकड़ लेता है और अधिकतम 250 किमी/घंटा की स्पीड तक जा सकता है। इसे आठ-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स से लैस किया गया है, साथ ही इसमें कई मैकेनिकल और चेसिस अपग्रेड भी शामिल हैं। एफवाय25 में जेएलआर के इलेक्ट्रिफाइड ऑप्शंस की मांग भी बढ़ी है, खासकर प्लग-इन हाइब्रिड (पीएचईवी) मॉडल में 21.7प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई। रेंज रोवर नेमप्लेट पीएचईवी की मांग में 38.2प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ नेतृत्व किया। इसके अलावा, रेंज रोवर स्पोर्ट ने 19.7 प्रतिशत की साल-दर-साल थोक बिक्री हासिल की।

जीईईएल ने अपनी ब्रांड पहचान को नया रूप देने की घोषणा की

नया कारपोरेट लोगो लॉन्च, बाकी ब्रांड्स के नए लोगो 8 जून को जारी किए जाएंगे

नई दिल्ली।

ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइज़ेज़ लिमिटेड (जीईईएल) ने अपनी ब्रांड पहचान को नया रूप देते हुए अपने कॉर्पोरेट और चैनलों के लोगो को नया लुक देने की घोषणा की है।

कंपनी के सीईओ ने यह घोषणा ज़ी सिने अवॉर्ड्स 2025 के दौरान की। नए लोगो ज़ी टीवी, ज़ी5, ज़ी म्यूज़िक कंपनी और ज़ी स्टूडियोज़ जैसे ब्रांड्स के लिए जारी किए जाएंगे।

कंपनी के अनुसार ज़ी का नया कॉर्पोरेट लोगो पहले ही लॉन्च किया जा चुका है, जबकि बाकी ब्रांड्स के नए लोगो 8 जून को जारी किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हम विकास के एक नए दौर में प्रवेश कर रहे हैं, जिसमें कंटेंट और टेक्नोलॉजी पर खास ध्यान दिया जाएगा। हमारा नया लोगो भविष्य की सोच को दर्शाता है-जो कि तेज़, आधुनिक और लचीला है। यह हमारे संकल्प को दर्शाता है कि हम नई तकनीकों को अपनाकर दर्शकों को बेहतर अनुभव देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

कंपनी ने यह भी बताया कि उसका लक्ष्य टेक्नोलॉजी को हर स्तर पर जोड़ना है-चाहे वह कंटेंट बनाना हो, उसका वितरण हो या उससे कमाई करना। यह कदम कंपनी के लंबे समय के विकास और मुनाफे के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उठाया गया है। जनवरी से मार्च तिमाही के परिणामों के दौरान कंपनी ने कहा था कि ऐ बिटा मार्जिन बढ़ाने के लिए अब लागत में कटौती की कोई गुंजाइश नहीं है। नुकसान को घटाने के लिए कंपनी अब केवल राजस्व में वृद्धि पर ध्यान देगी।

क्लिकः भारत में ग्राहक आधार 1,000 को पार करने के लिए तैयार

ऑरलैंडो।

कृत्रिम मेधा क्षेत्र के अग्रणी कंपनी क्लिक ने भारतीय बाजार में वृद्धि को लेकर आशान्वित होने का इजहार किया है। कंपनी के एक अ धिकारी ने बताया कि क्लिक ने पिछले दो साल में अपने कारोबार को दोगुना किया है और ग्राहकों की संख्या अब 800 से भी ज्यादा हो गई है। उनके अनुसार इस साल कंपनी का ग्राहक आधार 1,000 को पार कर जाएगा। उन्होंने डेटा विश्लेषण और एआई रणनीति में भागीदारी के लिए कई छोटे और मझोले कारोबारों के साथ भविष्य की योजना की बात की। उन्होंने कहा कि क्लिक के भारतीय शाखा में मात्र एक्सपैंशन हुई है और कर्मचारी संख्या में भी वृद्धि हुई है। कंपनी ने पिछले 16 माह में भारत में कर्मचारियों की संख्या दोगुनी कर दी है और नियुक्तियों का कार्य जारी रहेगा। वे भारतीय बाजार में तेजी से आगे बढ़ने के संकेत का समर्थन करते हुए निवेश के साथ एक वीरपंथी किरदार बनाने का दावा कर रहे हैं। क्लिक ने हाल ही में भारत में एक बड़े निवेश के साथ डेटा सेंटर खोला है, जो भारतीय बाजार के लिए नई सेवाएं प्रदान करेगा। यह कॉन्फिगरेशन के साथ क्लाउड ढांचे को बढ़ाने और भारतीय बाजार के साथ प्रतिबद्धता को गहरा करने में मदद करेगा।

भारत के कोयले का आयात 2024-25 में घटकर 26.35 करोड़ टन रहा

नई दिल्ली।

भारत में कोयले का आयात वित्त वर्ष 2024-25 में 1.7 प्रतिशत घटकर 26.35 करोड़ टन रहा है। इसके सम्बंधित पिछले वित्त वर्ष, 2023-24, में देश कोयले का 26.82 करोड़ टन आयात करता था। इस वर्ष गैर-कोकिंग कोयले का आयात 16.71 करोड़ रहा, जो पिछले वर्ष की 17.59 करोड़ टन से कम है। कोकिंग कोयले का आयात 5.40 करोड़ टन है जो पिछले वर्ष की 5.72 करोड़ टन से कम है। एक ई-कॉमर्स मंच द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार मार्च में कोयले का आयात 2.27 करोड़ टन रहा जो पिछले वर्ष की 2.39 करोड़ टन की मुकाबला है। मार्च में गैर-कोकिंग कोयले का आयात 1.48 करोड़ टन है जो 2023-24 के समान महीने की 1.53 करोड़ टन का है। मार्च में कोकिंग कोयले का आयात 44.1 लाख टन है जो 2023-24 के समान महीने की 53.4 लाख टन से कम है। वित्त वर्ष 2024-25 में कुल कोयले उत्पादन एक अरब टन के आंकड़े को पार कर गया है। अस्थायी आंकड़ों के अनुसार, 2024-25 में कोयले उत्पादन 104.75 करोड़ टन है, जो 2023-24 में 99.78 करोड़ टन का था। इस तरह वित्त वर्ष के दौरान कोयले का उत्पादन 4.99 प्रतिशत बढ़ गया है।

बीते वित्त वर्ष में भारत के स्मार्टफोन निर्यात ने पेट्रोलियम उत्पादों, हीरे को पछाड़ा

2024-25 में स्मार्टफोन निर्यात 55 प्रतिशत के उछाल के साथ 24.14 अरब डॉलर पर

नई दिल्ली।

पिछले तीन साल में भारत का स्मार्टफोन निर्यात पांच गुना हो गया है। वहीं इस दौरान जापान को निर्यात चार गुना हो गया है। सरकारी आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। इस तरह स्मार्टफोन निर्यात ने देश से पेट्रोलियम उत्पादों और हीरे के निर्यात को पीछे छोड़ दिया है। आंकड़ों के अनुसार, 2024-25 में स्मार्टफोन निर्यात 55 प्रतिशत के उछाल के साथ 24.14 अरब डॉलर पर पहुंच गया, जो 2023-24 में 15.57 अरब डॉलर और 2022-23 में 10.96 अरब डॉलर था। बीते वित्त वर्ष में अमेरिका, नीदरलैंड, इटली, जापान और चेक गणराज्य शीर्ष पांच देश रहे जहां स्मार्टफोन निर्यात में सबसे ऊंची वृद्धि दर्ज हुई है। अकेले अमेरिका को 2024-25 में स्मार्टफोन का निर्यात 10.6 अरब डॉलर का हो गया। अमेरिका को स्मार्टफोन का निर्यात 2022-23 में 2.16 अरब डॉलर और 2023-24 में 5.57 अरब डॉलर रहा था। जापान को निर्यात में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। जापान को निर्यात 2022-23 के 12 करोड़ डॉलर से 2024-25 में 52 करोड़ डॉलर हो गया। आंकड़ों के अनुसार नीदरलैंड को निर्यात 2022-23 के 1.07 अरब डॉलर से बढ़कर 2024-25 में 2.2 अरब डॉलर हो गया।इसी तरह, इटली को निर्यात 72 करोड़ डॉलर से बढ़कर 1.26 अरब डॉलर पर पहुंच गया। चेक गणराज्य को भी निर्यात 65 करोड़ डॉलर से बढ़कर 1.17 अरब डॉलर हो गया।

सेंसेक्स की 9 बड़ी कंपनियों का मार्केट कैप 3.35 लाख करोड़ बढ़ा

रिलायंस, एचडीएफसी और टीसीएस ने बढ़ाया बाजार में दबदबा

मुंबई।

बीते सप्ताह सेंसेक्स की टॉप 10 सबसे बड़ी कंपनियों में से 9 के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में कुल मिलाकर 3.35 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई। इस वृद्धि में सबसे बड़ा योगदान रिलायंस इंडस्ट्रीज का रहा। रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन 1.06 लाख करोड़ रुपये बढ़कर 19.71 लाख करोड़ रुपये हो गया।

यह अब भी देश की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी हुई है। आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 46,306.99 करोड़ रुपये की बढ़त के साथ 10.36 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। टीसीएस ने 43,688.4 करोड़ रुपये जोड़े, जिससे उसका कुल मूल्यांकन 12.89 लाख करोड़ रुपये हो गया। इन्फोसिस का मूल्य 34,281.79 करोड़ रुपये बढ़कर 6.60 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। एचडीएफसी बैंक की हैसियत 34,029.11 करोड़ रुपये की बढ़त के साथ 14.80 लाख करोड़ रुपये पर पहुंची। बजाज फाइनेंस का मार्केट कैप 32,730.72 करोड़ रुपये बढ़कर 5.69 लाख करोड़ रुपये हो गया। आईटीसी को 15,142.09 करोड़ रुपये की बढ़त मिली, जिससे उसका मूल्यांकन 5.45 लाख करोड़ रुपये हो गया। भारतीय स्टेट बैंक की बाजार हैसियत 11,111.15 करोड़ रुपए बढ़कर 7.06 लाख करोड़ रुपये रही। हिंदुस्तान यूनिलीवर का मूल्य 11,054.83 करोड़ रुपये बढ़कर 5.59 लाख करोड़ रुपये हो गया। इन सभी के विपरीत भारती एयरटेल का बाजार मूल्यांकन 19,330.14 करोड़ रुपये घट गया और यह 10.34 लाख करोड़ रुपये रह गया। प्रमुख 10 कंपनियों की रैंकिंग में रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल, भारतीय स्टेट बैंक, इन्फोसिस, बजाज फाइनेंस, हिंदुस्तान यूनिलीवर और आईटीसी रहीं।

टाटा मोटर्स की इलेक्ट्रिक वाहन पर बड़ा दांव लगाने की तैयारी

टाटा मोटर्स ने 2024-25 में करीब 65,000 इलेक्ट्रिक वाहन बेचे

नई दिल्ली।

टाटा मोटर्स का लक्ष्य घरेलू यात्री वाहन बाजार में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) को मुख्यधारा में लाने का है। अपनी इस योजना के तहत कंपनी ईवी श्रृंखला को मजबूत करने और साथ ही मौजूदा मॉडल के लिए मूल्य को बढ़ाने का प्रयास कर रही है। मुंबई की यह प्रमुख वाहन कंपनी चालू वित्त वर्ष में हैरियर.ईवी और उसके बाद सिएरा.ईवी उतारने की तैयारी कर रही है। साथ ही कंपनी अपने मौजूदा मॉडल में भी कई तरह के सुधार करने की योजना बना रही है। टाटा मोटर्स ने 2024-25 में करीब 65,000 इलेक्ट्रिक वाहन बेचे हैं। यह आंकड़ा 2023-24 की तुलना में 10 प्रतिशत कम है। तिमाही नतीजों के बाद निवेशक प्रस्तुतीकरण में कंपनी ने कहा कि हम नए मॉडल के साथ ईवी पोर्टफोलियो को मजबूत करने जा रहे हैं। साथ ही मौजूदा मॉडल के लिए भी मूल्य बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं। कंपनी का इरादा इलेक्ट्रिक वाहनों को मुख्यधारा में लाने है। इसके लिए कंपनी बाजार विकास और पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करेगी।

ट्रंप ने फेड पर किया हमला, पॉवेल की इस्तीफा की मांग

जेरोम पॉवेल नहीं हो रहे टस से मस

वाशिंगटन।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने संकेतों के साथ एक बार फिर फेडरल रिजर्व के चेयरमैन जेरोम पॉवेल पर हमला बोला है। ट्रंप ने फेड के ब्याज दरों में कटौती की मांग की और पॉवेल को उनके मौजूदा कार्यकाल से पहले हटाने की धमकी दी। यह तनातनी के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण मोड़ हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर भारी असर पड़ सकता है। ट्रंप का मानना है कि कम ब्याज दरें अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगी, जबकि पॉवेल ने ऐसे कदमों की चेतावनी दी है कि इससे महंगाई बढ़ सकती है। इस तनातनी के बीच ट्रंप ने पॉवेल को मेजर लूजर कहकर भी मामूली भाषा में संबोधित किया है। यह विवाद अमेरिकी राजनीति के दौरान एक और रोमांचक घटना बन गया है, जिसके परिणामों का सामर्थ्यक असर पूरी दुनिया देख रही है। इस संघर्ष के बीच, पॉवेल ने साफ किया है कि वे अपनी पदवी पर कटौती का विचार नहीं करेंगे और उन्हें इस्तीफा देने का कोई इरादा नहीं है। ट्रंप ने उनकी योग्यता पर सवाल उठाया है, लेकिन पॉवेल ने प्रधान्य देने का इरादा जताते हुए इस संघर्ष में निष्ठा प्रकट की है।

जब ट्रंप से पूछा गया कि क्या वह पॉवेल को 2026 से पहले हटाएंगे, तो उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, नहीं, ऐसा क्यों करूंगा? मुझे जल्द ही उन्हें बदलने का मौका मिल जाएगा। ट्रंप भले ही पॉवेल को न हटाने की बात कह रहे हो, लेकिन एक सच्चाई यह भी है कि वे चाहकर भी ऐसा कर नहीं सकते। अगर वे ऐसा करते हैं तो कानूनी पचड़े में पड़ जाएंगे और इससे फजीहत हो सकती है। इसलिए पॉवेल को झेलना ट्रंप की मजबूरी है।

वेदांता लिमिटेडः 20 अरब डॉलर की परियोजनाओं के क्रियान्वयन में कंपनियों की रुचि

नई दिल्ली।

दुनिया की कई परामर्शक कंपनियों ने वेदांता लिमिटेड की कई क्षेत्रों में फैली 20 अरब डॉलर की विस्तार परियोजनाओं को लागू करने में रुचि दिखाई है। प्रमुख कंपनी चालू तिमाही में परामर्शक कंपनी का चयन करेगी। वेदांता अगले तीन साल में अपने परिचालन का महत्वपूर्ण विस्तार करने की योजना बना रही है, क्योंकि यह चार इकाइयों- वेदांता एल्युमीनियम, तेल और गैस, बिजली, और लौह एवं इस्पात में पुनर्गठन कर रही है। वेदांता लिमिटेड के एक अ धिकारी ने बताया कि वे एक वैश्विक रुचि पत्र जारी करेंगे और कुछ सप्ताह के भीतर भागीदार का चयन करेंगे। कंपनी अगले तीन साल में धातु, खनन, और हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में 20 अरब अमेरिकी डॉलर खर्च करेगी। वेदांता के चेयरमैन ने इससे पहले कहा था कि कंपनी विविध कारोबार के विभाजन के बाद संपत्ति प्रबंधन से संपत्ति की मालिक बनेगी। कंपनी अपने संपत्ति आधार को मजबूत कर रही है और वैश्विक अगुवा के रूप में स्थापित होने का प्रयास कर रही है। धातु क्षेत्र की दिग्गज कंपनी की आमदनी 41,216 करोड़ रुपये हो गई है। इसमें मार्च में समाप्त तिमाही में 3,483 करोड़ रुपये का आकलन शामिल है, जो पिछले साल की सामान्यतः 1,369 करोड़ रुपये से अधिक है।

ईबीपी मंच पर इलेक्ट्रॉनिक बुक व्यवस्था अनिवार्य

ईबीपी मंच की दक्षता और सुरक्षा को बढ़ाने में मिलेगी मदद

नई दिल्ली।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने 20 करोड़ रुपये या उससे अधिक के निजी नियोजन के लिए ईबीपी मंच पर इलेक्ट्रॉनिक बुक व्यवस्था को अनिवार्य कर दिया है। यह प्रावधान ईबीपी मंच की दक्षता और सुरक्षा को बढ़ाने में मदद करेगा। सेबी के नए परिपत्र के अनुसार, अब निजी नियोजन के लिए 20 करोड़ रुपये या उससे अधिक के निर्गम आकार की ऋण या बॉन्ड प्रतिभूतियों, एनसीआरपीएस और म्यूनिसिपल बॉन्ड जैसे अनुभागों के लिए भी ईबीपी मंच का उपयोग अनिवार्य होगा। अब तक निर्गम आकार वाले बॉन्ड प्रतिभूतियों के सभी निजी नियोजन के लिए ईबीपी मंच का प्रयोग अनिवार्य था, लेकिन अब रीट और इनविट भी इसमें शामिल होंगे। सेबी ने इसमें इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (इनविट) और रियल एस्टेट इन्फ्रास्ट्रक्चर ट्रस्ट (आरईआईटी) को भी शामिल कर दिया है। इस पहल से इलेक्ट्रॉनिक बुक प्रदाता के मंच की महत्वपूर्णता और प्रभाव बढ़ेगा।

बिहार में डबल मर्डर से सनसनी

दिनदहाड़े पिता-पुत्र को गोलियों से भूना

वजीरगंज(गयाजी)। गया जिले के वजीरगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत नगर पंचायत के दखिनगांव में एक सनकी युवक ने शनिवार को अपने ही चाचा 65 वर्षीय अशोक सिंह एवं उनके पुत्र 30 वर्षीय कुणाल कुमार को दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी। सूचना पर अपर पुलिस अधीक्षक अनवर जावेद अंसारी एवं वजीरगंज डीएसपी सुनील कुमार पांडे पुलिस बल के साथ पहुंचे। इस मामले की छानबीन में जुट गए।

डीएसपी ने बताया कि घटनास्थल से देसी पिस्टल का दो खोखा बरामद हुआ है। दोनों के शव को पोस्टमार्टम के लिए एएनएमसीएच भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि स्थल पर ग्रामीणों से मिल रहे संकेत के अनुसार प्रथम दृष्टया हत्या का कारण जमीनी विवाद सामने आ रहा है। घटना को अंजाम देने में मृतक अशोक सिंह का भतीजा नीतीश कुमार को चिह्नित किया गया है। हत्या के बाद वह फरार है। जिसकी गिरफ्तारी के लिए वजीरगंज थानाध्यक्ष द्वारा लगातार छापामारी की जा रही है।

स्थल पर जमे ग्रामीणों के अनुसार नीतीश ने पहले अपने चाचा अशोक सिंह को घर में घुसकर गोली मारी, फिर करीब पांच सौ मीटर दूर अवस्थित मोटर पंप के केबिन में कुणाल बैठा था, जहां पहुंचकर उसे भी गोली मारकर वहां से फरार हो गया। पिता-पुत्र की हत्या से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई। जितने मुंह उतनी बातें होने लगी। दोनों की हत्या के बाद उनके घर में कोई वारिस नहीं बचा। उनकी एक बेटी विवाहित है जो ससुराल में रहती है, उन्हें घटना की सूचना देकर यहां बुलाया गया, फिर उनके बयान पर पुलिस ने प्राथमिकी कर आगे की कार्रवाई प्रारंभ की है।

ग्रामीण सूत्रों के अनुसार कुणाल एक प्रतिभावान छात्र था, जो दिल्ली में रहकर यूपीएससी की तैयारी कर रहा था। शनिवार को भी वह दिल्ली जाने के लिए तैयार था। पड़ोस के एक ग्रामीण ने बताया कि कुछ ही देर बाद वह दिल्ली के लिए निकलने वाला था। इसी बीच उसके पिता अशोक सिंह एवं नीतीश के साथ जमीनी मामले को लेकर बहस होने लगी, लेकिन कुणाल इस बहस में नहीं पड़कर घर से कुछ दूरी पर अवस्थित मोटर पंप के केबिन में चला गया। लेकिन ईश्वर को यह मंजूर नहीं था इसमें बहस से अलग हो जाने के बाद भी मौत उसका पीछा नहीं छोड़ा।

वजीरगंज थाना क्षेत्र के दखिनगांव निवासी अशोक सिंह पिता सबित सिंह एवं कुणाल सिंह पिता अशोक सिंह हत्याकांड को गयाजी के वरीय पुलिस अधीक्षक आनंद कुमार ने गंभीरता से लेते हुए अपर पुलिस अधीक्षक, गयाजी के मार्गदर्शन एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी वजीरगंज के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। एफएसएल एवं तकनीकी टीम को भी घटनास्थल के निरीक्षण एवं साक्ष्य संकलन के लिए भेजा गया। प्रारंभिक जांच में यह तथ्य उजागर हुआ है कि मृतक पिता-पुत्र थे और उनकी हत्या जमीनी विवाद के कारण उनके ही भाई द्वारा की गई है। विशेष टीम इस मामले के सभी पहलुओं पर विस्तृत अनुसंधान एवं आसूचना संकलन कर लगातार छापामारी कर रही है। जल्द ही इस घटना में संलिप्त अपराधियों को गिरफ्तार किया जाएगा।

वरीय पुलिस अधीक्षक ने इस कांड में गठित विशेष टीम के साथ स्वयं घटनास्थल पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने घटनास्थल एवं आसपास के क्षेत्रों से महत्त्वपूर्ण साक्ष्य संकलित करने के निर्देश दिए। साथ ही, स्थानीय निवासियों एवं मृतक के परिजनों से प्राप्त जानकारी का गहन विश्लेषण किया गया। प्रारंभिक जांच में यह तथ्य स्पष्ट हुआ है कि मृतक पिता-पुत्र थे और उनकी हत्या जमीनी विवाद के कारण उनके ही परिवार के सदस्य द्वारा की गई है।

पत्नी के मायके जाने से आहत युवक ने लगाई फांसी

जमुई । पारिवारिक तनाव के चलते एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। यह घटना खैरा थाना क्षेत्र के गंगटी बिशनपुर गांव से सामने आई है। मृतक की पहचान 23 वर्षीय अमन कुमार साह पिता रंजीत साह के रूप में हुई है। अमन की शादी छह महीने पहले दादपुर निवासी अर्चना से हुई थी। मृतक के पड़ोसी मिथुन रजक ने बताया कि घटना शनिवार देर रात की है। मृतक रात करीब 10 बजे तक अपने पड़ोसी मिथुन रजक के घर बैठा था। इसके बाद वह घर चला गया। रात 11:30 बजे अमन का शव घर की छत पर कड़ी से लटका मिला। परिजनों और ग्रामीणों ने तत्काल खैरा थाना पुलिस को सूचना दी। जानकारी के मुताबिक, अमन की सास की मृत्यु 10 दिन पहले हुई थी। अमन की पत्नी अपनी मां के निधन के बाद बिना सूचना दिए अपने जीजा के साथ मायके चली गई थी। इस बारे में अमन को कोई जानकारी नहीं दी। इससे अमन बेहद आहत और तनावग्रस्त था। पड़ोसियों का कहना है कि दोनों के बीच कुछ दिनों से विवाद भी चल रहा था। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय लोगों ने खैरा थाना पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए जमुई सदर अस्पताल भेज दिया गया।

मां-पिता ने नाबालिग बेटी का किया मर्डर

17 साल की लड़की का मर्डर 8 दिन पहले उसके परिजनों ने कर दिया। फिर साड़ी में शव को लपेट कर पंचाने नदी में फेंक दिया। 6 दिन पहले पुलिस ने लाश बरामद की। कल लाश की पहचान हुई। लड़की अपने पसंद से शादी करना चाहती थी। जिसका विरोध उसके घर वाले कर रहे थे। पिछले कुछ समय से इस बात को लेकर हमेशा घर में झगड़ा हो रहा था। पिता चाहते थे कि जमीन बेचकर बेटी की शादी कर दें। जबकि जमीन बेचने का विरोध दोनों भाई करते थे। 2 दिन पहले रहुई पुलिस को साड़ी में लिपटा शव मिला था। पुलिस को आसपास के गांव में पूछताछ और सोर्सेस से पता चला कि महुआबाग खरथुआ निवासी विनोद यादव की बेटी स्वेती कुमारी (17) लापता है। स्वेती पांच भाई-बहनों में सबसे छोटी थी। पुलिस जांच में यह बात सामने आई की स्वेती की हत्या 9 मई को ही हुई थी। मारपीट और गला दबाकर मां-पिता, भाई व भाभियों ने मिलकर मर्डर किया था। शव को घर से करीब 200 मीटर दूर पंचाने नदी में साड़ी में लपेट कर फेंक दिया गया। इन्होंने लाश को साड़ी से बांधा था। जिसका टुकड़ा पुलिस को घर में भी मिला। हत्या के करीब 6 दिन बाद मवेशी पालकों की नजर शव पर पड़ी, जब कुछ चरवाहे मवेशी लेकर नदी किनारे गए हुए थे। तब उन्हें तेज दुर्गंध आ रही थी। पास जाकर देखा तो साड़ी में लिपटा हुआ एक शव पड़ा हुआ था। गोकुलपुर पुलिस को इस बात की सूचना दी गई। मौके पर पहुंची गोकुलपुर पुलिस ने रहुई पुलिस को थाना क्षेत्र के नदी में शव होने की जानकारी दी। मौके पर पहुंची रहुई पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम व पहचान के लिए बिहार शरीफ सदर अस्पताल भेज दिया। पुलिस विनोद यादव के घर पहुंची। जहां घर में कोई भी पुरूष मौजूद नहीं था। पुलिस ने श्राद्ध कर्म से संबंधित घर में कुछ वस्तुएं देखी। घर की महिलाओं से पूछताछ पर पता चला कि पुरुष शादी में शामिल होने के लिए गए हैं। लड़की के बारे में घर की महिलाओं से पूछा गया तो उन लोगों ने बताया कि बच्ची की तबीयत खराब हो गई थी। इलाज के क्रम में उसकी मौत हो गई। इसके बाद उसे गंगा में ले जाकर प्रवाह कर दिया गया है। जब प्रवाह किए जाने के स्थान के बारे में पूछा तो महिलाएं हिचकने लगी। पुलिस ने हत्या के आरोप में स्वेती की मां शाकुन देवी और उसकी दो भाभियां बबिता देवी और संगीता देवी को गिरफ्तार किया। जबकि, विनोद यादव और उसके दोनों बेटे धनंजय कुमार और अजय कुमार की तलाश कर रही है। चौकीदार के बयान पर 15 मई को रहुई थाना में मामला दर्ज किया गया था।

प्रशांत किशोर का बड़ा दांव

नीतीश के 'राम' पीके के साथ, आरसीपी सिंह जन सुराज में आए

पटना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार में मंत्री और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे आरसीपी सिंह ने जन सुराज की सदस्यता रविवार को ग्रहण कर ली। पिछले दिनों उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर अपनी नई पार्टी बनाई थी। रविवार को उन्होंने इस पार्टी का विलय प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज में कर दिया। भाजपा में आने के पहले रामचंद्र प्रसाद सिंह जदयू कोटे से केंद्र में मंत्री बने थे। माना जाता है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की मर्जी के खिलाफ तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का साथ देने के कारण जदयू ने उनसे नाता तोड़ लिया था। बाद में जब नीतीश कुमार खुद राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में वापस आए तो आरसीपी सिंह का भाजपा में रहना बेकार साबित हो रहा था। वह बिल्कुल किनारे पड़े थे। प्रशांत किशोर ने इस मौके का फायदा उठाया और उन्हें अपने साथ बुला लिया। आरसीपी सिंह ने बिहार में जनता दल यूनाइटेड के संगठन को खड़ा करने में बेहद अहम भूमिका निभाई थी और माना जा रहा है की पीके की नजर में यही खूबी उनके काम आएगी। पत्रकारों से बातचीत करते हुए आरसीपी सिंह ने कहा कि मैंने अपनी पार्टी आशा (आप सब की आवाज)र का विलय जन सुराज में कर दिया। मैंने जनसुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर का आभार जताता हूं। आरसीपी सिंह ने कहा कि मैंने कभी नहीं सोचा था कि अपनी पार्टी का विलय जनसुराज में करूंगा, लेकिन ऊपरवाले को यही मंजूर था। जनता दल यूनाइटेड के नेताओं से अपील है कि जो लोग नीतीश कुमार की असली सोच से जुड़े थे, वह अब हमारे साथ आ जाएं। क्यों अब जदयू में राजनीति और जनसेवा जैसी कोई चीज नहीं बची। पिछले साल 31 अक्टूबर को सरदार पटेल की जयंती पर जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद सिंह (आरसीपी सिंह) ने अपनी नई पार्टी बनाई थी। इसका नाम उन्होंने 'आसा' रखा था। मतलब समझाते हुए आरसीपी सिंह ने कहा था कि मेरी नई पार्टी का नाम आसा है। इसका मतलब है आप सबकी पार्टी। हमारा झंड तीन रंगों का आयताकार होगा। इसमें सबसे ऊपर हरा, बीच में पीला, नीचे नीला रंग होगा। जब चुनाव आयोग हमें पार्टी सिंबल देगा तो बीच के पीले रंग वाले हिस्से में पार्टी का लोगो काले रंग से आएगा। आरसीपी सिंह ने पीएम नरेंद्र मोदी को भी धन्यवाद दिया था। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने यह भी दावा किया कि 140 लोग अभी ही हमारी पार्टी से चुनाव लड़ने को तैयार थे हमारा संगठन प्रखंड स्तर से लेकर जिला, राज्य स्तर तक होगा।

झोलाछाप डॉक्टर की लापरवाही से

जच्चा-बच्चा की मौत

बेतिया। बिहार के बेतिया में एक झोलाछाप डॉक्टर की लापरवाही से एक महिला और उसके गर्भ में बच्चा दोनों की दर्दनाक मौत हो गई। यह घटना बगहा जिले के रामनगर थाना क्षेत्र के अर्जुन नगर वार्ड नंबर 07 की है। अर्जुन नगर में उस वक्त हड़कंप मच गया जब झोलाछाप डॉक्टर की गलती से दो लोगों की जान चली गई। तौलाहा पंचायत के सिगीर बहुवरी गांव के संदीप राम की पत्नी, चिंता देवी, को प्रसव के समय कुछ दलालों ने फुसलाकर रामनगर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया था। उस अस्पताल में झोलाछाप डॉक्टर उषा सिंह इलाज कर रही थीं। इलाज में हुई बड़ी लापरवाही की वजह से चिंता देवी और उसके गर्भ में बच्चा दोनों की मौत हो गई। बताया गया है कि अस्पताल में सही सुविधा और सही स्टाफ नहीं था। इस घटना के बाद परिजन अस्पताल में खूब हंगामा करते रहे। मृतका के परिजन जब अस्पताल पहुंचे तो उन्होंने वहां खूब हंगामा किया। उन्होंने अस्पताल प्रशासन पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया और विरोध प्रदर्शन किया। परिजन बहुत दुखी थे और रो-रोकर बुरा हाल था। साथ ही, स्थानीय लोग भी बड़ी संख्या में अस्पताल के बाहर जमा हो गए और आरोपी डॉक्टर के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग करने लगे। सूचना मिलने पर रामनगर थाने की पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। थाना प्रभारी ललन कुमार ने अस्पताल को अपने नियंत्रण में लेकर मुख्य द्वार पर ताला लगा दिया। मृतका का शव पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए बगहा अनुमंडल अस्पताल भेज दिया। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए फॉरेंसिक साइंस लैब की टीम को भी बुलाया है, जो पूरे अस्पताल की जांच करेगी।

संक्षिप्त डायरी

उत्तर कोयल नहर परियोजना को मिला नया जीवन

औरंगाबाद। बिहार और झारखंड की सीमाओं को जोड़ती उत्तर कोयल नहर परियोजना, जो बीते पांच दशकों से अधर में लटकी हुई थी, अब फिर से गति पकड़ रही है। इस परियोजना के तहत झारखंड के पलामू जिले के कुटकु डैम में फाटक लगाने का कार्य शीघ्र शुरू होने वाला है। इसके लिए सबसे बड़ी बाधा रहे विस्थापितों के पुनर्वास की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। सात गांवों के 780 विस्थापित किसान परिवारों को केंद्र सरकार द्वारा मुआवजा दिया जा रहा है, जिससे अब परियोजना के पूर्ण क्रियान्वयन का रास्ता साफ होता नजर आ रहा है। उत्तर कोयल नहर परियोजना की शुरूआत वर्ष 1972 में की गई थी, जिसका उद्देश्य झारखंड और बिहार के पलामू, गढ़वा, औरंगाबाद और गया जी जिलों के लाखों हेक्टेयर खेतों को सिंचाई का पानी उपलब्ध कराना था। परियोजना के तहत कुटकु डैम 1993 में ही बनकर तैयार हो गया था, लेकिन पर्यावरणीय नियमों और वन संरक्षण अधिनियम 1980 के कठोर प्रावधानों के चलते इसमें जल संग्रहण के लिए फाटक नहीं लग पाए। नतीजन, परियोजना अधूरी रह गई और केवल बारिश के पानी पर निर्भरता बनी रही। औरंगाबाद के पूर्व सांसद व भाजपा नेता सुशील कुमार सिंह ने बताया कि 1995 से उन्होंने इस परियोजना को धरातल पर लाने के लिए सतत प्रयास किए। इसके फलस्वरूप वन विभाग द्वारा लगाई गई रोक हटाई गई और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा इस परियोजना के बचे हुए कार्यों को पूरा करने की घोषणा की गई। फाटक निर्माण, नहर की मरम्मत और विस्थापितों के पुनर्वास हेतु केंद्र सरकार ने एक बड़ी राशि स्वीकृत की। परियोजना की सबसे बड़ी चुनौती रहे विस्थापित किसान परिवार, जिन्होंने पहले मुआवजा मिलने के बाद भी अपने दावों को पुनः उठाया था, अब उन्हें दूसरी बार मुआवजा दिया जा रहा है। पूर्व सांसद के अनुसार, सात गांवों के 780 किसान परिवारों को केंद्र सरकार द्वारा प्रति परिवार 15 लाख रुपये और एक-एक एकड़ भूमि प्रदान की जा रही है। इसमें पहली किश्त के रूप में 10 लाख रुपये और गढ़वा जिले के विश्रामपुर में कृषि भूमि दी जा रही है। जमीन पर कब्जा होने के बाद ही शेष पांच लाख रुपये की दूसरी किश्त दी जाएगी।

नवादा-जमुई हाईवे पर बड़ा हादसा, तीन लोगों की मौत

नवादा। नवादा-जमुई पथ पर शनिवार देर रात शहर के कोनियापर के पास सड़क हादसे में एक ही गांव के तीन लोगों की मौत हो गई। दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को बेहतर इलाज के लिए पावापुरी बीम्स रेफर किया गया है। सभी मृतक और घायल नरहट थाना क्षेत्र के छोटी पाली गांव के रहने वाले हैं। मृतकों में पूर्व उप मुखिया पंकज चंद्रवंशी, नथ्थू चंद्रवंशी और कारू चंद्रवंशी शामिल हैं। दुर्गा चंद्रवंशी और जयनंदन चंद्रवंशी गंभीर रूप से घायल हैं। जानकारी के अनुसार, छोटी पाली गांव निवासी गणेश सिंह के बेटे की शादी थी। बारात रुपौ थाना क्षेत्र के धनवां गांव गई थी। देर रात बारात से लौटते समय कादिरगंज थाना क्षेत्र के कोनिया मोड़ के पास उनकी ऑल्टो कार की टक्कर एक ट्रक से हो गई। हादसा रात करीब डेढ़ बजे हुआ। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि मौके पर ही तीन लोगों की मौत हो गई।जबकि दो गंभीर रूप से जख्मी हो गए।एक ही गांव के तीन लोगों की मौत के बाद पूरे गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ हैं। मृतक के परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हैं। बताया जा रहा है कि बारात के गए लोग जयमाला हो जाने के बाद खाना खाने के बाद अपने गांव पाली लौट रहे थे कि। हाईवे पर ट्रक ने कार में जोरदार टक्कर मार दी। वहीं देर रात घर लौट रहे पत्रकार सानु, प्रभात, दिलशाद, रंजीत ने घायलों को पुलिस की मदद से अस्पताल में भर्ती करवाया। यहां दो लोगों का इलाज चल रहा है।

पटना में गंगा में नहाने गए 5 दोस्त, 3 डूबे

पटना । रविवार की सुबह गंगा नदी में नहाने गए 5 दोस्तों में से 3 डूब गए। जबकि, दो युवकों को स्थानीय लोगों ने बचा लिया है। घटना बाढ़ थाना क्षेत्र के मलाही दियारा की है। बताया जा रहा है कि सभी होमगार्ड की तैयारी कर रहे थे। एक साथ गंगा किनारे दियारा में आए थे। दौड़ने और एक्सरसाइज के बाद सभी गंगा में नहाने लगे। इस दौरान सभी तेज धारा में बहने लगे। घटनास्थल से थोड़ी दूर पर मौजूद श्रीमल यादव ने जब युवकों को डूबते देखा तो उन्होंने गंगा में छलांग लगा दी और किसी तरह दो युवकों को बाहर निकाल लिया, लेकिन तीन दोस्त गंगा की तेज धार में बह गए। डूबने वाले युवकों की पहचान निरंजन कुमार (22), धीरज कुमार (24) और सोनू कुमार (25) के रूप में हुई है। वहीं, नवीन कुमार और जितेन्द्र कुमार को लोगों ने बचाया है। सभी युवक बाढ़ थाना क्षेत्र के शाह सलेमपुर गांव के रहने वाले हैं।

कमला तटबंध पर जर्दा डिब्बे में छिपे मिले तीन जिंदा बम

मधुबनी। जिले के रुद्रपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत रखबारी गांव में उस समय हड़कंप मच गया जब कमला तटबंध के पास तीन जिंदा बम बरामद किए गए। बम मिलने की सूचना पर इलाके में अफरातफरी का माहौल बन गया। मौके पर पुलिस, प्रशासन और बम निरोधक दस्ता तुरंत सक्रिय हुआ और तीनों बमों को सुरक्षित तरीके से निष्क्रिय कर दिया गया। जानकारी के मुताबिक, घटना की शुरूआत तब हुई जब गांव निवासी भरत पासवान की कुछ भैंसें रोज की तरह तटबंध की ओर चरने गई थीं। उनमें से एक भैंस कमला बलान नहर में पानी पीने के लिए उतरी और बाहर निकलते समय उसके पैर के नीचे एक जर्दा डिब्बे में रखा सुतली बम फट गया, जिससे भैंस आंशिक रूप से घायल हो गई। इस छोटे से विस्फोट ने पूरे गांव में सनसनी फैला दी। सूचना मिलते ही रुद्रपुर थानाध्यक्ष आयशा कुमारी, झंझारपुर सर्किल इंस्पेक्टर बी. के. ब्रजेश, झंझारपुर एसडीएम समेत भारी संख्या में पुलिस बल मौके पर पहुंच गया। स्थिति को गंभीरता से लेते हुए दरभंगा से विशेष बम निरोधक दस्ता (बीडीडीएस) को बुलाया गया। बम निरोधक दस्ते ने नहर के पानी को पंपसेट की मदद से बाहर निकाला और सतह पर करीब दो फीट गड्ढा खोदकर जूट की बोरी बिछाई। बम निरोधक छड़ी से तलाशी के दौरान तीन जिंदा बम होने के संकेत मिले। सभी बमों को बोरे पर रखा गया और सुरक्षित तरीके से मिट्टी में भिगोकर आग लगाकर निष्क्रिय किया गया। इस अभियान में बीडीडीएस के हवलदार विजय कुमार सिंह, धनंजय प्रसाद और सुधीर कुमार महतो शामिल रहे। उनके नेतृत्व में पूरी कार्रवाई को अंजाम दिया गया। चारों ओर से सुरक्षा घेरे में लिए गए इलाके में तमाशा देख रही भीड़ को भी हटाया गया ताकि कोई अप्रिय घटना न हो। घटना के बाद स्थानीय ग्रामीणों में भारी डर और बेचैनी का माहौल है। लोग सहमे हुए हैं और सवाल कर रहे हैं कि आखिर बम तटबंध के पास कैसे पहुंचे? ग्रामीणों का कहना है कि यह इलाका शांत माना जाता था, लेकिन अब उन्हें अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता सताने लगी है।

उप मुख्यमंत्री ने 500 मीट्रिक टन बीज प्रसंस्करण इकाई का किया उद्घाटन

नवाचारी किसानों को किया सम्मानित

मुजफ्फरपुर। ऐतिहासिक धरती पर शनिवार को किसान कल्याण संवाद सह युवा किसान सम्मान समारोह भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। यह आयोजन राज्य के किसानों के लिए प्रेरणा और नवाचार का प्रतीक बनकर उभरा। समारोह की अध्यक्षता बिहार सरकार के उप मुख्यमंत्री एवं कृषि मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने की। उनके साथ मंच पर सांसद वैशाली वीणा देवी, पंचायती राज मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता तथा कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल की उपस्थिति रही। उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हो रहे कृषि सुधारों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आज किसान केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि देश के आर्थिक इंजन का आधार बन चुका है। उन्होंने कहा कि ह्यजय जवान, जय किसानह्ल को अब ह्यजय अनुसंधान, जय नवाचारह्ल से जोड़ दिया गया है। किसानों को सीधे लाभ पहुंचाने के लिए पीएम किसान सम्मान निधि, ड्रोन तकनीक, प्राकृतिक खेती और एफपीओ जैसी योजनाएं मील का पत्थर साबित हो रही हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को विकास पुरुष की संज्ञा देते हुए बताया कि जीविका, कृषि रोडमैप और हर खेत तक सिंचाई जैसी योजनाओं ने बिहार के किसानों को आत्मनिर्भर बनने की दिशा दी है। उन्होंने कृषि बजट में चार गुना बढ़ोतरी, जैविक खेती के लिए विशेष पैकेज और डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन जैसी योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान उप मुख्यमंत्री ने मुशहरी में 500 मीट्रिक टन बीज प्रसंस्करण इकाई और गोदाम का उद्घाटन किया। इसके साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र का भ्रमण किया, जहां जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर लीची उत्पादन की नवीन तकनीकों का अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने पर्यावरण संदेश के रूप में पौधारोपण भी किया और अहियापुर बाजार समिति परिसर का निरीक्षण किया। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण किसान संवाद रहा, जहां स्थानीय किसानों ने सीधे उप मुख्यमंत्री से संवाद किया। नीरज कुमार ने मुजफ्फरपुर को मक्का उत्पादक जिला घोषित करने की मांग रखी, वहीं सोनू निगम कुमार ने परवल की नई किस्म पर शोध कार्य को पंचायत स्तर तक लाने का सुझाव दिया। राजेश रंजन ने प्राकृतिक खेती में गैर रैयत किसानों को प्राथमिकता देने की बात कही और राजू रंजन कुमार ने शेडनेट में खीरा उत्पादन के सफल प्रयोग साझा किए। समारोह में उन युवा किसानों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने खेती को परंपरा से आधुनिकता की ओर मोड़ा है। उप मुख्यमंत्री ने उन्हें बिहार की कृषि क्रांति का नायक बताते हुए कहा कि इन नवाचारी युवाओं की सोच और श्रम से बिहार की धरती सोना उगल रही है। अपने संबोधन के अंत में विजय सिन्हा ने किसानों से आह्वान किया कि वे वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाएं, सरकारी योजनाओं से जुड़ें और अपने बच्चों को भी कृषि उद्यमिता की दिशा में प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि यह संवाद केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक जनआंदोलन की शुरूआत है, जो बिहार को कृषि समृद्धि की ओर अग्रसर करेगा।

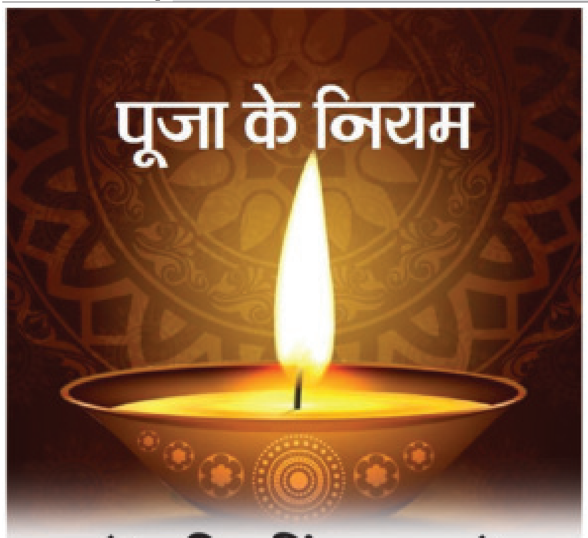

घर में 2 शिवलिंग, 3 गणेश, 2 शंख, और 3 दुर्गा मूर्ति भूलकर भी न रखें

हम सभी के घर में भगवान का मंदिर होता है लेकिन अज्ञानतावश हम कुछ गलतियां कर जाते हैं। प्रस्तुत है कुछ आवश्यक महत्वपूर्ण जानकारियां.

एक घर में कम से कम पांच देवी देवताओं की पूजा होनी ही चाहिए-गणेश, शिव, विष्णु, सूर्य, दुर्गा। किसी भी देव या देवी के पूजन के प्रति संकल्प, एकाग्रता, श्रद्धा होना बहुत ही आवश्यक है।

गृहे लिंगद्वयं नाच्यं गणेशत्रितयं तथा।
शंखद्वयं तथा सूर्यो नार्च्यो शक्तित्रयं तथा।
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु शालग्राम शिलाद्वयम।
तेषां तु पुजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही।

अर्थ- घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य, तीन दुर्गा मूर्ति, दो गोमती चक्र और दो शालिग्राम की पूजा करने से गृहस्थ मनुष्य को अशांति होती है।

- शालिग्राम जी की प्राण प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं होती।
- दुर्गा की एक,सूर्य की सात,गणेश की तीन,विष्णु की चार और शिव की आधी ही परिक्रमा करनी चाहिए।
- तुलसी के बिना ईश्वर की पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती। तुलसी की मंजरी सब फूलों से बढ़कर मानी जाती है।
- अमावस्या,पूर्णिमा,द्वादशी और रात्रि और संध्या काल में तुलसी दल नही तोड़ना चाहिए।
- प्रतिदिन पंचदेव पूजा अवश्य करनी चाहिए।
- यदि कोई मंत्र कंठस्थ न आता हो तो बिना मंत्र के ही जल, चंदन ,फूल आदि चढ़ाकर पूजा करनी चाहिए। फूल चढ़ाते समय ध्यान रखें कि उसका मुख ऊपर की ओर हो।
- सदैव दाएं हाथ की अनामिका एवं अंगूठे की सहायता से फूल अर्पित करने चाहिए। चढ़े हुए फूल को अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारना चाहिए।
- फूल की कलियों को चढ़ाना मना है,किंतु यह नियम कमल के फूल पर लागू नहीं है।

जानिए गंगा का जल क्यों नहीं होता कभी खराब

भारतीय संस्कृति में नदियों को देवी के रूप में पूजा जाता है। प्रमुख वार-त्योहारों पर श्रद्धालु इन्ही नदियों के घाट किनारे स्नान करने जाते है और पात्रों में भरकर इन नदियों के जल को अपने घरों में भी लाते हैं। इस जल का उपयोग घर की शुद्धि करने, चरणामृत में मिलाने, पूजा या अनुष्ठान करने जैसे कई धार्मिक कार्यों में किया जाता है। लगभग हर हिन्दू परिवार में आपको एक कलश मिल ही जाएगा जिसमे गंगाजल होता है। भारत में लोग गंगा जल को सबसे ज्यादा पवित्र मानते हैं और बताते हैं कि इसका पानी कभी खराब नहीं होता। अब सवाल ये है कि इतने अवांछित पदार्थों के मिल जाने के बाद भी गंगा जल आखिर खराब क्यों नहीं होता? हिन्दू वेद-पुराणों और धार्मिक ग्रंथों की माने तो उनमें गंगा की महिमा का वर्णन कई कथाओं के माध्यम से मिल जाएगा। इस विषय में एक घटना ये भी प्रचलित है कि एक ब्रिटिश वैज्ञानिक ने वर्ष 1890 में गंगा के पानी पर रिसर्च भी की थी। दरअसल, उस दशक में भारत के कई हिस्सों में हैजा का भयंकर प्रकोप था, जिसने कई लोगों की जान ली थी। उस समय लोग लाशों को गंगा नदी में फेंक जाते थे। गंगा के उसी पानी में नहाकर या उसे पीकर अन्य लोग बीमार ना पड़ जाए, इसी बात की चिंता उस वैज्ञानिक को थी। लेकिन, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ और गहन शोध के बाद उसने यह पाया की गंगा नदी के पानी में विचित्र वायरस है जो इसमें मौजूद हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट कर देता है। इस वजह से गंगा के पानी को घरों में कई दिनों तक रखा जाने के बाद भी उसमें से दुर्गंध नहीं आती।

'पवित्रता के पर्याय' गंगाजल का नाम आते ही ये सवाल हमारे मन में जरूर आता है। लेकिन इसका जवाब भी वैज्ञानिकों ने खोज निकाला है। दरअसल, हिमालय में स्थित गंगोत्री से निकली गंगा का जल इसलिए कभी खराब नहीं होता, क्योंकि इसमें गंधक, सल्फर इत्यादि खनिज पदार्थों की सर्वाधिक मात्रा पाई जाती है। राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान रूड़की के वैज्ञानिकों का कहना है कि गंगा का जल हिमालय पर्वत पर उगी कई उपयोगी जड़ी-बूटियों को स्पर्श करते हुए आता है। एक अन्य रिपोर्ट ये भी दावा करती है कि गंगा जल में' बैक्ट्रिया फोस' नामक एक विशेष बैक्टीरिया पाया जाता है, जो इसमें पनपने वाले अवांछित पदार्थों को खाता रहता है, जिससे इसकी शुद्धता बनी रहती है।

गंगा हिमालय से शुरू होने के बाद कानपुर, वाराणसी और प्रयागराज जैसे शहरों तक पहुंचती है जहां खेतीबाड़ी का कचरा-कूड़ा और औद्योगिक रसायनों की भारी मात्रा इसके पानी में मिल जाती है , इसके बाद भी गंगा का पानी पवित्र बना रहता है। इसका एक और वैज्ञानिक कारण है कि इसे शुद्ध करने वाला तत्व गंगा की तलहटी में ही मौजूद है। कई वर्षों से गंगा के पानी पर शोध करने वाले आईआईटी रुड़की के वैज्ञानिकों ने ये निष्कर्ष निकाला है कि गंगा के पानी में वातावरण से आक्सीजन सोखने की अद्भुत क्षमता है, जो दूसरी नदियों के मुकाबले कम समय में पानी में मौजूद गंदगी को साफ करने में मदद करती है।

ज्येष्ठ मास की बड़ी बातें, क्या और क्यों है महत्व इस माह का

हिन्दू कैलेंडर के अनुसार फाल्गुन माह अंतिम माह होता है इसके बाद चैत्र माह वैशाख और फिर ज्येष्ठ। इस बार ज्येष्ठ का प्रारंभ अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार 13 माई 2025 से ज्येष्ठ माह प्रारंभ हो गया है। आओ जानते हैं इस माह की बड़ी बातें।

महत्व : ज्येष्ठ मास में सूर्य की तपन अपने चरम पर रहती है। इसीलिए सूर्य की ज्येष्ठता के कारण इस महीने को ज्येष्ठ कहा जाता है। इन दिनों सर्वाधिक बड़े दिन होते हैं। इस माह में नौतपा भी लगता है। शास्त्रों में इसी माह में जल के संरक्षण का महत्व बताया गया है। ज्येष्ठ मास में जल के दान को बहुत बड़ा पुण्य माना गया है। ज्येष्ठ के महीने में भगवान श्रीराम से हनुमान की मुलाकात हुई थी, जिसके चलते ये इस माह के मंगलवार पर हनुमान पूजा का खासा महत्व रहता है।

निम्नलिखित चौपाई से यह पता चलता है कि किस माह में क्या कार्य नहीं करना चाहिए।

चौते गुड़, वैशाखे तेल,
जेठ के पंथ, अषाढ़े बेल।
सावन साग, भादो मही,
कुवांर करेला, कार्तिक दही।
अगहन जीरा, पूसै धना,
माघै मिश्री, फाल्गुन चना।
जो कोई इतने परिहरै,
ता घर बैद पैर नहिं धरै।।
चैत चना, बैसाखे बेल, जैठे शयन,
आषाढ़े खेल, सावन हर्रे, भादो तिल।
कुवार मास गुड़ सेवै नित, कार्तिक मूल,
अगहन तेल, पूस करे दूध से मेल।
माघ मास घी-खिचड़ी खाय,
फागुन उठ नित प्रात नहाय।।

ज्येष्ठ माह में क्या करना और क्या नहीं चाहिए

- ज्येष्ठ माह में दोपहर में चलना खेलना मना है। इन महीनों में गर्मी का प्रकोप रहता है अत: ज्यादा घूमना-फिरना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। अधिक से अधिक शयन करना चाहिए।
- इस माह बेल खाना चाहिए या बेल का रस पीना चाहिए। इस माह में ज्यादा से ज्यादा पानी पीना चाहिए।
- इस माह में लहसुन, राई, गर्मी करने वाली सब्जियां और फल नहीं खाना चाहिए।
- इस माह में जल की पूजा की जाती है। इस माह में जल को लेकर दो त्योहार मनाए जाते हैं, पहला गंगा दशहरा और दूसरा निर्जला एकादशी।
- घाघ ने कहा कि जो व्यक्ति ज्येष्ठ माह में दिन में सोता है वह रोगी होती है।
- इस माह में बैंगन खाने से दोष लगता है और रोग उत्पन्न होता है। यह संतान के लिए शुभ नहीं होता है।
- ज्येष्ठ के माह में ज्येष्ठ पुत्र या पुत्री का विवाह करना शुभ नहीं माना जाता है।
- ज्येष्ठ माह में एक समय भोजन करना वाला निरोगी रहता है। महाभारत के अनुशासन पर्व में लिखा है- 'ज्येष्ठामूलं तु यो मासमेकभक्तेन संक्षिपेत्। ऐश्वर्यमतुलं श्रेष्ठं पुमान्स्त्री वा प्रपद्यते।
- इस माह तिल का दान करने से अकाल मृत्यु से जातक बचा रहता है।
- ज्येष्ठ माह में हनुमानजी की प्रभु श्रीराम से मुलाकात हुई थी। इसीलिए इस माह में हनुमानजी की पूजा करने से लाभ मिलता है।

श्री कृष्ण का वृंदावन धाम 8 रहस्य या चमत्कार

ब्रजमंडल में मथुरा, गोकुल, नंदगांव, वृंदावन, बरसाना, गोवर्धन आदि क्षेत्र आते हैं। मथुरा जहां श्रीकृष्ण की जन्मभूमि है। वहीं गोकुल उनकी बाललीला की भूमि है। श्रीकृष्ण जब थोड़े बड़े हुए तो वृंदावन उनका प्रमुख लीला स्थली बन गया। उन्होंने यहां रास रचा और दुनिया को प्रेम का पाठ पढ़ाया। बरसाना श्रीराधा की जन्मभूमि है और उनका परिवार भी वृंदावन में आकर रहने लगा था। आओ जानते हैं वृंदावन धाम के 8 चमत्कार या रहस्य को।

रंग महल : वृंदावन में रंग महल है। प्रतिदिन मंदिर के अंदर स्थित रंगमहल में कृष्ण-राधा का पलंग लगा दिया जाता है और पूरा रंगमहल सजा दिया जाता है तथा राधाजी का श्रृंगार सामान रख कर मंदिर के दरवाजे बन्द कर दिए जाते हैं। जब प्रात: दरवाजे खुलते हैं तो सारा सामान अस्त-व्यस्त मिलता है। मान्यता है कि रात्रि में राधा-कृष्ण आकर इस सामान का उपयोग करते हैं। हालांकि शाम के बाद यह मंदिर बंद हो जाता है और यह भी कहा जाता है कि अगर यहां कोई छुपकर रासलीला देखता है तो वह अगले दिन पागल हो जाता है।

अपने आप बंद होता और खुलता मंदिर : वृन्दावन में श्रीकृष्ण का एक ऐसा मंदिर है जो अपने आप ही खुलता और बंद हो जाता है।

वृंदावन और तुलसी का रहस्य : वृंदा तुलसी को कहा जाता है। यहां तुलसी के पौधे अधिक हैं, इसलिए इसे वृंदावन नाम दिया गया। यानी वृंदा (तुलसी) का वन। कहते हैं कि यहां तुलसी के दो पौधे एक साथ लगे हैं। रात के समय जब राधा और कृष्ण रास रचाते हैं तो यही तुलसी के पौधे गोपियां बनकर उनके साथ नाचते हैं। इन तुलसी का एक भी पता यहां से कोई नहीं ले जाता है। जिसने भी गुपचुप यह कार्य किया वह भारी आपदा का शिकार हो जाता है।

अजीब हैं पेड़ : मंदिर के परिसर में उगने वाले पेड़ और निधिवन में उगने वाले पेड़ भी अजीब है। यहां के पेड़ की शखाएं नीचे की ओर बढ़ती है। जहां आमतौर पर पेड़ ऊपर की तरफ बढ़ते हैं वहीं निधिवन में मौजूद पेड़ों की ऊंचाई बेहद कम हैं और इनकी शाखाएं इसकी जड़ों की ओर बढ़ती है। यहाँ पेड़ भी आपस में गुथे हुए हैं जो इस जगह को देखने में भी रहस्यमयी बनाती है।

मंदिर में करते हैं शयन : मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण रोज रात को खुद शयन करने आते हैं। उनके सोने के लिए मंदिर के पुजारी रोज पलंग लगाते हैं और जिस पर साफ-सुथरी गादी एवं बिस्तर के ऊपर चादर बिछाते हैं। लेकिन कहते हैं कि जब मंदिर खुलता है तो उस बिस्तर की हालत देखकर सभी अचंभित हो जाते हैं, क्योंकि उसे देखकर लगता है कि यहां कोई सोया था। सबसे आश्चर्य की बात यह भी कि यहां प्रतिदिन माखन मिश्री का प्रसाद चढ़ाया जाता है और जो बच जाता है उसे मंदिर में ही रख दिया जाता है, लेकिन सुबह तक वह प्रसाद भी समाप्त हो जाता है। आखिर कौन खा जाता होगा वह प्रसाद रात में यहां कोई भी नहीं रुकता है। स्थानीय लोगों के अनुसार ऐसा बरसों से होता आ रहा है। कुछ लोग इसे अंधविश्वास मानते हैं और कुछ लोग इसे श्रीकृष्ण का चमत्कार।

घरों की खिड़कियां कर देते हैं बंद : यहां के आसपास के अधिकतर घरों में खिड़कियां नहीं हैं और जिनके घरों में हैं वे शाम की आरती के बाद खिड़कियां इस डर से बंद कर देते हैं कि कोई मंदिर की दिशा में देखे नहीं, अन्यथा वह अंधा हो जाएगा।

निधिवन : कहते हैं कि आज भी समय-समय पर प्रभु वृंदावन के निधिवन और मधुवन में रास भी करते हैं। वहां के मंदिरों में भ्रमण भी करते हैं। कहते हैं कि श्रीकृष्ण वृंदावन के निधिवन में रासलीला करने आते हैं और उनके साथ श्रीराधा सहित उनकी अष्ट सखियां भी आती हैं। लोगों का मानना है कि यहाँ हर रात आरती के बाद श्री कृष्ण, राधा और उनकी गोपियाँ रास रचाते हैं। आस-पास रहने वाले कई लोगों का कहना है कि उन्हें कई बार घुंघरूओं की आवाज सुनाई देती है, लेकिन कोई इस रास-लीला को अपनी आँखों से देखने की हिम्मत नहीं रखता, और देख ले तो फिर दुनिया में कुछ और देखने-समझने के लायक नहीं रहता। यानी अंधा हो जाता है। इसलिए अब निधिवन के दरवाजे शाम 7 बजे बंद कर दिया जाते हैं।

हरिदास भक्त : वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर से कई कथाएं जुड़ी हुई है। कहते हैं कि श्री हरिदासजी बांके बिहारी के सबसे बड़े भक्त थे जिनकी भक्ति और चमत्कारों की कई कथाएं प्रचलित हैं। भगवान की भक्त में डूबकर हरिदास जी जब भी गाने बैठते तो प्रभु में ही लीन हो जाते। इनकी भक्ति और गायन से रिझकर भगवान श्री कृष्ण इनके सामने आ जाते।

चतुर्थी का व्रत करने के 2 सबसे बड़े लाभ

प्रत्येक माह में दो चतुर्थी होती है। इस तरह 24 चतुर्थी और प्रत्येक तीन वर्ष बाद अधिमास की मिलाकर 26 चतुर्थी होती है। सभी चतुर्थी की महिमा और महत्व अलग-अलग है। आओ जानते हैं चतुर्थी का व्रत करने के 5 लाभ।

विनायक चतुर्थी

चतुर्थी (चौथ) के देवता हैं शिवपुत्र गणेश। इस तिथि में भगवान गणेश का पूजन से सभी विघ्नों का नाश हो जाता है। भाद्र माह की चतुर्थी को गणेशजी का जन्म हुआ था, जिसे विनायक चतुर्थी कहते हैं। कई स्थानों पर विनायक चतुर्थी को 'वरद विनायक चतुर्थी' और 'गणेश चतुर्थी' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन भगवान गणेश की आराधना सुख-सौभाग्य की दृष्टि से श्रेष्ठ है।

संकष्टी चतुर्थी

माघ मास के कृष्ण पक्ष को आने वाली चतुर्थी को संकष्टी चतुर्थी, माघी चतुर्थी या तिल चौथ कहा जाता है। बारह माह के अनुक्रम में यह सबसे बड़ी चतुर्थी मानी गई है। चतुर्थी के व्रतों के पालन से संकट से मुक्ति मिलती है और आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

चतुर्थी का रहस्य

यह खला तिथि हैं। तिथि 'रिक्ता संज्ञक' कहलाती है। अत: इसमें शुभ कार्य वर्जित रहते हैं। यदि चतुर्थी गुरुवार को हो तो मृत्युदा होती है और शनिवार की चतुर्थी सिद्धिदा होती है और चतुर्थी के 'रिक्ता' होने का दोष उस विशेष स्थिति में लगभग समाप्त हो जाता है। चतुर्थी तिथि की दिशा नैऋत्य है। अमावस्या के बाद आने वाली शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विनायक चतुर्थी कहते हैं और पूर्णिमा के बाद कृष्ण पक्ष में आने वाली चतुर्थी को संकष्टी चतुर्थी कहते हैं।

गणेश जी को दूर्वा चढ़ाने के खास नियम हैं

बुधवार और चतुर्थी तिथि गणेशजी के दिन है। इस दिन इनकी विशेष पूजा करना चाहिए। पूजा करने के दौरान गणेशजी को विशेष वस्तुएं अर्पित की जाती है जो कि उनके पसंद की होती है। इन वस्तुओं को अर्पित करने से गणपतिजी प्रसन्न हो जाते हैं। इन्हीं वस्तुओं से एक है दूर्वा। आओ जानते हैं दूर्वाचढ़ाने के खास नियम और मंत्र।

दूर्वा चढ़ाने के खास नियम

- प्रात:काल उठकर गणेश जी की मूर्ति या तस्वीर के सामने बैठकर व्रत और पूजा का संकल्प लें।
- फिर ऊं गं गणपतयै नम: मंत्र बोलते हुए जितनी पूजा सामग्री उपलब्ध हो उनसे भगवान श्रीगणेश की पूजा करें।
- गणेशजी की मूर्ति पर सिंदूर लगाएं। फिर उन्हें 21 गुड़ की ढेली के साथ 21 दूर्वा चढ़ाएं। मतलब 21 बार 21 दूर्वा की गाठें अर्पित करना चाहिए। इसके अलावा गणेशजी को मोदक और मोदीचूर के 21 लड्डू भी अर्पित करें। इसके बाद आरती करें और फिर प्रसाद बांट दें।
- दूर्वा अर्पित करने का मंत्र : 'श्री गणेशाय नम: दूर्वांकुरान समर्पयामि।' : इस मंत्र के साथ श्रीगणेशजी को दूर्वा चढ़ाने से जीवन की सभी विघ्न समाप्त हो जाते हैं और श्रीगणेशजी प्रसन्न होकर सुख एवं समृद्धि प्रदान करते हैं।
- क्या होगा दूर्वा अर्पित करने से : इस दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाकर विशेष पूजा की जाती है। ऐसा करने से परिवार में समृद्धि बढ़ती है और मनोकामना भी पूरी होती है। इस व्रत का जिक्र स्कंद, शिव और गणेश पुराण में किया गया है।

सनराइजर्स हैदराबाद पर बड़ी जीत के इरादे से उतरेगी लखनऊ सुपरजायंट्स

लखनऊ (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में सोमवार को लखनऊ सुपरजायंट्स और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच मुकाबला होगा। इस मैच में लखनऊ सुपरजायंट्स की टीम अपने घरेलू मैदान पर बड़ी जीत दर्ज कर प्लेऑफ के लिए अपनी संभावनाएं बनाये रखने उतरेगी। इस मैच में अगर सुपरजायंट्स हार तो वह लीग से बाहर हो जाएगी। इस लीग में अब तक टीम के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी रही है। उसके कप्तान ऋषभ पंत भी अब तक रन नहीं बना पाये हैं जिसके कारण भी टीम को नुकसान हुआ है। ऐसे में ऋषभ इस मैच में बड़ी पारी खेलकर टीम को जीत दिलाना चाहेंगे। अब तक इस सत्र में निकोलस पूरन ने टीम की ओर से काफी अच्छी बल्लेबाजी की है पर अब अन्य खिलाड़ियों को भी रन बनाने होंगे। उसकी गेंदबाजी शारदुल ठाकुर, आवेश खान, आकाश दीप पर आधारित रहेगी। सुपर जायंट्स की टीम के नाम अब तक 11 मैचों में 10 अंक है पर उसका नेट रन रेट माइनस 0.469 है। प्लेऑफ में पहुंचने के लिए उसे अपने बचे हुए तीनों मैचों को बड़े अंतर से जीतना होगा।

दूसरी ओर पिछले साल की उपविजेता सनराइजर्स पहले ही प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है ऐसे में उसका लक्ष्य इस मैच को जीतकर लखनऊ का खेल बिगाड़ना रहेगा। सनराइजर्स की टीम में शामिल युवा नीतीश कुमार रेड्डी और ईशान किशन जैसे खिलाड़ी इस मैच में बेहतर प्रदर्शन कर लय हासिल करने का प्रयास करेंगे। अब तक ये दोनो बड़ी पारियां नहीं खेल पाये हैं। आक्रामक बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने अब तक 311 रन बनाये हैं और वह इस मैच में बड़ी पारी खेलने का प्रयास करेंगे। लखनऊ की टीम की सबसे बड़ी परेशानी कप्तान का रन नहीं बनाना है। वह इस सत्र में केवल एक बार ही पचास से अधिक रन बना पाये हैं। रन उन्होंने इस सत्र के 11 मैचों में 100 से कम की स्ट्राइक-रेट और 12.80 की औसत से केवल 128 रन ही बनाए है। मो शमी, राहुल चाहर सहित उसके गेंदबाज अब तक प्रभावित नहीं कर पाये हैं।

वहीं लखनऊ की टीम को अपने प्रमुख बल्लेबाज निकोलस पूरन से इस मैच में भी बड़ी पारी की उम्मीद रहेगी। पूरन शुरुआती पांच-छह मैचों में आक्रामक बल्लेबाजी के बाद पिछले कुछ मैचों से रन नहीं बना पाये हैं। पूरन के अलावा टीम को अपने शीर्ष तीन क्रम में शामिल दक्षिण अफ्रीका के एडेन मारक्रम 348 और मिचेल मार्श 378 से भी अच्छी शुरुआत की उम्मीद होगी। वहीं मध्यक्रम में आयुष बडोनी 326 रन के अलावा कोई भी बल्लेबाज प्रभावी प्रदर्शन नहीं कर पाया है। आक्रामक बल्लेबज डेविड मिलर अब तक केवल 160 रन ही बना पाये हैं।। गेंदबाजी में रवि बिश्नोई बीच के ओवरों में विकेट लेने में विफल रहे हैं। केवल युवा दिग्वेश राठी ने अब तक 12 लेकर लेकर विरोधी बल्लेबाजों पर अंकुश लगाया है। इस मैच में न्यूजीलैंड के गेंदबाज विलियम ओ राउरकी के टीम में आने से लखनऊ की गेंदबाजी बेहतर होगी।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

सनराइजर्स हैदराबाद : पैट कमिंस (कप्तान), ईशान किशन (विकेटकीपर), अथर्व तायडे, अभिनव मनोहर, अनिकेत वर्मा, सचिन बेबी, स्मरण रविचंद्रन, हेनरिच क्लासेन (विकेटकीपर), ट्रेविस हेड, हर्षल पटेल, कामिन्दु मेंडिस, वियान मुल्डर, अभिषेक शर्मा, नीतीश कुमार रेड्डी, मोहम्मद शमी, राहुल चाहर, सिमरजीत सिंह, जीशान अंसारी, जयदेव उनादकट, ईशान मलिंगा।

लखनऊ सुपर जायंट्स : ऋषभ पंत (विकेटकीपर/कप्तान), एडेन मारक्रम, मिचेल मार्श, निकोलस पूरन, आयुष बडोनी, अब्दुल समद, डेविड मिलर, शारदुल ठाकुर, आवेश खान, आकाश दीप, दिग्वेश सिंह राठी, रवि बिश्नोई, प्रिंस यादव, शाहबाज अहमद, मैथ्यू ब्रीट्जके, हिम्मत सिंह, शमरा जोसेफ, मणिमारन सिद्धार्थ, आर्यन जुयाल, आरएस हंगरगेकर, युवराज चौधरी, आकाश महाराज सिंह, अर्शिन कुलकर्णी।

कोलकाता में ही खेला जाएगा आईपीएल फाइनल : गांगुली

कोलकाता (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) फाइनल की मेजबानी कोलकाता के ईडन गार्डन की जगह किसी अन्य स्थल को दिये जाने की चर्चाओं के बीच ही भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कहा है कि ये इतना आसान नहीं है। गांगुली के अनुसर बंगाल बोर्ड (कैब) के भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) से अच्छे संबंध हैं। इसलिए उन्हें पूरा भरोसा है कि फाइनल कोलकाता से बाहर नहीं जाएगा। शुरुआत में फाइनल कोलकाता में 25 मई को खेला जाना तय था पर बीच में भारत-पाकिस्तान के बची टकराव के कारण आईपीएल एक सप्ताह के लिए स्थगित कर दिया गया था। दौबारा शुरु होने पर बोर्ड ने तीन जून को खेले जाने वाले फाइनल के स्थल की जानकारी नहीं दी। ये कहा जा रहा है कि इस दिन कोलकाता में बारिश की संभावना को देखते हुए फाइनल किसी अन्य स्थल पर खेला जाएगा। कैब के पूर्व अध्यक्ष रहे गांगुली से जब पूछा गया कि क्या कोलकाता तय कार्यक्रम के अनुसार ही फाइनल मैच की मेजबानी करेगा तो उन्होंने कहा, 'हम प्रयास कर रहे हैं। साथ ही कहा कि है? यह ईडन का प्लेऑफ है, और मुझे भरोसा है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा क्योंकि मैच को अचानक ही किसी दूसरे स्थल पर ले जाना आसान नहीं है। इसी बीच प्रशंसकों ने भी मांग की है कि फाइनल कोलकाता में ही खेल जाना चाहिये।

गांगुली ने कहा कि विरोध से कुछ खास फर्क नहीं पड़ता। वहीं प्लेऑफ स्थलों को तय करने में हो रही पर गांगुली ने कहा, 'कोलकाता नाइट राइडर्स ने इस मैदान पर अपने लीग मैच खेले हैं, इसलिए कोलकाता पहली सूची में शामिल नहीं है।' ईडन गार्डन को 2024 सत्र में कोलकाता नाइट राइडर्स के खिताब जीतने के कारण इस सत्र के फाइनल के मेजबानी का अधिकार मिला था। इस स्थल में ही आईपीएल का उद्घाटन मैच भी खेला गया था।

वहीं बीसीसीआई ने हालांकि फाइनल के लिए नए स्थल के बारे में जानकारी नहीं दी है। जिससे भी कई प्रकार की अटकलें चल रही हैं। बदलाव के पीछे का कारण मौसम की भविष्यवाणी माना जा रहा है, क्योंकि कोलकाता से ही दक्षिण-पश्चिम मानसून की शुरुआत होती है

पंजाब ने राजस्थान को हराया, 10 रन से जीता मैच

जयपुर (एजेंसी)। पंजाब किंग्स ने आईपीएल के 59वां मैच में जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में राजस्थान रॉयल्स को 10 रन से हरा दिया है। पंजाब किंग्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला करते हुए खराब शुरूआत (58/3) के बाद वापसी करते हुए नेहल वढेरा और शशांक सिंह की अर्धशतकीय पारी की बदौलत 5 विकेट के नुकसान पर राजस्थान को 220 रन का लक्ष्य दिया है। वढेरा ने 37 गेंदों पर 5 चौकों और 5 छक्कों की मदद से 70 रन बनाए। वढेरा के बाद शशांक सिंह ने टीम की तरफ से सबसे ज्यादा रन बनाए। शशांक ने 30 गेंदों पर 5 चौकों और 3 छक्कों की मदद से नाबाद 59 रन बनाए। राजस्थान की तरफ से तुषार देशपांडे प्रभावी रहे जिन्होंने 20 रन देकर 2 विकेट अपने नाम किए। इसके जवाब में राजस्थान यशस्वी जायसवाल, ध्रुव जुरेल के अर्धशतकों की बदौलत 7 विकेट के नुकसान पर 209 रन ही बना पाई और पंजाब के गेंदबाजों के आगे घुटने टेक दिए।

प्रशंसकों ने सफेद कपड़ों से किया यादगार इशारा, मांजरेकर ने किया खुलासा

बेंगलुरु (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच आईपीएल मैच के दौरान प्रशंसकों द्वारा की गई दिल को छू लेने वाली श्रद्धांजलि की सराहना की, जहां प्रशंसक टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद विराट कोहली को सम्मानित करने के लिए एकत्र हुए थे।

शनिवार शाम को बेंगलुरु का एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम सफेद रंग के समुद्र में तब्दील हो गया, क्योंकि प्रशंसकों ने कोहली के शानदार टेस्ट करियर को श्रद्धांजलि देने के लिए प्रतिष्ठित नंबर 18 वाली सफेद जर्सी पहनी थी।

हार्दिक इशारा एक विनम्र प्रशंसक अभियान के रूप में शुरू हुआ - एक साधारण सोशल मीडिया पोस्ट जिसमें रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के समर्थकों से आरसीबी बनाम केकेआर मुकाबले में विराट कोहली की सफेद जर्सी पहनने का आग्रह किया गया, जो हाल ही में टेस्ट क्रिकेट से उनके संन्यास के सम्मान में था। एक छोटे से विचार के रूप में शुरू हुआ यह विचार जल्द ही एक शक्तिशाली आंदोलन में बदल गया, क्योंकि प्रशंसक एक ऐसे खिलाड़ी की विरासत का जश्न मनाने के लिए एकजुट हुए, जिसने लाल गेंद के खेल को अपना सब कुछ दे दिया।

मांजरेकर ने जियोहॉटस्टार पर कहा, 'विराट कोहली के लिए प्रशंसकों का जो प्यार है, वह कुछ खास है। यह एक आईपीएल नाइट मैच था, और प्रशंसक भारतीय क्रिकेट इतिहास के एक पल को याद करने के लिए सफेद कपड़े पहने हुए आए थे। यह एक सुंदर इशारा है। पांच साल तक, उन्होंने टेस्ट क्रिकेट को देखने लायक और अधिक लोकप्रिय बनाया। हम अक्सर कहते हैं कि कोई भी खिलाड़ी खेल से बड़ा नहीं है, लेकिन ऐसे समय में जब टेस्ट क्रिकेट प्रशंसकों को आकर्षित करने के लिए संघर्ष कर रहा था, विराट ने इसे वह ध्यान दिया जिसकी इसे सख्त जरूरत थी।'

उन्होंने कहा, 'वह अभी भी आईपीएल में खेल रहे हैं, लेकिन उनमें हमेशा टेस्ट क्रिकेट को जीवित रखने की इच्छा थी। एक कप्तान के रूप में, मैंने कभी भी ऐसा भारतीय टेस्ट कप्तान नहीं देखा, जो टीम के अच्छा प्रदर्शन न करने या चीजें खराब होने पर भी तीव्रता को इतना ऊंचा बनाए रखने में कामयाब रहा हो। यह अपने आप में एक विरासत है।'

शनिवार का मैच, जो एक सप्ताह के ब्रेक के बाद आईपीएल 2025 की बहाली को चिह्नित करता है, विराट कोहली की सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करने के बाद पहली उपस्थिति थी।

हालांकि, लगातार बारिश के कारण मैच को बिना एक भी गेंद फेंके रद्द कर दिया गया। दोनों टीमों को एक-एक अंक दिया गया, और इसके साथ ही आरसीबी 12 मैचों में 17 अंकों के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंच गई और प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की करने के करीब पहुंच गई, जबकि केकेआर 13 मैचों में 12 अंकों के साथ प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो गई।

वेस्टइंडीज और ऑस्ट्रेलिया टेस्ट सीरीज में बच्चों की एंट्री मुफ्त

बारबाडोस। दुनियाभर में टेस्ट क्रिकेट का आकर्षण धीरे-धीरे कम होता जा रहा है और इसे बचाए रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) और तमाम क्रिकेट बोर्ड्स नए-नए कदम उठा रहे हैं। हाल ही में आईसीसी ने वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल की पुरस्कार राशि को दोगुना कर दिया है, वहीं अब वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड (सीडब्ल्यूआई) ने टेस्ट क्रिकेट को बच्चों के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए एक अनोखा फैसला लिया है। सीडब्ल्यूआई ने घोषणा की है कि वेस्टइंडीज और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाली आगामी तीन मैचों की टेस्ट सीरीज के दौरान बच्चों को स्टेडियम में प्रवेश के लिए कोई टिकट नहीं खरीदना पड़ेगा। इस फैसले का मकसद युवा पीढ़ी में टेस्ट क्रिकेट के प्रति रुचि जगाना है। वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड के सीईओ क्रिस डेहिंग ने इस पहल की जानकारी देते हुए कहा कि बारबाडोस के केंसिंग्टन ओवल, ग्रेनेडा नेशनल स्टेडियम और जमैका के सबीना पार्क में होने वाले तीनों टेस्ट मैचों के दौरान सभी बच्चों को निशुल्क प्रवेश दिया जाएगा। केंसिंग्टन ओवल में आयोजित डब्ल्यूआई होम फुल आह एनर्जी कैंपेन के लॉन्च के दौरान डेहिंग ने कहा कि यह निर्णय वेस्टइंडीज क्रिकेट की एक नई नीति के तहत लिया गया है, जिसका उद्देश्य टेस्ट क्रिकेट को फिर से जीवंत करना है।

श्रेयस अय्यर के आईपीएल में 300 चौके पूरे, विशेष क्लब में शामिल हुए

जयपुर (राजस्थान)। पंजाब किंग्स के कप्तान श्रेयस अय्यर इंडियन प्रीमियर लीग के 18वें संस्करण में रविवार को जयपुर में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अपने संयमित प्रदर्शन के बाद इंडियन प्रीमियर लीग में 300 चौके लगाने वाले क्लब में शामिल हो गए। श्रेयस ने अपने शानदार प्रदर्शन के दौरान 5 मौकों पर बाउंड्री लगाई और 34/3 पर सिमटने के बाद पंजाब की पारी को संभाला। आईपीएल में अपने 128वें मैच में 30 वर्षीय अय्यर ने शांतचित्त होकर फील्ड में गैप ढूंढे और टॉस के बाद पहले बल्लेबाजी करने के फैसले के बाद स्कोरबोर्ड को आगे बढ़ाया। 30 (25) रन पर यशस्वी जायसवाल द्वारा लॉन्ग-ऑफ पर कैच आउट होने से पहले श्रेयस ने पांच चौके लगाए और अब उनके नाम इस कैश-रिच लीग में 303 चौके हैं। उनके जाने के बाद नेहल वढेरा और शशांक सिंह क्रीज पर आए। दोनों ने 13वें ओवर में आकाश मधवाल की गेंद पर 17 रन बटोरे जिसमें शशांक ने एक चौका और वढेरा ने एक चौका और एक छक्का लगाया। वढेरा ने 25 गेंदों में पांच चौकों और तीन छक्कों की मदद से अपना चौथा आईपीएल अर्धशतक पूरा किया। 16वें ओवर में हेटमायर के एक लो कैच ने मधवाल को नेहल का विकेट दिलाया।

धोनी का संन्यास अभी नहीं! 2026 में भी खेल सकते हैं आईपीएल

नई दिल्ली (एजेंसी)। महेंद्र सिंह धोनी भारतीय क्रिकेट के सबसे सफल और लोकप्रिय खिलाड़ियों में से एक हैं। 43 साल की उम्र में भी वे मैदान पर पूरी ऊर्जा के साथ खेल रहे हैं। हालांकि आईपीएल 2025 का सीजन उनकी टीम चेन्नई सुपर किंग्स के लिए खास अच्छा नहीं रहा। टीम प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है और खुद धोनी का प्रदर्शन भी अपेक्षित स्तर का नहीं रहा। ऐसे में यह चर्चा जोर पकड़ने लगी थी कि क्या यह धोनी का आखिरी सीजन है और क्या वे अब हमेशा के लिए क्रिकेट को अलविदा कह देंगे। लेकिन एक नई रिपोर्ट ने उनके फैंस के लिए बड़ी राहत की खबर दी है।

एक अंग्रेजी अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, चेन्नई सुपर किंग्स से जुड़े सूत्रों का मानना है कि धोनी अभी टीम को छोड़ने के मूड में नहीं हैं। टीम के भीतर कई ऐसी चीजें हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है और इसके लिए धोनी की अनुभव और नेतृत्व की जरूरत है। यही वजह है कि फ्रेंचाइजी के लोग मानते हैं कि अगर धोनी की फिटनेस ने उनका साथ दिया, तो वह आईपीएल 2026 में भी येलो जर्सी में नजर आ सकते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि धोनी का मार्गदर्शन टीम के युवा खिलाड़ियों के लिए बेहद अहम है और अभी भी उनकी उपस्थिति ड्रेसिंग रूम में आत्मविश्वास भरती है।

धोनी से जब एक मुकाबले के बाद पूछा गया कि क्या आईपीएल 2025 उनका आखिरी सीजन होगा, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि इस पर वे कुछ समय बाद फैसला लेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि उनका खेलना पूरी तरह उनकी फिटनेस पर निर्भर करेगा। धोनी का यह बयान भी इस ओर इशारा करता है कि वे अभी अपने रिटायरमेंट को लेकर जल्दबाज़ी में कोई फैसला नहीं लेना चाहते।

भले ही इस सीजन में टीम का प्रदर्शन उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा हो, लेकिन फैंस का धोनी के प्रति प्यार कम नहीं हुआ है। वे अब भी धोनी को मैदान पर खेलते हुए देखना चाहते हैं और यही समर्थन शायद

धोनी को एक और सीजन तक मैदान पर बनाए रखे। ऐसे में अब सबकी नजरें धोनी के अगले कदम पर टिकी हैं। अगर सब कुछ ठीक रहा, तो 'थाला' अगले साल भी मैदान में कमाल करते नजर आ सकते हैं।

रोम खिताब पर कब्जा, पाओलिनी ने गॉफ को हराकर बनाई इतिहास

रोम (इटली)। घरेलू पसंदीदा जैस्मीन पाओलिनी ने शनिवार को इंटरनैशनली बीएनएल डी 'इटालिया में इतिहास रच दिया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि चार दशकों में पहली बार, इटैलियन इंटरनेशनल के पास महिला एकल में इतालवी चैंपियन है। पाओलिनी ने रोम में पक्षपातपूर्ण भीड़ को रोमांचित कर दिया, क्योंकि नंबर 6 सीड पाओलिनी ने कैम्पो सेंट्रल में फाइनल में नंबर 4 सीड कोको गॉफ को 6-4, 6-2 से हराकर ऐतिहासिक खिताब जीता। पाओलिनी 40 साल पहले 1985 में राफैला रेगी के बाद अपने देश के सबसे बड़े आयोजन में जीत हासिल करने वाली पहली महिला हैं। इसके अलावा, रेगी ने खिताब तब जीता जब यह आयोजन टोरंटो में आयोजित किया गया था।

सूर्यकुमार यादव का यह आईपीएल सीजन उनके सर्वश्रेष्ठ सीजन में से एक है : पूर्व भारतीय बल्लेबाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व बल्लेबाज संजय मांजरेकर ने आईपीएल2025 सीजन में मुंबई इंडियंस के सीनियर खिलाड़ियों हार्दिक पांड्या, जसप्रीत बुमराह, सूर्यकुमार यादव और रोहित शर्मा को टीम में वापसी का श्रेय दिया। दिग्गज क्रिकेटर ने आगे कहा कि इन खिलाड़ियों ने महत्वपूर्ण मौकों पर फ्रैंचाइजी के लिए अच्छा प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि बहुमुखी बल्लेबाज सूर्यकुमार का यह आईपीएल करियर का सर्वश्रेष्ठ सीजन है। भारत के टी20 कप्तान ने 12 मैचों में 510 रन बनाए हैं जिसमें तीन अर्धशतक शामिल हैं। मुंबई के इस बल्लेबाज के पास फिलहाल ऑरेंज कैप है, जबकि गुजरात टाइटन्स के साई सुदर्शन (509 रन) और शुभमन गिल (508 रन) शीर्ष स्थान पर हैं। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के विराट कोहली चौथे स्थान पर हैं जो सूर्यकुमार से सिर्फ पांच रन पीछे हैं। हार्दिक पांड्या की अगुआई वाली टीम की शुरुआत खराब रही और उसने सीजन के अपने पहले मैचों में चार गेम गंवाए। हालांकि पांच बार के चैंपियन ने फिर से वापसी की और लगातार छह मैच जीते लेकिन बारिश से प्रभावित मैच में गुजरात टाइटन्स से तीन विकेट से हार गए। 12 खेलों में 14 अंकों के साथ MI के पास दो गेम शेष रहते प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई करने का एक मजबूत मौका है। मांजरेकर ने कहा, 'मुझे यकीन नहीं है कि उनका अभियान पटरी से उतर जाएगा, भले ही रयान रिकेल्टन और विल जैक जैसे कुछ विदेशी खिलाड़ी संभावित रूप से प्रमुख खेलों के लिए अनुपलब्ध हों। वे खिलाड़ियों को सही भूमिकाओं में ढालने में कामयाब रहे हैं। शुरुआत में, वे थोड़े अनिश्चित दिखे लेकिन अब उन्हें स्पष्टता मिल गई है। सूर्यकुमार यादव अपने सर्वश्रेष्ठ आईपीएल सीजन में से एक खेल रहे हैं। और जब उच्च दबाव की स्थिति की बात आती है, तो MI के पास ऐसे खिलाड़ी हैं जो पनपते हैं, हार्दिक पांड्या, जसप्रीत बुमराह, सूर्यकुमार यादव और यहां तक कि रोहित शर्मा, उनके हालिया फॉर्म के बावजूद।'

बिना रोहित-विराट के इंग्लैंड में भारत की अग्नि परीक्षा

नई दिल्ली। भारत और इंग्लैंड के बीच बहुप्रतीक्षित टेस्ट सीरीज 20 जून से शुरू हो रही है, लेकिन इस बार टीम इंडिया मैदान पर एक अलग ही रूप में नजर आएगी। रोहित शर्मा और विराट कोहली के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद यह पहली बार होगा जब भारतीय टीम इन दोनों दिग्गजों के बिना टेस्ट मुकाबलों में इंग्लैंड से भिड़ेगी। भारत का ऐतिहासिक रिकॉर्ड इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में कमजोर रहा है। अब तक दोनों टीमों के बीच 136 मुकाबले खेले गए हैं, जिनमें भारत ने केवल 35 में जीत दर्ज की है जबकि इंग्लैंड ने 51 मैचों में बाजी मारी है। वहीं, 50 मैच ड्रॉ पर खत्म हुए हैं। यह आंकड़ा बताता है कि भारत को इंग्लैंड पर पकड़ मजबूत करने के लिए अतिरिक्त सतर्कता बरतनी होगी। हालांकि, पिछली सीरीज में भारत ने इंग्लैंड को करारी शिकस्त दी थी। 2024 की घरेलू सीरीज में भारत ने पांच मैचों की टेस्ट श्रृंखला 4-1 से अपने नाम की थी। उस सीरीज में यशस्वी जायसवाल ने बल्ले से कहर बरपाते हुए 712 रन बनाए थे जबकि रविचंद्रन अश्विन ने 26 विकेट झटके थे। इंग्लैंड की ओर से जैक क्रॉली ने 407 रन बनाए और टॉम हार्टले ने 22 विकेट हासिल किए थे। इस बार सीरीज का पहला मुकाबला 20 से 24 जून तक खेला जाएगा, जबकि आखिरी टेस्ट 31 जुलाई से 4 अगस्त के बीच होगा। बाकी टेस्ट मैच क्रमश: 2-6 जुलाई, 10-14 जुलाई और 23-27 जुलाई तक आयोजित किए जाएंगे। वहीं टीम इंडिया के कप्तान को लेकर चर्चाएं जोरों पर हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, इस बार शुभमन गिल को कप्तानी सौंपी जा सकती है। चयन समिति की बैठक 23 या 24 मई तक होने की उम्मीद है। गिल पहले ही लिमिटेड ओवर फॉर्मेट में उप-कप्तान की भूमिका निभा चुके हैं और उन्होंने जिम्बाब्वे दौरे पर टी20 सीरीज में भारत का नेतृत्व भी किया था। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि युवा जोश से लैस भारतीय टीम इंग्लैंड जैसी अनुभवी टीम के खिलाफ कैसे प्रदर्शन करती है और क्या गिल के नेतृत्व में भारत टेस्ट इतिहास में नया अध्याय लिख पाएगा।

रोहित मध्यक्रम में ऊब जाता था, शास्त्री ने भारतीय बल्लेबाज को ओपनिंग पर भेजने की वजह बताई

दुबई (महाराष्ट्र) (एजेंसी)। भारत के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने कहा कि भारत के पूर्व टेस्ट कप्तान रोहित शर्मा मध्यक्रम में बल्लेबाजी करते समय ऊब जाते थे इसलिए उन्होंने 2019 में 'हिटमैन' को सलामी बल्लेबाज बनाने का फैसला किया। शास्त्री का यह फैसला 'मास्टर स्ट्रोक' साबित हुआ और इसने पारंपरिक प्रारूप में रोहित के करियर को नया मोड़ दिया। शास्त्री 2017 में भारत के मुख्य कोच बने और 2021 में उन्होंने राहुल द्रविड़ को कमान सौंप दी। उनके चार साल के कार्यकाल के दौरान रोहित भारत के सबसे आक्रामक टेस्ट सलामी बल्लेबाज में से एक बन कर उभरे।

शास्त्री ने 'आईसीसी रिव्यू' में कहा, 'चार, पांच नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए यह लड़का ऊब जाता था। मैंने फिर इस पर विचार करना शुरू किया कि वह वनडे क्रिकेट में इतना सफल क्यों है? वह बल्लेबाजी के लिए मैदान पर जल्दी जाना पसंद करता है।' भारत के इस पूर्व दिग्गज हरफनमौला ने कहा, 'मैंने सोचा कि अगर उसे पहले बल्लेबाजी के लिए भेजा जाए तो उसके पास तेज गेंदबाजों को खेलने, शॉट लगाने के लिए पर्याप्त समय होगा। उसके लिए मंच तैयार था। वह अगर इसे अपना ले तो उसके टेस्ट करियर को नई दिशा मिल सकती है।'

रोहित ने हाल ही में खेल के इस पारंपरिक प्रारूप को अलविदा कह दिया। उन्होंने अपने शानदार करियर में 67 मैचों में 12 शतक और 18 अर्धशतक की मदद से 4,301 रन बनाए। शास्त्री ने कहा कि उन्होंने 2019 विश्व कप के दौरान ही रोहित का इस्तेमाल टेस्ट में सलामी बल्लेबाज के रूप में करने का फैसला कर लिया था। वह इस विश्व कप में पांच शतक और 81 की औसत से 648 रन बनाकर टूर्नामेंट में सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे थे।

इस पूर्व ऑलराउंडर ने कहा कि उन्होंने तत्कालीन कप्तान विराट कोहली के साथ रोहित को सलामी बल्लेबाज के तौर पर आगे बढ़ाने के विचार पर चर्चा की थी। रोहित को तुरंत सफलता मिली, उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शीर्ष क्रम में अपने पहले टेस्ट में दो शतक जड़े। शास्त्री ने रोहित के बारे में कहा, 'उन्होंने पांचवें और छठे नंबर पर काफी बल्लेबाजी की लेकिन वह पूरी एकाग्रता नहीं दिखा पाते थे। वह 20, 30 रन बनाकर अपना विकेट गंवा देते थे। (मैंने सोचा) चलो उसे दबाव में डालते हैं और उसे (बल्लेबाजी क्रम में) ऊपर भेजते हैं। मुझे याद है कि मैंने उससे वेस्टइंडीज में कहा था 'हम चाहते हैं कि तुम पारी का आगाज करो।' रोहित ने टेस्ट के अपने 12 शतकों में से नौ शतक सलामी बल्लेबाज के तौर पर लगाये है। उन्होंने कहा, 'मैं अगर गलत नहीं हूं तो यह (फैसला) अगस्त 2019 में लिया गया था। उस विश्व कप के बाद। विश्व कप में उसने शानदार बल्लेबाजी की थी।

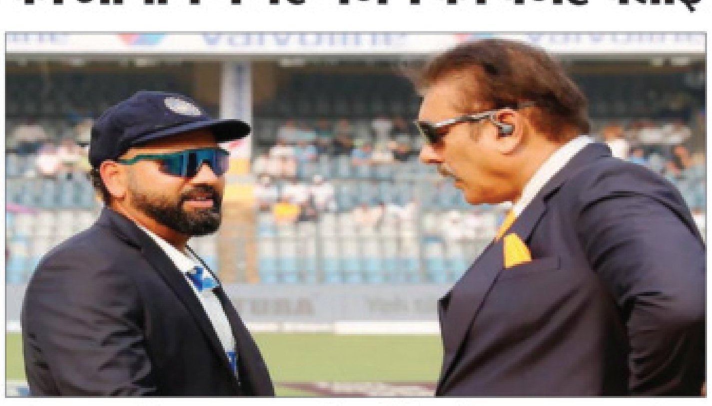

इसलिए उनका फॉर्म बहुत अच्छा था। उसने इसके बारे में कुछ समय तक विचार किया होगा। वह इससे असहज नहीं था।'

शास्त्री ने कहा, 'उसने पारी का आगाज करते हुए अपने पहले टेस्ट मैच में शतक जड़ा था। मैं अगर गलत नहीं हूं, तो उन्होंने पहली पारी में 100 रन बनाए और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा क्योंकि वह इसका लुत्फ उठाने लगा था।' शास्त्री ने कहा कि रोहित ने अपनी तकनीक और नरम हाथों से शॉट खेलने का काफी अभ्यास किया। उसने अपनी तकनीक पर बहुत काम किया क्योंकि मुझे लगता है कि उसने इंग्लैंड में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजी की थी। इंग्लैंड में परिस्थितियां काफी अलग होती है।'

सऊदी अरब में फंसे बिहार-यूपी और बंगाल के 400 मजदूर

- पीएम और सीएम से लगाई वतन वापसी की गुहार

गोपालगंज (एजेंसी)। सऊदी अरब के यानबू स्थित सेंडन इंटरनेशनल कंपनी लिमिटेड में काम कर रहे बिहार और उत्तर प्रदेश के 400 से अधिक श्रमिक गंभीर संकट में हैं। इनमें गोपालगंज, सीवान, छपरा समेत विभिन्न जिलों के मजदूर शामिल हैं। श्रमिकों का आरोप है कि कंपनी ने पिछले 8 माह से उन्हें वेतन और ठीक से भोजन नहीं दिया है। इतना ही नहीं उन्हें घर लौटने की भी अनुमति नहीं दी जा रही है। अब इन मजदूरों ने वीडियो जारी कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से वतन वापसी की अपील की है। जानकारी के अनुसार इन श्रमिकों ने भारतीय दूतावास से भी मेल और फोन के माध्यम से कई बार संपर्क किया, लेकिन अब तक कोई सकारात्मक जवाब नहीं मिला है। मजदूरों का कहना है कि अगर जल्द मदद नहीं मिली तो उनकी स्थिति और खराब हो सकती है। बताया गया कि सेंडन इंटरनेशनल एक निर्माण और संबद्ध सेवाओं की कंपनी है, जो तेल, गैस, उर्वरक, बिजली और परिवहन जैसे क्षेत्रों में काम करती है। कंपनी की स्थापना 1994 में हुई थी और इसका मुख्यालय यानबू, सऊदी अरब में है। फंसे हुए मजदूरों में गोपालगंज के धमपाकड़ गांव के राजकिशोर कुमार, भगवानपुर एकडंगा गांव के बलिंदर सिंह, फतेहपुर दीघा के दिलीप कुमार चौहान, राजेंद्र नगर मोहल्ले के शैलेश कुमार चौहान, बालेपुर बथुआ बाजार के ओमप्रकाश सिंह, सीवान के उमेश साह, रवि कुमार, राजीव रंजन और हरिंदर चौहान शामिल हैं। सभी ने सरकार से जल्द राहत की गुहार लगाई है। इनके परिजनों ने जिलाधिकारी और गोपालगंज के सांसद डॉ आलोक कुमार सुमन को भी आवेदन देकर मदद की गुहार लगाई है।

बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान करके उन्हें झारखंड से वापस भेजने को विशेष बल गठित करे सरकार : चंपई

रांची (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता एवं झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने रविवार को हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली राज्य सरकार से बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान करके उन्हें राज्य से निर्वासित करने के लिए एक विशेष कार्य बल बनाने का आग्रह किया। चंपई सोरेन ने दावा किया कि बांग्लादेशी घुसपैठ के कारण झारखंड की जनसांख्यिकी तेजी से बदल रही है, जो आदिवासी समुदायों के अस्तित्व के लिए खतरा है। चंपई सोरेन ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा, 'मैं देश में अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के खिलाफ लड़ाई में निर्णायक कदम उठाने के लिए केंद्र सरकार को धन्यवाद देता हूं। अब, मैं राज्य सरकार से झारखंड से बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान करके उन्हें निर्वासित करने के लिए एक कार्य बल गठित करने का आग्रह करता हूं।' उन्होंने दावा किया कि राज्य, विशेष रूप से आदिवासी बहुल संथाल परगना और कोल्हान क्षेत्रों की जनसांख्यिकी 'घुसपैठियों के कारण बदल रही है'। चंपई सोरेन ने कहा, 'मैंने लगातार इस मुद्दे और धर्म परिवर्तन के खिलाफ अपनी आवाज उठाई है लेकिन झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेतृत्व वाला सत्तारूढ़ गठबंधन इन गंभीर मामलों पर चुप है। घुसपैठिए आदिवासियों और मूल निवासियों को उनके अधिकारों से वंचित कर रहे हैं।'

अब आईआईटी बॉम्बे ने तुर्की का बहिष्कार किया, विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन किया रद्द

मुंबई (एजेंसी)। भारत में तुर्की के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला जारी है। देश में हर तुर्की उत्पाद का बहिष्कार किया जा रहा है। भारत से तुर्की को संगमरमर और सेब का व्यापार बंद करने की घोषणा के बाद देश के कई बड़े संगठनों ने भी तुर्की के साथ अपने अनुबंध रद्द कर दिए हैं। आईआईटी बॉम्बे भी इस सूची में शामिल हो गया है। आईआईटी मुंबई ने तुर्की विश्वविद्यालयों के साथ सभी समझौते रद्द कर दिए हैं। यह निर्णय तुर्की और भारत के बीच वर्तमान भू-राजनीतिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। आईआईटी बॉम्बे ने कहा है कि तुर्की के साथ शैक्षणिक सहयोग अगली सूचना तक निलंबित रहेगा। आईआईटी बॉम्बे ने छात्रों और शिक्षकों से तुर्की से संबंधित किसी भी आदान-प्रदान या शोध कार्यक्रम के बारे में आधिकारिक जानकारी निलंबित करने को कहा है। इससे पहले आईआईटी रुड़की, जेएनयू और जामिया मिलिया इस्लामिया जैसे संस्थानों ने भी तुर्की संस्थानों के साथ अपना सहयोग समाप्त कर दिया है। आईआईटी बॉम्बे के अधिकारियों का कहना है कि यह निर्णय देश की सुरक्षा और हितों को प्राथमिकता देने के उद्देश्य से लिया गया है। मालूम हो कि तुर्की पर पाकिस्तान को सैन्य सहायता देने का आरोप है, जिसके कारण पूरे भारत में इसके खिलाफ विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं और पूरे देश में तुर्की का बहिष्कार अभियान चलाया जा रहा है।

ग्वालियर हाईकोर्ट में बाबा साहेब की मूर्ति को लेकर हुआ विवाद : वकीलों और भीम आर्मी कार्यकर्ताओं में झड़प, पुलिस तैनात

ग्वालियर(एजेंसी)। ग्वालियर हाईकोर्ट बेंच परिसर में बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की मूर्ति स्थापना को लेकर शनिवार को तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई। मूर्ति लगाने की मांग को लेकर पहुंचे भीम आर्मी कार्यकर्ताओं और वकीलों के बीच कहासुनी हाथापाई तक पहुंच गई। देखते ही देखते हाईकोर्ट परिसर रणभूमि में बदल गया, जिससे कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने लगी। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, विवाद के दौरान एक वकील ने भीम आर्मी के एक कार्यकर्ता के साथ मारपीट की, जिसके बाद वहां मौजूद अन्य कार्यकर्ताओं और वकीलों के बीच धक्का-मुक्की और नारेबाजी शुरू हो गई। स्थिति को संभालने के लिए पुलिस बल को तुरंत मौके पर बुलाया गया। पुलिस ने परिसर को खाली कराया और स्थिति को नियंत्रण में लिया। बताया जाता है कि कुछ वकील जहां बाबा साहेब की मूर्ति स्थापना का समर्थन कर रहे हैं तो वहीं दूसरी तरफ बार एसोसिएशन का एक वर्ग कह रहा है कि न्यायालय परिसर को राजनीतिक और वैचारिक मुद्दों से दूर रखना चाहिए।

भारतीय सशस्त्र बलों की बहादुरी के सामने दुश्मन संघर्षविराम करने को मजबूर हुआ

जम्मू-कश्मीर के एलजी ने एलओसी पर तैनात सैन्य कर्मियों को किया संबोधित

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के एलजी मनोज सिन्हा ने पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि पड़ोसी देश में ऐसा कुछ भी नहीं है जो भारतीय सशस्त्र बलों की पहुंच से बाहर हो। सिन्हा ने यह टिप्पणी एलओसी पर तैनात सैन्य कर्मियों को संबोधित करते हुए की। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया ने भारतीय सशस्त्र बलों की बहादुरी देखी है और फिर दुश्मन संघर्षविराम के लिए पूरी दुनिया के सामने गिड़गिड़ाया है। पाकिस्तान में ऐसा कुछ भी नहीं है जो भारतीय सेना की पहुंच से बाहर हो।

एलजी सिन्हा ने भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा पर प्रकाश डाला और कहा कि दुश्मन कर्ज के दम पर मानवता को नष्ट कर रहा है। मुझे लगता है कि हमारे वीर सैनिकों द्वारा दिए गए जवाब से उन्हें सबक मिल गया होगा। मैं आपकी वीरता, पराक्रम और मां भारती के प्रति आपकी भक्ति

को नमन करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि जब भी ऐसा संकट आए, तो लोगों को पता चले कि हमारा देश आप जैसे वीरों के सुरक्षित हाथों में है।

एलजी ने सेना और पुलिस कर्मियों के साथ जमीनी स्तर पर सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि देश सतर्कता, समर्पण, बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान के साथ जीवन की रक्षा करने और हमारी सीमाओं की रक्षा करने के लिए सशस्त्र बलों का आभारी है। उन्होंने कहा कि मुझे पूरा यकीन है कि हमारे जवान दुश्मन के किसी भी दुस्साहस का डटकर सामना करेंगे। बाद में सिन्हा ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि सेना और पुलिस अधिकारियों के साथ जमीनी स्तर पर सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की। तंगधार में हमारे बहादुर जवानों से बातचीत की। वे देश की क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ डटे हैं। सिन्हा ने तंगधार सेक्टर में सीमा क्षेत्र का दौरा किया और पाकिस्तान द्वारा भारी गोलाबारी से हुए नुकसान का आकलन किया।

हिंदुस्तान आतंकवाद को तबाह करेगा- नवनीत राणा ने दी पाकिस्तान को दो टूक चेतावनी

अमरावती। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद महाराष्ट्र के अमरावती में आयोजित तिरंगा यात्रा में भाजपा नेता नवनीत राणा ने पाकिस्तान को चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि अगर पाकिस्तान ने आतंकवाद को पनाह देना नहीं रोका तो हिन्दुस्तान ने भी ठान लिया है कि पाक प्रायोजित आतंकी ढांचे को नेस्तनाबूद कर दिया जाएगा। रविवार को मीडिया से बातचीत करते हुए नवनीत राणा ने कहा कि पाकिस्तान ने भारत में हिन्दु-मुस्लिम के बीच झगड़े कराने के मकसद से पहलगाम में आतंकी घटना को अंजाम दिया और हमारे निर्दोष लोगों की उनके धर्म के आधार पर गोली मारकर हत्या कर दी। आज मैं पाकिस्तान को बताना चाहती हूं कि हिंदुस्तान में रहने वाला हर नागरिक हिन्दुस्तानी है और हम हिन्दुस्तानी जब किसी का विरोध करते हैं तो आखिरी सांस तक दम नहीं लेते, जब तक कि विरोधी समाप्त न हो जाए। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत में लोगों को धर्म के आधार पर बांटने की पाकिस्तान की साजिश फेल हुई। भारत में रहने वाले सभी धर्मों के लोग एकजुट हैं और पीएम मोदी के साथ हैं। पीएम मोदी आतंकवाद को तबाह करने के लिए जो भी फैसले लेंगे पूरा देश उनके साथ है। भाजपा नेता ने आगे पाकिस्तान को लेकर कहा कि पाकिस्तान को यह नहीं भूलना चाहिए कि उसका वजूद भारत की वजह से है। इसलिए, पहलगाम आतंकी हमले के बाद हर भारतवासी में गुस्सा है। अभी तो ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया गया है। अगर नहीं सुधरे तो अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहो। देशभर में ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद तिरंगा यात्रा निकाली जा रही है।

गिरिराज सिंह का आरोप- कांग्रेस को देशहित से नहीं, सिर्फ सत्ता से मतलब

बेगूसराय (एजेंसी)। आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति को स्पष्ट करने के लिए सांसदों का सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल विदेश जाएगा। आतंकवाद पर भारत के वैश्विक आउटरीच प्रतिनिधिमंडलों में कांग्रेस सांसद शशि थरूर को शामिल किए जाने को लेकर कांग्रेस से ही आवाज उठाए जाने लगी है।

इस बीच केंद्रीय मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता गिरिराज सिंह ने कहा कि कांग्रेस पार्टी देश की वह पार्टी बनकर रह गई है जिसके अंदर सकारात्मक देशहित पर कोई जुबान ही नहीं खुलती। कोई सकारात्मक राजनीति हो, पॉजिटिव राजनीति हो ये चुप रहते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस केवल निगेटिव राजनीति करती है। देश के बाहर भी ये भारत को बदनाम करते हैं। अब विदेशों में प्रतिनिधिमंडल जा रहा है और उसमें अगर शशि थरूर हैं तो इसमें राजनीति किस बात की है? शशि थरूर भी कांग्रेस के ही हैं। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि कांग्रेस की अंदरूनी लड़ाई इसमें दिखती है। कांग्रेस के अंदर अंदरूनी लोकतंत्र भी नहीं है और यह घटिया राजनीति पर उतर आई है।

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि पाकिस्तान आज आतंकी देश बनकर रह गया है। भारत की सेना के शौर्य ने यह दिखा दिया है कि इस आतंकी देश को बर्बाद होने से कोई रोक नहीं सकता है। लेकिन भारत का जो दुश्मन देश पाकिस्तान है, उसका जो साथ देता है, उसके प्रति भी देश की जनता में आक्रोश है। चाहे कोई भी देश हो, दुश्मन की मदद करने वाला देश भारत का हितकर नहीं हो सकता है, तुर्की हो या जो भी हो।

केंद्र सरकार ने विदेश जाने वाले सात सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडलों में शामिल सभी सदस्यों के नाम तय कर दिए हैं। ये प्रतिनिधिमंडल संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्य देशों और अन्य प्रमुख साझेदार देशों का दौरा करेंगे और देश की आतंकवाद विरोधी नीति, सैन्य कार्रवाइयों और ऑपरेशन सिंदूर की जानकारी देंगे।

विश्व उच्च रक्तचाप दिवस पर सेंट्रल हॉस्पिटल में जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कोलकता (एजेंसी)। विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के अवसर पर साउथ ईस्टर्न रेलवे के सेंट्रल हॉस्पिटल, गार्डनरीच, कोलकाता में एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य चिकित्सा क्षेत्र के कर्मचारियों में उच्च रक्तचाप के प्रति जागरूकता बढ़ाना और नियमित रूप से ब्लड प्रेशर की निगरानी को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर 75 से अधिक डॉक्टरों, नर्सों एवं अस्पताल कर्मचारियों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों का एक उन्नत बॉडी कंपोजीशन एनालाइजर के माध्यम से स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, जिसमें बीएमआई, शरीर में वसा की मात्रा, जल स्तर एवं मांसपेशियों की संरचना जैसी विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

जागरूकता सत्र में वरिष्ठ चिकित्सा विशेषज्ञों ने उपयोगी जानकारियाँ की साझा

डॉ. बी. एन. झा (एसीएचडी, हृदय रोग विशेषज्ञ) ने नियमित एवं सटीक रक्तचाप मापन के महत्व पर जोर दिया और कहा कि नियंत्रित बीपी लंबा और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करता है। डॉ. अंजना मल्होत्रा (पीसीएमडी) ने कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए सभी कर्मचारियों से नियमित रक्तचाप की जांच कराने की अपील की। डॉ. श्रीकुमार (मेडिकल डायरेक्टर) ने कहा कि उच्च रक्तचाप एक साइलेंट डिजीज है और इसे समय रहते पहचानकर उपचार करना जरूरी है, क्योंकि यह अंगों को गंभीर नुकसान पहुँचा सकता है। डॉ. पी. के. मजूमदार ने अनियंत्रित उच्च रक्तचाप से जुड़ी जटिलताओं पर चिंता व्यक्त की। डॉ. प्रियंका मंडल ने महिलाओं में उच्च रक्तचाप के प्रभाव पर प्रकाश डाला और महिला स्वास्थ्य कर्मियों में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता बताई। डॉ. मुकता मंडल ने सभी स्वास्थ्यकर्मियों को दूसरों की सेवा के साथ-साथ स्वयं के स्वास्थ्य का ध्यान रखने की सलाह दी। समापन भाषण में डॉ. ए. बेरा ने स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े सभी कर्मियों के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच की आवश्यकता पर बल दिया और निवारक देखभाल की महत्ता को दोहराया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. बी. एन. झा ने एक यादगार संदेश साझा किया: तनाव से दूर रहो, उच्च रक्तचाप से बचो। यह कार्यक्रम न केवल स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक रहा, बल्कि कर्मचारियों को अपने स्वास्थ्य के प्रबंधन के लिए प्रेरित भी किया। यह आयोजन साउथ ईस्टर्न रेलवे के सेंट्रल हॉस्पिटल की अपने कर्मचारियों और समुदाय के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दानिश के चक्कर में फंसी और पाकिस्तान के लिए जासूसी करने लगी ज्योति मल्होत्रा

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिसार की ट्रैवल ब्लॉगर ज्योति मल्होत्रा को पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। बताया जा रहा है कि इस मामले में ज्योति की गिरफ्तारी कई खुफिया इनपुट के बाद हुई है। ज्योति के बनाए एक वीडियो में वह नई दिल्ली स्थित पाकिस्तान उच्चायोग में आयोजित इफ्तार डिनर में शामिल हुई थी। यह वीडियो ज्योति की पाकिस्तानी अधिकारियों के साथ कथित संलिप्तता का सबसे पुख्ता सबूत बन गया। ज्योति यहां पाक

दूतावास के एक अधिकारी से ऐसे मिलती दिख रही है। इस मुलाकात से पता चला कि ज्योति उस अधिकारी से पहले भी मिल चुकी है। उस अधिकारी का नाम अहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश है। इस पूरे मामले में मुख्य रूप से अहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश का नाम सामने आया है, जिसे भारत सरकार ने जासूसी के आरोपों में पर्सोना नॉन ग्राटा (अवांछित व्यक्ति) घोषित कर 13 मई को देश से निष्कासित कर दिया था।

अहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश पाकिस्तान उच्चायोग में एक अधिकारी था। भारतीय खुफिया एजेंसियों के सूत्रों के मुताबिक, दानिश जासूसी गतिविधियों में संलिप्त था और उसने भारत की संवेदनशील जानकारी लीक की थी, जिसमें भारतीय सेना की गतिविधियों से संबंधित जानकारी शामिल थी। उसकी गतिविधियों के कारण भारत सरकार ने उसे पर्सोना नॉन ग्राटा घोषित किया और 13 मई 2025 को 24 घंटे के भीतर देश छोड़ने का आदेश दिया।जांच के अनुसार, ज्योति मल्होत्रा ने पहली बार 2023 में एक प्रतिनिधिमंडल के साथ पाकिस्तान की यात्रा की थी। वहां उसकी मुलाकात दानिश से हुई। भारत लौटने के बाद, उसने दानिश के साथ संपर्क बनाए रखा। दानिश की सिफारिश के बाद, उसने पाकिस्तान की दूसरी यात्रा की, जहां उसका परिचय अली अहसान से हुआ। अली ने ज्योति की पाकिस्तान में रहने और यात्रा की व्यवस्था की और उसे पाकिस्तानी खुफिया और सुरक्षा अधिकारियों, जैसे शकीर और राणा शाहबाज से मिलवाया। ज्योति ने शकीर का नंबर अपने फोन में जट रंधावा के नाम से सेव किया था ताकि संदेह से बचा जा सके। अधिकारियों ने संकेत दिया कि उसने बाद में इन गुर्गों को संवेदनशील खुफिया जानकारी भेजना करना शुरू कर दिया।

ज्योति मल्होत्रा की संदिग्ध गतिविधियां

जांच के अनुसार, ज्योति ने पाकिस्तान की चार से अधिक बार यात्रा की थी, जिसमें 2023 में दो यात्राएं शामिल हैं। उसने व्हाट्सएप, टेलीग्राम और स्नैपचैट जैसे एन्क्रिप्टेड प्लेटफॉर्म्स के जरिए पाकिस्तानी खुफिया एजेंटों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखा। अधिकारियों का दावा है कि ज्योति ने भारतीय सैन्य ठिकानों और गतिविधियों से संबंधित संवेदनशील जानकारी शेयर की, जिसमें हाल ही में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर से संबंधित जानकारी भी शामिल थी।

मैं पाकिस्तान नहीं जहन्नुम जाना ज्यादा पसंद करुंगा

बॉलीवुड के दिग्गज राइटर जावेद अख्तर ने कही दिल की बात

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड के दिग्गज राइटर जावेद अख्तर ने बुक लॉन्च इवेंट में कहा कि अगर उनके पास पाकिस्तान और जहन्नुम यानी नरक में से किसी एक जगह जाने की चॉइस होगी तो वह जहन्नुम जाना ज्यादा बेहतर समझेंगे। जावेद अख्तर मुंबई में आयोजित बुक लॉन्च इवेंट में बोल रहे थे जहां उन्होंने बताया कि उन्हें भारत और पाकिस्तान दोनों तरफ से गालियां मिलती हैं। जावेद अख्तर ने कहा कि उन्हें जो कुछ मिला है वो यहीं से ही मिला है और मुंबई, महाराष्ट्र की कर्मभूमि है जिसने उन्हें आज इतना कुछ दिया है।

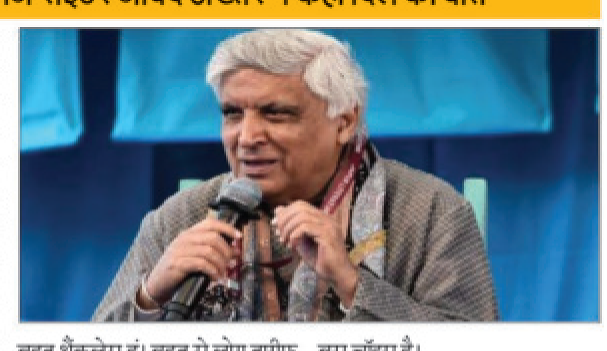

जावेद अख्तर ने कहा कि तो नतीजा क्या होता है कि अगर आप एक तरफ से बात कर रहे हैं तो आप कुछ लोगों को नाखुश करेंगे, लेकिन अगर हर तरफ से बात कर रहे हैं तो बहुत ज्यादा लोगों को नाखुश करेंगे। कभी आप मिलिएगा अलग तो मैं आपको दिखाऊंगा अपना ट्विटर, अपना व्हाट्सऐप...जिसमें मुझे दोनों तरफ से गालियां मिलती हैं। ऐसा नहीं है कि मैं बहुत थैंकलेस हूं। बहुत से लोग तारीफ भी करते हैं, बहुत से लोग हिम्मत भी बढ़ाते हैं।

उन्होंने कहा लेकिन यह भी सच है कि मुझे इधर का एक्सट्रीमर भी गाली देता है और उधर का एक्सट्रीमर भी। यही सही है, अगर इनमें से एक ने गाली देना बंद कर दिया तो मुझे परेशानी हो जाएगी कि मैं क्या गड़बड़ कर रहा हूं। तो ये कहते हैं कि तू तो काफिर है और जहन्नुम में जाएगा। वह कहते हैं कि जिहादी..पाकिस्तान चला जा। अब अगर मेरे पास चॉइस सिर्फ पाकिस्तान और जहन्नुम, यानि नरक की है। तो मैं नरक ही जाना पसंद करूंगा। अगर यही बस चॉइस है।

जावेद अख्तर ने कहा कि मैं सिर्फ साढ़े उन्नीस साल का था जब मुंबई आया था आज जो कुछ बना, जो कुछ मुझे मिला, जहां भी पहुंचा, यह सब मुंबई की, महाराष्ट्र की कर्मभूमि से मिला। बता दें कि भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान जावेद अख्तर के बयान काफी चर्चा में रहे थे। सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने वाले जावेद अख्तर राजनैतिक और समसामयिक मुद्दों पर खुलकर अपनी राय रखते हैं। कई लोग उनकी बातों को लेकर उन्हें ट्रोल करते हैं लेकिन वह किसी की भी परवाह किए बगैर अपना काम करते हैं।

संसद में अमित शाह ने ओवैसी को लेकर कही बात अब सच साबित हुई

-ओवैसी को ऑल पार्टी डेलिगेशन में शामिल करने पर पुराना वीडियो वायरल

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर और आतंकवाद पर भारत का रुख बताने और पाकिस्तान को बेनकाब करने के लिए भारतीय डेलिगेशन का गठन सुर्खियों में है। इस टीम में ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी को भी शामिल किया है। ओवैसी को विपक्ष लगातार बीजेपी की बी टीम बताकर घेरता रहा है, लेकिन अब जब मोदी सरकार ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया है, तो बहस छिड़ गई है।

इस बीच सोशल मीडिया पर एक पुराना वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें देखा जा सकता है कि सांसद ओवैसी ने अमित शाह से ही पूछ लिया कि 'मैं किसकी टीम का हिस्सा हूं।' उनके इस सवाल को सुनकर लोकसभा में मौजूद सभी लोग हंस पड़ते हैं, फिर अमित शाह इसका हल्के-फुल्के अंजाद में जवाब देते हुए कहते हैं, ऐसा है ओवैसी जी मैं तो चाहता हूं कि आप अपनी स्वयं टीम बनाओऔरे वो (विपक्षी) परेशान हैं इसलिए मैं कहता हूं कि आप अपनी टीम बनाओ- आपके मुद्दे हमेशा ही अलग रहते हैं।

अमित शाह ने यह बात संसद में कब कही थी, इसकी तारीख तो नहीं बताई जा सकती है, लेकिन आज टीम मोदी में ओवैसी का नाम शामिल करने के बाद यह क्लिप एक बार फिर वायरल हो रही है। लोग कह रहे हैं कि शाह की बात सच हो गई। ओवैसी पहलगाम आतंकी हमले के बाद से ही पाकिस्तान के खिलाफ बोल रहे हैं और लगातार उस पर हमले कर रहे हैं। केंद्र सरकार की तरफ से कई देशों के दौरे पर भेजे जा रहे ऑल पार्टी डेलिगेशन में शामिल किए जाने पर औवैसी ने कहा कि एक के सदस्य के तौर पर यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए उनके संदेश का सार होगा।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के पाले आतंकवादियों के हाथों लंबे समय से निर्दोष लोगों की हत्या के बारे में दुनिया को बताना होगा। वहीं ओवैसी ने बीजेपी के 'बी टीम' कहे जाने के आरोपों को खारिज कर दिया है। ओवैसी ने कहा कि बीजेपी की सत्ता में वापसी मेरी वजह से नहीं, बल्कि विपक्ष की नाकामी की वजह से हुई है। ओवैसी ने कहा कि अगर मैं सिर्फ पांच सीटों पर चुनाव लड़ूं और बीजेपी की सीटें घटकर 240 रह जाएं तो फिर मुझे कैसे जिम्मेदार ठहराया जा सकता है?

ओवैसी ने आरएसएस पर भी हमला बोलते हुए कहा कि, आरएसएस की मंशा भारत को एक धार्मिक राज्य बनाने की है। वो बहुलवाद खत्म करना चाहते हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि कोर्ट में जो केस फाइल किए जा रहे हैं, उनके पीछे

आरएसएस समर्थकों का हाथ है। अब जब ओवैसी को केंद्र सरकार की ओर से प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया गया है, तो विपक्ष के आरोपों को नया मुद्दा मिल गया है। हालांकि इसे एक संसदीय प्रक्रिया का हिस्सा भी कहा जा सकता है, जिसमें कई दलों के सांसदों को विदेश यात्राओं पर भेजा जाता है।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**